नकल करो मगर अक्ल से–1

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Nakal Karo Magar Akla Se-1 (Copying-1)
Cover Page picture : Copying
Published under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

नकल करो मगर अक्ल से–1 7

1 चिड़िया ने इयावो का बच्चा चुराया 9

2 एक लावारिस लड़की 15

3 दो बहिनें और एक बूढ़ा 30

4 जादू की छड़ी 36

5 बॉसुरी 51

6 चिन्ये 60

7 अनन्सी और खाने का बरतन 67

8 जादुई खीरे 82

9 गीदड़ और भेड़िया 95

10 रविवार सात 97

11 कैन्डी वाला आदमी 109

12 बन्दर का ढोल 116

13 सूरज का टापू 125

12 शेर के मुँह में 130

14 दुखी बोगोटिर 140

15 दुख 152

16 बतखों का बॅटवारा 164

17 बीयर और रोटी 176

18 गंजी पत्नी 188

19 काशीफल के बीज 196

20 जो बोओगे वही खाओगे 207

21 हवान और डॉग 216

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

नकल करो मगर अक्ल से–1

"नकल करो मगर अक्ल से" कुछ ऐसी लोक कथाओं का संग्रह है जिनमें लोगों ने किसी न किसी की नकल की है और अक्सर उस नकल की वजह से उन्होंने अपनी जान तक गॅवायी है। दुनियॉ में ऐसी कहानियॉ बहुत मिलती हैं क्योंकि दुनियॉ में द्वेष, जलन और लालच बहुत है। लोग एक दूसरे को अमीर हुआ देखते हैं तो वे भी चाहते हैं कि वे भी रात भर में अमीर हो जायें। वे अगर अमीर भी होते हैं तो और ज़्यादा अमीर होना चाहते हैं। सो वे भी उस आदमी की नकल करते हैं पर अपने स्वभाव के कारण मात खा जाते हैं जबकि वह आदमी तो अपने स्वभाव से अमीर बनता है।

ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं यहॉ दी जाती हैं। ये कथाऐं केवल यूरोप के देशों की लोक कथाओं से ली गयीं हैं। आशा है कि और दूसरी लोक कथाओं की तरह ये लोक कथाऐं भी तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी और तुमको कुछ शिक्षा देंगीं।

1 चिड़िया ने इयावो का बच्चा चुराया[1]

नकल की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली है।

एक आदमी की दो पत्नियॉ थीं। उसकी पहली पत्नी का नाम इयाले था और दूसरी पत्नी का नाम इयावो[2] था। इयाले का बरताव इयावो के साथ अच्छा नहीं था। वह हमेशा इयावो को तंग करती रहती थी।

उसने इयावो को इतना ज़्यादा तंग किया हुआ था कि न तो वह अपने बच्चों को अच्छा खाना खिला सकती थी और न ही वह उनको अच्छे कपड़े पहना सकती थी। इयावो जितनी ज़्यादा अच्छी थी इयाले उतनी ही ज़्यादा खराब थी।

एक बार उस आदमी की दूसरी पत्नी इयावो को आग जलाने के लिये जंगल से लकड़ी लानी थी। इयाले तो उसके बच्चे को देखती नहीं सो उसको अपने बच्चे को अपने साथ ही जंगल ले जाना पड़ा।

जंगल जा कर इयावो ने अपने बच्चे को एक बहुत ऊॅचे पेड़ के नीचे लिटा दिया और खुद वह लकड़ी इकट्ठा करने चली गयी। थोड़ी देर में उसकी लकड़ियॉ इकट्ठी हो गयीं तो वह अपने बच्चे को लेने के लिये उस पेड़ के पास लौटी।

---

[1] A Bird Steals Iyawo's Baby – a folktale from Nigeria, West Africa. Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

[2] He had two wives – the first wife's name was Iyale and the second wife's name was Iyawo.

वहॉ आ कर उसने देखा तो वहॉ तो उसका बच्चा नहीं था। वह चिल्ला पड़ी — "कहॉ गया मेरा बच्चा? किसने उठाया मेरा बच्चा?" वह बेचारी अपने बच्चे को ढूँढने के लिये रोती चिल्लाती जंगल में इधर उधर भागी मगर उसको अपना बच्चा आस पास में कहीं भी दिखायी नहीं दिया।

तब उसने ऊपर देखा तो वहॉ पेड़ के बहुत ऊपर एक चिड़िया बैठी थी और उस चिड़िया के पंजों में उसका बच्चा था। वह ज़ोर से चिल्लायी — "ओ पेड़ के ऊपर बैठी चिड़िया, तूने मेरा बच्चा क्यों लिया। मेरा बच्चा मुझे वापस दे।"

चिड़िया ने तुरन्त ही अपने पंजों में दबी एक पोटली नीचे फेंक दी। इयावो ने भी तुरन्त ही वह पोटली उठा ली। पर उस पोटली में तो उसका बच्चा नहीं था। उस पोटली में तो मूँगे के मोती[3] भरे हुए थे।

इयावो फिर चिल्लायी — "ओ चिड़िया, मेरा बच्चा मुझे वापस कर। मैं इन मूँगे के मोतियों का क्या करूँगी, मेहरबानी कर के मेरा बच्चा मुझे वापस कर।"

[3] Beads of coral – coral is the house of a sea animal and it is found in many colors. When the animal goes away from his house, people collect it. and make many things out of it. See the picture of coral above.

चिड़िया गाते हुए बोली — "ये मूँगे के मोती बच्चे से ज़्यादा कीमती हैं, इयावो।"

पर इयावो को तो अपना बच्चा चाहिये था। वह इन मूँगे के मोतियों का क्या करती। वह चिड़िया की सुनने वाली नहीं थी। उसने चिड़िया से फिर अपना बच्चा वापस देने के लिये कहा।

चिड़िया ने फिर एक पोटली नीचे फेंक दी। इयावो फिर उसको लपकने दौड़ी। पर इस पोटली में भी उसका बच्चा नहीं था।

इस पोटली में तो सोना भरा था। सोना देख कर इयावो फिर रो पड़ी और बोली — "मैं इस सोने का क्या करूँगी, चिड़िया। मुझे मेरा बच्चा चाहिये। मुझे मेरा बच्चा वापस कर ओ चिड़िया।"

अबकी बार चिड़िया ने एक और पोटली फेंकी। जब इयावो ने उस पोटली को खोल कर देखा तो उसमें बहुत सारे वेशकीमती जवाहरात थे। उनको देख कर वह फिर ज़ोर से रो पड़ी।

वह फिर चिल्लायी — "मैं इन जवाहरातों का क्या करूँगी, मेहरबानी कर के मेरा बच्चा मुझे वापस कर ओ चिड़िया।"

अबकी बार चिड़िया उड़ कर नीचे आयी और उसने इयावो के बच्चे को पेड़ के नीचे उसी जगह पर रख दिया जहाँ से उसने उसे उठाया था।

वह बोली — "इयावो, तुमने साबित कर दिया कि तुम लालची नहीं हो इसलिये तुम ये सब पोटलियाँ भी रख सकती हो और यह लो अपना बच्चा भी लो और खुश रहो।"

अब इयावो के पास न केवल उसका बच्चा था बल्कि उसके पास मूँगे के मोती, सोने और जवाहरात के तीन थैले भी थे। वह खुशी खुशी घर वापस चली आयी।

अब जब इयाले ने इयावो को इतने सब खजाने के साथ आते देखा तो उससे पूछा कि उसके पास इतनी सारी चीज़ें कहाँ से आयीं तो इयावो ने उसको सब सच सच बता दिया।

सो इयाले ने भी अपने लिये इतना सारा खजाना इकट्ठा करने का सोचा क्योंकि वह इयावो के खजाने में से हिस्सा बाँटने से सन्तुष्ट नहीं होती बल्कि उसको तो इयावो से भी ज़्यादा चाहिये था।

अगले दिन उस आदमी की पहली पत्नी इयाले भी अपने बच्चे को ले कर जंगल गयी। उसने भी अपने बच्चे को उसी ऊँचे पेड़ के नीचे लिटा दिया जहाँ से इयावो का बच्चा उस चिड़िया ने उठाया था।

फिर वह वहाँ से चली गयी। वह कुछ देर तक जंगल में घूमती रही जैसे कि वह आग जलाने के लिये लकड़ी लेने के लिये आयी हो पर ऐसा कुछ नहीं था।

वह तो केवल इसलिये आयी थी कि चिड़िया उसके बच्चे को उठा ले और फिर उसको भी इयावो की तरह से बहुत सारे जवाहरात और सोना दे जाये।

वह जब जंगल में घूम घाम कर वापस आयी तो उसका बच्चा भी वहाँ से जा चुका था।

यह देख कर वह बहुत खुश हुई। वह रोयी नहीं, वह चिल्लायी भी नहीं कि मेरा बच्चा कहाँ है। उसने तो सीधे पेड़ के उपर की तरफ देखा और वहाँ देखा एक चिड़िया को जिसने अपने पंजों में उसके बच्चे को दबा रखा था।

वह उस चिड़िया से ज़ोर से बाली — "ओ चिड़िया, मुझे मूँगे के मोती दो, सोना दो और जवाहरात दो और फिर मुझे मेरा बच्चा दो।" चिड़िया ने एक गठरी नीचे फेंक दी।

इयाले ने बड़ी उत्सुकता से उसे उठा लिया। पर यह क्या, उस गठरी में न तो मूँगे के मोती थे, न ही सोना था और न ही जवाहरात थे। उसमें तो केवल पत्थर भरे थे।

वह फिर चिल्लायी — "अरी ओ बेवकूफ चिड़िया, मुझे मूँगे के मोती दो, सोना दो और जवाहरात दो और फिर मेरा बच्चा मुझे दो।" इस बार चिड़िया ने कूड़े से भरी एक पोटली नीचे फेंक दी।

इयाले ने यह कूड़े की पोटली देख कर फिर उससे यह कह कर चिल्लायी "मुझे मूँगे के मोती दो, सोना दो और जवाहरात दो और फिर मेरा बच्चा मुझे दो ओ चिड़िया।"

इस बार उस चिड़िया ने इयाले के बच्चे की हड्डियों से भरी एक पोटली फेंक दी।

इयाले तो उस पोटली को देख कर पागल सी हो गयी। उसका तो खजाना भी गया और बच्चा भी गया। वह बेचारी रोती

चिल्लाती इयावो को गालियॉ देती हुई खाली हाथ घर वापस लौट आयी।

जो लोग लालची होते हैं उनका यही हाल होता है। वे छोटी छोटी चीज़ों के लालच में अपनी बड़ी बड़ी चीज़ें भी गॅवा बैठते हैं। सच में लालच बुरी बला है।

2 एक लावारिस लड़की[4]

नकल की यह लोक कथा भी अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक आदमी था जो अपनी दो पत्नियों और दो बेटियों के साथ रहता था। कुछ समय बाद उसकी एक पत्नी अपनी बेटी चिका[5] को छोड़ कर मर गयी। उसकी दूसरी पत्नी ही अपनी सौत की बेटी को पालने पोसने लगी।

पर उस लड़की चिका की वह सौतेली मॉ चिका के लिये बहुत ही बुरी थी। वह उसको कभी प्यार नहीं करती थी। वह उसके साथ नौकर से भी बुरा बरताव करती थी।

वह अपनी बेटी इनूमा[6] को बहुत प्यार करती थी। उसको वह कभी कुछ काम नहीं करने देती थी और उसको बहुत आराम से रखती थी। इस तरह इनूमा बहुत बिगड़ गयी थी और वह किसी की इज़्ज़त भी नहीं करती थी।

हालॉकि घर में दोनों बहिनों को काम करना चाहिये था पर चिका ही घर का सारा काम करती थी। वह घर में सारा काम बहुत ही अच्छा करती थी और कभी शिकायत भी नहीं करती थी।

---

[4] The Orphan Girl – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa.
Adapted from the Book, "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com as an e-book for free.

[5] Chika – name of the orphan girl

[6] Enuma – name of the other girl

जब वे दोनों खाना खातीं तो इनूमा को बहुत बढ़िया खाना मिलता और चिका को अक्सर उसका बचा हुआ खाना ही मिलता।

उसकी सौतेली माँ ने उससे कह रखा था — "अगर मैंने किसी के मुँह से सुना कि तू यह खाना खाती है तो मैं तुझे मार दूँगी।" इस लिये चिका ने इस बात की कभी किसी से शिकायत भी नहीं की कि उसको इनूमा का बचा हुआ खाना मिलता है। वह इसी बात से बहुत सन्तुष्ट थी कि उसको कम से कम कुछ तो खाने को मिल रहा था।

इस गाँव में यह रिवाज था कि इके बाजार[7] के दिन नदी से पानी लाने के लिये कोई भी आदमी नहीं जा सकता था क्योंकि वह नदी आदमियों और भूतों की दुनियाँ की हद पर थी। नदी के इस पार आदमी रहते थे और उस पार भूत रहते थे।

लोगों को पंडितों[8] ने बताया हुआ था कि इके बाजार वाले दिन भूत उस नदी पर पानी लेने आते थे और दूसरे तीन बाजार दिन आदमियों के वहाँ पानी भरने के लिये थे।

एक दिन एनक्वो[9] बाजार वाले दिन जब परिवार खेतों से रात गये लौटा तो चिका को पता चला कि उनके घर में पानी कम था। अब क्योंकि अगला दिन इके बाजार दिन था इसलिये उसने काफी पानी उस दिन के लिये बचा कर रखा हुआ था पर फिर भी वह पानी किसी वजह से अगले दिन के लिये कम रह गया था।

[7] Eke market day

[8] Translated for the word "Diviner" – means who tell future by divine means

[9] Nkwo – maybr these names are Sunday, Monday etc in Nigerian language

शाम को खाना खाने के बाद इनूमा नहाना चाहती थी पर चिका ने मना कर दिया क्योंकि कि वह पानी उस दिन घर में आखिरी पानी था।

उसने कहा — "जो पानी बचा है वह कल के लिये भी मुश्किल से ही काफी है और तुम नहाना चाहती हो?"

इनूमा बोली — "पर मुझे नहाना जरूरी है।"

चिका ने कहा — "पर हम दोनों तो खेत पर अभी तीसरे पहर ही तो नहाये थे।"

दोनों लड़कियॉ पानी के घड़े के ऊपर अपनी पूरी ताकत से लड़ने लगीं जैसे कि उनकी ज़िन्दगी ही उस घड़े में हो। चिका ने अपनी दोनों बॉहों से उस घड़े को चारों तरफ से पकड़ लिया ताकि इनूमा उसका पानी न ले ले और इनूमा उस घड़े को चिका से छीनने लगी।

जब वे आपस में इस घड़े के पानी के ऊपर बहस कर रही थीं और घड़े को अपनी तरफ खींच रही थीं तो इस बीच उस घड़े का बहुत सारा पानी छलक कर बिखर गया।

इनूमा की मॉ उनका बीच बचाव करने आयी। जब लड़कियों ने दरवाजे पर आहट सुनी तो चिका ने सौतेली मॉ के डर से उस घड़े पर से अपनी पकड़ अचानक छोड़ दी। इससे इनूमा को धक्का लगा और वह पीछे जा गिरी।

इससे वह घड़ा तो टूट ही गया और जो कुछ भी पानी उस घड़े में था वह भी सब बिखर गया। चिका बच्चों की तरह हॅस पड़ी।

उसकी सौतेली मॉ चिल्लायी — "यह क्या कोई हॅसने की बात थी?"

बड़ी मुश्किल से अपनी हॅसी छिपा कर चिका सहम कर बोली — "नहीं मॉ।"

मॉ ने पूछा — "यहॉ क्या हो रहा है?"

दोनों लड़कियों ने अपना अपना मामला पेश किया पर चिका को बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ जब इनूमा इस घटना के बारे में बिल्कुल भी झूठ नहीं बोली क्योंकि इनूमा अपने दोनों बहिनों के मामले में हमेशा सच ही बोलती थी।

उसके झूठ बोलने की कोई वजह भी नहीं थी खास कर के जब जबकि उसकी अपनी मॉ जज थी। इनूमा को पता था कि चाहे कैसा भी मामला हो उसकी मॉ उसी की तरफ से बोलेगी।

चिका की सौतेली मॉ ने चिका की तरफ इशारा कर के कहा — "मैं जानती थी कि वह तू ही होगी। इसका मतलब यह है कि तूने यह नहीं देखा कि घर में पानी काफी था कि नहीं और तू उसको नहाने नहीं देना चाहती।

देखना कि कल तेरे पिता कहीं जागने पर अपना नहाने का पानी न मॉग बैठें और न ही मैं अपना खाना बनाने के लिये।"

चिका बोली — "पर मॉ कल तो इके बाजार दिन है।"

मॉ बोली — "ओह, यह तो मेरे लिये एक नयी खबर है। यह समस्या तेरी है मेरी नहीं, है न? बस वह ध्यान में रखना जो मैंने तुझसे कहा है नहीं तो मैं तेरा मॉस गिद्धों को खिला दूँगी।" इतना कह कर वह घूमी और घर के अन्दर चली गयी।

इस बीच इनूमा ने अपने कपड़ों से पानी निचोड़ा, अपने पीछे से मिट्टी झाड़ कर साफ की और फिर अपनी मॉ के पीछे पीछे घर के अन्दर चली गयी।

जब वह घर के अन्दर घुस रही थी तो वह चिका से बोली — "अब बता हॅसने की किसकी बारी है और रोने की किसकी?"

अगले दिन चिका मुर्गे की दूसरी बॉग से पहले ही उठ गयी। उसने पानी का सबसे बड़ा घड़ा उठाया जो वह ला सकती थी और पानी लाने नदी की तरफ चल दी।

वह उधर कॉपती कॉपती सी चली जा रही थी और अपने ची[10] से प्रार्थना करती जा रही थी — "अगर मॉ अपने बच्चों के लिये इसी तरह से दुआ करती हैं तो मेरे साथ जो कुछ भी बुरा हो हो जाये, पर अगर वे ऐसा नहीं करतीं तो मेरा ची मेरी रक्षा करे।"

चलते चलते हर कदम पर वह डर के मारे सिकुड़ती जा रही थी उसको लग रहा था कि सारी घासें उसे घूर रहीं थीं। जल्दी ही वह सड़क पर एक ऐसी जगह आ गयी जहॉ उसे लगा कि बहुत सारे बिच्छू सड़क पर बिखरे पड़े हैं।

[10] Chi – means personal god

उसने अपना घड़ा जितनी कस कर वह पकड़ सकती थी अपने बॉये हाथ से कस कर पकड़ लिया और फिर अपना दाहिना हाथ अपनी ऑखों पर फेर कर दोबारा उस जगह को देखा जहॉ उसने वे बिच्छू देखे थे कि कहीं उसकी आखों को धोखा तो नहीं हुआ।

पर नहीं वह उसकी ऑखों का धोखा नहीं था। वे बिच्छू वहॉ थे। जब उसको विश्वास हो गया कि जो कुछ उसने देखा था वह ठीक ही देखा था तो उसने उन बिच्छुओं से प्रार्थना की कि वह उसको रास्ता दे दें।

उसने अपनी कहानी उनको सुनाते हुए यह गाया —

मिस्टर बिच्छुओ, अच्छे बिच्छुओ
एक गरीब बेसहारा पर दया करो
यह मेरी इच्छा नहीं थी कि मैं यहॉ आऊँ
मेरी सौतेली मॉ ने मुझे यहॉ भेजा है
हालॉकि पंडितों ने कहा है कि यहॉ किसी को नहीं आना
पर मॉ का कहना न मानना तो भगवान ने भी मना कर रखा है

उसकी यह कहानी सुन कर सारे बिच्छू रास्ते से गायब हो गये और वह अपने रास्ते चल दी।

अभी वह ज़्यादा दूर नहीं गयी थी कि उसे रास्ते में बहुत सारे सॉप दिखायी दिये। वे सब एक दूसरे से लिपटे हुए एक बहुत बड़े ढेर के रूप में वहॉ पड़े थे। चिका तो उनको देख कर बहुत ही डर

गयी। वह तो चीख कर ऐसे कूद गयी जैसे हाथी घास[11] ने उसकी नंगी टॉगों को छू लिया हो।

जब उसकी सॉस में सॉस आयी तो उसने सॉपों से भी प्रार्थना की। उसने उनको भी अपनी कहानी सुनायी और अपना पहला वाला गीत गाया। आश्चर्य, उसका गीत सुन कर वे सॉप भी चले गये।

सॉपों के जाने के बाद उसने चैन की सॉस ली और वह फिर अपने पक्के इरादों के साथ आगे चल दी। चलते चलते वह उन सॉपों को गिनने की कोशिश करने लगी जिनको उसने वहॉ देखा था।

पर इतने में ही बहुत सारे बड़े बड़े शेरों की दहाड़ से उसका ध्यान बॅट गया। एक शेरनी उसकी तरफ बढ़ी।

उसको देखते ही चिका के दिमाग में शेरनी के शिकार की कहानियॉ कि शेरनी कैसे शिकार करती है बिजली की सी तेज़ी से दौड़ गयीं। उसने फिर अपना वही गीत गाया और आश्चर्य कि वे सारे शेर भी गायब हो गये।

चिका इन सब परेशानियों को झेलती हुई फिर आगे बढ़ी। आगे चल कर उसको एक बुढ़िया मिली जो अपने सिर पर चल रही थी।

[11] Elephant Grass or Ugandan grass – a kind of fodder grass mostly found in East African countries

फिर दो नारियल दिखायी दिये जो आपस में एक दूसरे को तोड़ने की कोशिश कर रहे थे। उसके बाद उसने कई सारे कपड़े देखे जो नदी के किनारे अपने आप ही धुल रहे थे।

जब उसने पानी लेने के लिये नदी में पैर रखा तो कोई नाक से बोलता हुआ सुनायी दिया — "तुम यहाँ क्या कर रही हो मेरी बच्ची?"

चिका ने ऊपर देखा नीचे देखा, इधर देखा उधर देखा, पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया। इससे पहले कि वह कोई जवाब देती वही आवाज फिर बोली — "तुम्हें इधर उधर देखने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि तुम जो कुछ देखोगी वह तुमको देखने में अच्छा नहीं लगेगा।"

पर चिका को अब उस आवाज के बोलने वाले से डर कम लग रहा था और उसको देखने की उत्सुकता ज़्यादा हो रही थी। अब तक उसका सामना केवल खतरनाक जानवरों और अजीब अजीब चीज़ों से ही हुआ था पर अब एक आदमी जो बोल रहा था... उसको देखना तो जरूरी था न।

चिका ने उस आवाज को नमस्ते की और उससे पूछा — "क्या आप ठीक से सोयीं?"

आवाज ने हाँ में जवाब दिया और फिर वह आगे बोली — "बेटी, तुम्हारे जैसी प्यारी लड़की के लिये यह जगह इस दिन आने

की जगह नहीं है। क्या तुम्हारी मॉ को यह बात पता नहीं जो उसने तुमको यहॉ मरने के लिये भेज दिया?"

चिका ने उस तरफ देखा जिस तरफ से उसको लग रहा था कि वह आवाज आ रही थी। आश्चर्य कि वहॉ एक बहुत ही बदसूरत बुढ़िया खड़ी थी। उस बुढ़िया की एक ऑख थी, एक हाथ था और एक पैर था। वह आधे शरीर की बुढ़िया थी।

उसकी नाक का एक बड़ा हिस्सा कोढ़ से खत्म हो गया था जिसने उसकी आवाज को नाक से बोलने वाली बना दिया था। उसके पास एक घड़ा था जो चिका के घड़े के साइज़ से एक चौथाई था।

चिका को उस बुढ़िया पर दया आ गयी। उसने उसका घड़ा पानी से भर दिया। जब वह बुढ़िया कूद कूद कर चल रही थी तो चिका उसके पीछे पीछे उसके घर तक जा रही थी।

चिका उस बुढ़िया के साथ बहुत अच्छा महसूस कर रही थी सो उसने उसको अपनी सारी कहानी सुना दी। उसने उसको बताया कि किस तरह उसकी मॉ मर गयी थी। किस तरह उसकी सौतेली मॉ उसका पालन पोषण कर रही थी। और किस तरह वह घर का सारा काम करती थी।

उसने उसको पानी का घड़ा टूटने की घटना भी बतायी और कहा कि उसी घड़े के टूटने की वजह से वह वहॉ आज इके बाजार वाले दिन पानी भरने आयी थी।

जब दोनों उस बुढ़िया के घर पहुँचे तो उस बुढ़िया ने चिका को याम[12] के लिये एक पत्थर दिया और मछली के लिये पेड़ की छाल दी और उससे अपने लिये खाना बनाने के लिये कहा।

चिका ने उससे वे चीज़ें लीं और उनको एक घड़े में रख दिया जो उस बुढ़िया ने ही उसको दिया था। फिर उस घड़े के नीचे उसने आग जला दी।

कुछ पल बाद वह उसको देखने गयी तो उसने देखा कि वह घड़ा तो बहुत ही स्वादिष्ट मछली और याम से भरा हुआ था। उसने वह खाना बुढ़िया और अपने दोनों के लिये परोसा और दोनों ने उसे खाया।

जब वे दोनों खाना खा चुकीं तो चिका को लगा कि काफी समय बीत चुका है सो उसने बुढ़िया से जाने की इजाज़त माँगी।

उसने बुढ़िया से कहा — "मुझे अफसोस है लेकिन अब मैं जाना चाहती हूँ क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि मेरी माँ यह सोचे कि मैं काम से बच रही हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप ठीक रहेंगी। मैं आपसे मिलने के लिये फिर आऊँगी।"

[12] Yam is a tuber like vegetable which is a staple food in West African countries. One Yam can weigh up to 10 pounds heavy. See its picture above.

बुढ़िया बोली — "इससे पहले कि तुम जाओ बेटी, अपने लिये इन दो घड़ों में से एक घड़ा लेती जाओ। यह तुम्हारी सहायता के बदले में मेरी एक छोटी सी भेंट है।"

कह कर उसने चिका को कैलेबाश के दो घड़े[13] दिखाये। एक घड़ा बड़ा था जिस पर फूल पत्ती का डिजाइन बना हुआ था और दूसरा घड़ा छोटा था जो ऐसा लगता था कि उसको बिना मौसम के किसी बिना माली के खेत से तोड़ा गया हो।

चिका ने छोटा वाला घड़ा ले लिया और उस बुढ़िया को धन्यवाद दिया। बुढ़िया बोली — "ठीक है मेरे बच्ची, ठीक से जाओ और खुश रहो। जब तुम घर पहुँच जाओ तो अपने माता पिता को बुलाना और उनसे अपने घर में थोड़ी सी जगह खाली करने के लिये कहना। जब वे जगह साफ कर दें तब यह घड़ा तोड़ना।

और हॉ, जब तुम घर जा रही होगी तो रास्ते में तुम डुम डुम और चम चम चम की आवाज सुनोगी। पहली आवाज पर तुम किसी झाड़ी में भाग जाना और उस बुरी आत्मा को जाने देना। दूसरी आवाज पर तुम वहॉ से बाहर निकल आना और अपने घर चली जाना।"

---

[13] Translated for the word "Calabash" – Calabash is the dried puter cover of a pumpkin-like fruit to keep dry or wet things. See its picture above.

जैसे ही चिका वहॉ से चली तो उसने डुम डुम और चम चम चम की आवाज सुनी। उस बुढ़िया के कहे अनुसार पहली आवाज पर वह एक झाड़ी में छिप गयी और उसके बाद दूसरी आवाज पर वह वहॉ से बाहर निकली और अपने घर पहुॅच गयी।

घर पहुॅच कर उसने अपने माता पिता से घर में थोड़ी सी जगह साफ करने को कहा। उसकी सौतेली मॉ उस पर देर से आने के लिये चिल्लाने को ही थी कि चिका ने वह घड़ा तोड़ दिया।

तुरन्त ही सारा घर सोने चॉदी, खाना, जानवर और बहुत सारी अच्छी अच्छी चीजों से भर गया। उसका पिता यह सब देख कर बहुत खुश हुआ।

पहली बात तो यह कि उसकी बेटी सही सलामत वापस आ गयी थी और दूसरी बात यह कि वह इतना सारा खजाना साथ ले कर आयी थी। उसका प्यार चिका के लिये और बढ़ गया था।

पर चिका की सौतेली मॉ खुश नहीं थी। उसकी इच्छा थी कि उसकी अपनी बेटी यह सब खजाना ले कर घर आती। इस बात के लिये उसको अगले इके बाजार दिन तक इन्तजार करना पड़ा।

इके बाजार के पहले दिन जब सब लोग सोने चले गये तो वह अपने घर के पीछे गयी और पानी के सारे बरतनों से पानी पलट दिया।

अगले दिन इके बाजार वाले दिन चिका की सौतेली मॉ मुर्गे की पहली बॉग से भी पहले उठी और अपनी बेटी इनूमा को उठा कर उसे नदी से पानी लाने भेजा।

वह उसके ऊपर चिल्लायी — "उठ, तू किसी काम की नहीं। तू हमेशा ही घर में रहना चाहती है और सोना चाहती है जबकि यह दूसरी लड़की अपने पिता का सारा प्यार ले लेगी। जा अभी अभी अपना घड़ा उठा, नदी से पानी भर कर ला और अपने पिता को खुश कर। और हॉ देख तू चिके के घड़े से भी ज़्यादा बड़ा घड़ा ले कर आना।"

इनूमा बेचारी ने घड़ा उठाया और नदी की तरफ डरती डरती चल दी। रास्ते में उसको भी वह सब मिला जो चिका को मिला था पर उसने उन सबके साथ बहुत ही खराब बरताव किया। उसने बिच्छुओं, सॉपों और शेरों से कहा "मेरे रास्ते से हट जाओ।"

उसको नारियल और कपड़ों की घटनाऐं मजेदार लगीं और जो बुढ़िया अपने सिर पर चल रही थी वह उस पर हॅस दी।

जब वह नदी के पास पहुॅची तो उस बुढ़िया ने उससे बोलना चाहा पर उसने नफरत से अपनी नाक ढक ली। उसने उसकी कोई सहायता भी नहीं की।

जब बुढ़िया ने उसको अपने घर बुलाया तो वह उसके घर केवल इसलिये गयी क्योंकि उसको उसके घर से वे जादू के घड़े लेने

थे। जब बुढ़िया ने उसको याम के लिये पत्थर, मछली के लिये पेड़ की छाल और घड़ा दिया तो वह बहुत भुनभुनायी।

उसने कहा — "कोई इस तरह कैसे रह सकता है। क्या तुम को मालूम नहीं कि ये घड़े जल जाते हैं और खाना पकाने के लिये इस्तेमाल नहीं किये जाने चाहिये? और पत्थर और पेड़ की छाल खाते हुए भी तुमने कभी किसी को सुना है क्या?

और मैं जब अपना खाना अपने आप नहीं बनाती तो फिर मैं तुम्हारे लिये खाना क्यों बनाऊँ?"

इस तरह से इनूमा हर बात में शिकायत करती रही। उसने केवल वही काम किये जो उसके लिये आसान और फायदेमन्द थे।

जब वह वहाँ से जाने लगी तो उस बुढ़िया ने उसको भी दो घड़े दिखाये और बोली — "तुम इनमें से एक घड़ा ले लो। जब तुम रास्ते में डुम डुम की आवाज सुनो तो किसी झाड़ी में छिप जाना पर जब तुम चम चम चम की आवाज सुनो तब वहाँ से बाहर निकल कर अपने घर चली जाना। घर जा कर अपनी माँ से पूछना... ।"

इनूमा ने उसकी बात बीच में काटी — "मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना है।" उसने घड़ों की तरफ देखा और उस बुढ़िया से बड़ा वाला और ज़्यादा सुन्दर दिखायी देने वाला घड़ा छीन लिया और अपने घर की तरफ चल दी।

बुढ़िया काँपती आवाज में बोली — "बेटी, शान्ति से जाओ। मुझे तुम्हारे लिये डर लगता है।"

इनूमा घर चल दी। जब वह घर जा रही थी तो उसने सुना डूम डूम डुम। पर वह चलती चली गयी। फिर उसने सुना चम चम चम और वह एक झाड़ी में घुस गयी।

जब वह घर आ गयी तो उसने भी अपनी मॉ से पूरा घर साफ करने के लिये और घर के दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द करने के लिये कहा ताकि वे अपना खजाना केवल अपने ही पास रख सकें।

वह अपनी मॉ से बोली — "मॉ, खूब बड़ी सी जगह साफ कर लो क्योंकि मैं तो बड़ा घड़ा ले कर आयी हूँ।"

उसकी मॉ ने जल्दी जल्दी घर साफ किया और घर के दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द कीं और इनूमा को घड़ा तोड़ने के लिये कहा। इनूमा ने घड़ा तोड़ा तो उसमें से तो बजाय खजाने के बहुत तरह की बीमारियॉ निकल पड़ीं।

जब इनूमा के पिता ने अपनी पत्नी और बेटी इनूमा को घर में नहीं देखा तो उसने उनके दरवाजे खोले तो वे सारी बीमारियॉ घर में से निकल कर दुनियॉ भर में फैल गयीं। और इस तरह से दुनियॉ में सारी बीमारियॉ फैल गयीं।

चिका हमेशा ही बहुत मेहनती और बहुत ढंग की लड़की रही। जब वह बड़ी हो गयी तो उसकी शादी एक सुन्दर और अमीर राजकुमार से हो गयी और वे दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

3 दो बहिनें और एक बूढ़ा[14]

बहुत दिन पहले की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में एक आदमी अपनी दो पत्नियों और दो बेटियों के साथ रहता था। उसकी दोनों पत्नियों की एक एक बेटी थी।

बिसी उसकी पहली पत्नी की बेटी थी और रन्ती[15] उसकी दूसरी पत्नी की बेटी थी। बिसी रन्ती से केवल कुछ ही महीने बड़ी थी।

सब लोग साथ साथ ही रहते थे सो उसकी दोनों बेटियॉ आपस में खूब खेलती थीं। पर बिसी को अपनी छोटी बहिन रन्ती को छेड़ने में बहुत मजा आता था जैसे उसकी मॉ को रन्ती की मॉ को छेड़ने में आता था।

जब बिसी रन्ती को छेड़ती तो रन्ती बेचारी रोती हुई अपनी मॉ के पास चली जाती और कभी कभी कहती कि काश वह भी बिसी को इसी तरह छेड़ सकती जैसे वह उसे छेड़ती है।

पर उसकी मॉ उसको समझाती कि बुरे लोगों के साथ बुरा बरताव नहीं करना चाहिये। इससे कोई भलाई नहीं होती। सो रन्ती हमेशा ही अच्छी रहने की कोशिश करती और बिसी से हमेशा ही प्यार से रहती चाहे वह उसके साथ कितना भी बुरा बरताव क्यों न करती।

---

[14] Two Sisters and an Old man – a folktale from Nigeria, West Africa. Adapted from the Web Site: http://allfolktales.com/folktales.php

[15] Bisi and Ranti – names od Nigerian women

एक बरसाती दिन रन्ती की मॉ बीमार पड़ी और चल बसी। अब रन्ती बिन मॉ की हो गयी थी सो बिसी अब उससे किसी भी तरह का बरताव करने के लिये आजाद थी। रन्ती भी अपनी अच्छाई की वजह से अब बिसी का सारा काम करने लगी थी।

बिसी आलस में पड़ी रहती। कभी कपड़े पहन लेती, कभी खा लेती, कभी सो जाती और कभी अपनी दोस्तों के घर हो आती।

जब कि रन्ती सुबह बहुत जल्दी उठती, मुर्गे की बॉग से भी पहले। एक घड़ा वह अपने सिर पर रखती और दूसरा अपनी बॉह में लेती और नदी से परिवार के लिये पानी भरने जाती।

एक बड़ा सा बरतन उसके घर में रखा था जिसको उसे भरना होता था। उसको पानी से भरने के लिये उसको नदी के कई चक्कर काटने पड़ते।

उसके बाद वह पाम की पत्तियों से बनी झाड़ू से घर का ऑगन साफ करती और फिर नाश्ते के लिये याम[16] छीलती। इस तरह उसके काम शाम तक चलते ही रहते।

शाम तक वह काम करते करते इतना थक जाती कि बस अपनी चटाई पर लेटते ही सो जाती। वह सारे दिन इतना काम

[16] Yam is a root vegetable found in Nigeria abundantly. It is their staple food. One yam piece can sometimes weigh up to 10 pounds. See its picture above.

करती थी कि उसको अपने बारे में सोचने का भी मौका नहीं मिलता। और यह सब रोज ही चलता।

एक दिन जब वह रोज की तरह नदी पर पानी भरने गयी तो उसने देखा कि एक बूढ़ा आदमी नदी के किनारे बैठा हुआ है। उसके सारे बदन पर घाव थे और वह सचमुच में बहुत दर्द में लग रहा था।

रन्ती उसको इतने दर्द में देख कर उसके पास गयी और उससे पूछा — "बाबा, तुम ठीक तो हो न? तुमको कुछ चाहिये?"

उसको थोड़ा पानी चाहिये था सो रन्ती ने उसको पानी दिया फिर उसने उसके घाव धोये।

बूढ़ा उस बच्ची की इस सेवा से बहुत खुश हुआ और बोला — "तुम्हारा दिल बहुत अच्छा है बेटी। तुमको ज़िन्दगी में बहुत अच्छी अच्छी चीज़ें मिलनी चाहिये।"

फिर उसने रन्ती को नदी पार एक बगीचे में जाने के लिये कहा। उसने उसको बताया कि वहाँ उसको दो पेड़ मिलेंगे – एक सुनहरे फल वाला जिसको उसे बिल्कुल नहीं छूना है और दूसरा सड़े हुए फल वाला।

सड़े हुए फल वाले पेड़ से उसको एक सड़ा हुआ फल ले लेना है और उसको घर ले जा कर तोड़ना है।

जैसा बूढ़े ने उसे बताया था उसने वैसा ही किया। जब उसने वह फल तोड़ा तो उसमें से तो बहुत सारा खजाना निकल पड़ा।

उसका सारा कमरा उस खजाने से भर गया। रन्ती ने न तो कभी ऐसा खजाना सोचा था और न कभी ऐसा खजाना देखा था।

जब बिसी को पता चला कि रन्ती को खजाना मिला है तो उसने रन्ती को यह बताने पर मजबूर किया कि वह उसे यह बताये कि वह खजाना उसे कहॉ से मिला था। रन्ती ने उसे बताया कि उसको वह खजाना कैसे मिला था।

अगली सुबह जब मुर्गा कई बार बॉग दे चुका तब बिसी उठी और यह सोचते हुए कि वह बूढ़ा अभी भी नदी किनारे बैठा होगा उसने भी पानी लाने के लिये एक घड़ा उठाया और नदी की तरफ चल दी।

उसकी खुशकिस्मती से जैसा कि रन्ती ने बताया था वह बूढ़ा अभी भी वहॉ बैठा हुआ था। वह उसके पास गयी और उससे पूछा — "जादू के बगीचे का रास्ता किधर से जाता है?"

बूढ़े ने उसको बगीचे का रास्ता बता दिया और यह भी बता दिया कि वह वहॉ से सड़ा हुआ फल उठाये सुनहरा वाला फल नहीं।

बिसी ने अपना घड़ा वहीं छोड़ा और तुरन्त ही बगीचे जाने वाले रास्ते पर चल दी। वहॉ उसको दोनों पेड़ दिखायी दे गये सुनहरे फल वाला भी और सड़े हुए फल वाला भी।

वह सोचने लगी कि यह बूढ़ा क्या सोचता है कि मैं क्या बिल्कुल ही बेवकूफ हूँ। उसने मुझे सड़ा हुआ फल उठाने के लिये क्यों कहा मुझको तो सुनहरा फल ही उठाना चाहिये।

उसने जितने उसके हाथों में आ सकते थे और जितने वह घर ले जा सकती थी उतने सुनहरे फल उठा लिये और उन सबको ले कर वह घर आ गयी।

घर आ कर वह अपने कमरे में गयी और उन फलों के तोड़ने से पहले उस कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया क्योंकि वह यह नहीं चाहती थी कि उसके खजाने का किसी और को पता चले।

उसने वह सारे फल जमीन पर ज़ोर से फेंके ताकि वे सब एक साथ टूट जायें। वे सब एक साथ ही टूट गये पर बजाय खजाना निकलने के उन फलों में से तो बहुत सारे कीड़े मकोड़े और रेंगने वाले जानवर निकल पड़े।

यह देख कर तो वह दंग रह गयी और बहुत डर गयी और उनसे बचने के लिये बाहर भागने की कोशिश करने लगी। पर उसके कमरे का दरवाजा तो बन्द था।

बड़ी मुश्किल से वह किसी तरह दरवाजे तक पहुँच पायी। उसने दरवाजा खोला और फिर किसी तरह बाहर की तरफ भाग कर उसने उन जानवरों से किसी तरह अपनी जान बचायी।

लालच बुरी बला है और नकल के लिये भी अक्ल और नम्रता चाहिये।

4 जादू की छड़ी[17]

बहुत साल पुरानी बात है कि अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश में एक राजा और एक रानी रहते थे। राजा की यह पत्नी और दूसरी रानियॉ जैसे रहती हैं उनसे कुछ अलग ही तरह से रहती थी।

यह रानी बहुत मेहनती और ताकतवर थी और बहुत सारे काम यह अपने आप ही किया करती थी।

यह अपना खाना खरीदने के लिये खुद बाजार जाती, अपने कपड़े खुद ही धोती और अपना खाना भी खुद ही बनाती थी। जैसे और स्त्रियॉ अपने घरों में काम करती हैं यह रानी भी वैसे ही अपने घर में अपना काम अपने आप ही किया करती थी।

यह रानी जिस रास्ते से बाजार जाती थी उस रास्ते पर दो आदमी रहते थे। एक का नाम था ओजुओरुओन्ये[18] जिसका मतलब था "किसी के पास भी सब नहीं होता"। पर इतना लम्बा नाम लेने की बजाय सब उसको ओजुरू बुलाते थे। ओजुरू बहुत ही नीच किस्म का और लालची आदमी था।

---

[17] The Magic Wand – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa. Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com as an e-book for free.

[18] Ozuoruonye – means "no one has it all"

दूसरे आदमी का नाम था नोकिओमा[19] जिसका मतलब था दयालु आदमी। इस आदमी को लोग ओकोमा बुलाते थे। ओकोमा बहुत गरीब और दयालु था।

जब भी राजा की पत्नी बाजार जाती तो इन दोनों के घर पानी पीने के लिये रुक जाती। उन दिनों पानी बहुत मुश्किल से मिला करता था क्योंकि नदी उन घरों से काफी दूरी पर थी और वहाँ से पानी लाने में काफी समय लग जाया करता था।

माता पिता पानी लाने के लिये अक्सर अपने बच्चों को भेज दिया करते थे और उनके पानी से भरे कैलेबाश[20] उस पथरीली सड़क पर टूट जाया करते थे। वे अपने टूटे कैलेबाश के लिये तो इतना नहीं रोते थे जितना कि पानी लाने की अपनी मेहनत के लिये रोते थे।

इससे भी बुरा तब होता जब उनको दूसरा कैलेबाश दे दिया जाता और उनसे दोबारा पानी लाने के लिये कहा जाता।

ओजुरू हमेशा राजा की पत्नी को पानी देने से मना कर देता। हर आदमी जानता था कि ओजुरू बहुत ही बुरा आदमी है जो न केवल अजनबियों के साथ ही बुरा बरताव करता था बल्कि उनको उनकी छोटी छोटी चीज़ों के लिये अक्सर लूट भी लेता था।

---

[19] Nwokeoma – means “kind hearted or a good man

[20] Calabash – a dried outer cover of a pumpkin like fruit which looks like Indian clay pitcher and is used to keep wet and dry things all over West African countries. See its picture above.

ओजुरू राजा की पत्नी को चिढ़ाता — "ओ अमीर आदमी, तुम क्या सोचती हो कि मैं और मेरा पानी तुम्हारा है?"

तो वह जवाब देती — "नहीं नहीं, तुम्हारा पानी मेरा कैसे हो सकता है। मैं तो बस अपनी प्यास बुझाने के लिये थोड़ा सा पानी पीना चाहती थी।"

तब ओजुरू जवाब देता — "तुम्हारे पास पैसा है पर मेरा पानी तो दो जानवर के बराबर कीमती है।"

राजा की पत्नी कहती — "पर मेरे पास तो दो जानवर नहीं हैं।"

तब वह ज़ोर से हॅसता और कहता — "हा हा हा हा। अब बताओ कौन ज़्यादा अमीर है, तुम या में? जब तुम मरोगी तो तुम अपनी सारी दौलत यहीं छोड़ जाओगी और तुम एक घड़ा पानी भी नहीं खरीद सकतीं। हा हा हा हा।" और ओजुरू बेहिसाब हॅसता ही चला जाता।

राजा की पत्नी ओजुरू को ऐसे ही हॅसता हुआ छोड़ कर उठ जाती और वहॉ से और ज़्यादा प्यासी चली जाती। वहॉ से चलने के बाद ओकोमा का घर थोड़ी देर में आता। वहॉ जा कर वह पानी पीती।

ओकोमा हालॉकि एक गरीब आदमी था और उसके पास अपने लिये भी काफी नहीं था पर वह हमेशा राजा की पत्नी को पानी

पिलाता। वह राजा की पत्नी की बहुत इज़्ज़त करता था और हमेशा उसे झुक कर नमस्ते करता था।

गॉव का हर आदमी जानता था कि ओकोमा बहुत ही दयावान आदमी था और वह किसी को भी अपना खाने का आखिरी टुकड़ा और पानी की आखिरी बूँद तक दे देता था।

इस तरह राजा की पत्नी का इन दोनों से इस तरह का तजुरबा कई बाजार हफ्तों[21] तक चलता रहा। वह चुपचाप चली जाती और किसी से भी कुछ नहीं कहती, राजा से भी नहीं।

पर वह ओकोमा के बरताव से बहुत प्रभावित थी क्योंकि जब भी वह उससे पानी मॉगती थी वह हर बार उसको पानी पिलाता था। उसका मन करता था कि वह उसे उसके इस अच्छे बरताव के लिये कुछ इनाम दे।

एक दिन जब राजा की पत्नी बाजार गयी तो वह अपने साथ एक जादू की छड़ी लेती गयी। यह छड़ी वह सब कुछ कर सकती थी जो भी उसका मालिक उससे करने के लिये कहे।

जब वह ओकोमा के घर पहुँची तो उसने हमेशा की तरह से उससे पानी मॉगा। ओकोमा ने भी उसको हमेशा की तरह पानी पिलाया। पानी पी कर उसने वह छड़ी ओकोमा को दी और उससे कहा कि वह वह छड़ी उसकी कमर पर मारे।

[21] Market weeks – in Nigerian villages markets were organized daily or weekly so one market day could be counted as one market day or one week.

ओकोमा घबरा गया और घबरा कर झुक कर बोला — "नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता रानी जी।"

उसने कहा — "पर तुम समझते क्यों नहीं?"

वह बोला — "मैं सब समझता हूँ। मेरा काम आपकी रक्षा करना है, आपकी सेवा करना है, आपको मारना नहीं।"

राजा की पत्नी बोली — "हॉ मुझे मालूम है। इसलिये जैसा मैं कहती हूँ वैसा ही करो। अगर तुम वैसा ही करोगे जैसा मैं कहती हूँ तो तुम इतने अमीर हो जाओगे जितना कि तुम सोच भी नहीं सकते। तुमको तुम्हारे अच्छे बरताव के लिये कुछ देने का मेरा यह अपना तरीका है।"

ओकोमा ने राजा की पत्नी से वह जादू की छड़ी ली और बहुत धीरे से उसकी कमर पर मारा। अचानक उसका घर बहुत सारे जानवर, याम[22] और उस हर चीज़ से भर गया जो एक अमीर आदमी के घर में होती है – सिवाय राजा के घर के। सो ओकोमा अब अपने गॉव के हर आदमी से ज़्यादा अमीर था।

गॉव में हर आदमी को ओकोमा के अचानक अमीर हो जाने की खबर मिल चुकी थी।

[22] Yam is a kind of root vegetable which is very popular food in West African countries. One yam may weigh up to 10 pounds. See the picture above.

पर इस अमीरी ने ओकोमा को बिगाड़ा नहीं बल्कि वह और ज़्यादा दयालु हो गया, ख़ास कर उन लोगों के साथ जिनके पास उससे कम था। जितना ज़्यादा वह दयालु होता गया उतना ही ज़्यादा वह लोकप्रिय और अमीर होता चला गया।

ओजुरू यह सब देख कर बहुत गुस्सा था और वह ओकोमा से जलने लगा। वह यह जानना चाहता था कि उसके पास अचानक इतनी सारी दौलत आ कहॉ से गयी और वह इतनी जल्दी इतना मशहूर कैसे हो गया। सो उसने सोचा कि उसके घर जाया जाये और उससे इस बात का पता किया जाये।

ओकोमा खुद ही सबको यह बताने के लिये बहुत इच्छुक था कि उसके पास यह सब कहॉ से आया सो जब ओजुरू उसके घर आया तो उसने उसको सब बता दिया।

अगले दिन जब राजा की पत्नी बाजार जा रही थी तो ओजूरू अपने घर से निकल कर उसकी सहायता के लिये बाहर आया। उसने रानी को झुक कर नमस्ते की और बोला — "नमस्ते रानी जी।"

रानी बोली — "नमस्ते ओजुरू। आज तुम्हारे इस बरताव की क्या कीमत है?"

ओजुरू बोला — "रानी जी, यह मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात होगी अगर मैं अपने राजा की पत्नी की सेवा करूॅ तो। आज दिन

तो बहुत अच्छा है मगर थोड़ा भीगा भीगा है सो मैंने सोचा कि शायद आपको पानी की जरूरत हो।"

राजा की पत्नी ने कहा — "नहीं मिस्टर। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। कोई भी प्यास जिसे यह आशा हो कि वह थोड़ी देर में बुझ जायेगी आदमी को मार नहीं सकती।"

"पर रानी जी, गरम पानी पीने के लिये थोड़ी देर तक क्यों इन्तजार करना जब कि यहाँ आपको साफ ठंडा पानी मिल सकता है।"

राजा की पत्नी ने कहा — "मेरे बेटे, चिड़िया का कहना है कि जैसे कोई शिकारी अपना निशाना बिना चूके मारना सीखता है उसी तरह से चिड़िया भी बिना आराम किये उड़ना सीख लेती है। तुमने पहले कभी मुझे पानी नहीं दिया इसी लिये मैंने तुम्हारे घर के पास से प्यासे जाना सीख लिया है।"

पर ओजुरू उससे जिद करने लगा कि वह उसके घर आये और उसके यहाँ पानी पी कर जाये। तो राजा की पत्नी को लगा कि ओजुरू को टालने का उसके पास यही एक रास्ता है कि वह उसके घर जाये और पानी पिये सो वह उसके घर चली गयी।

जब राजा की पत्नी वहाँ पानी पी रही थी तो ओजुरू यह सोच कर उसके पीछे गया कि ओकोमा तो उस ज़रा सी छड़ी के इसकी पीठ पर मारने से इतना अमीर हो गया तो अगर मैं इसके सिर पर

किसी बड़े से डंडे से मारूँगा तो मैं तो उससे भी ज़्यादा अमीर हो जाऊँगा।"

यही सोच कर ओजुरू ने एक मोटा सा डंडा उठाया और राजा की पत्नी के सिर पर बहुत ज़ोर से दे मारा। उसने वह डंडा इतनी ज़ोर से मारा कि उसके डंडा मारते ही राजा की पत्नी मर गयी। अब उसको यही पता नहीं था कि वह उसका क्या करे क्योंकि वह तो मर चुकी थी।

इस बीच ओकोमा अपनी अमीरी का आनन्द ले रहा था। वह इस बात से बिल्कुल ही बेखबर था कि उसके इधर उधर क्या हो रहा था।

कुछ सोचने के बाद उस रात ओजुरू राजा की पत्नी के शरीर को जंगल में ले गया और उसको एक झाड़ी के सहारे बिठा दिया और अगले दिन मुर्गे की पहली बॉग से भी पहले वह ओकोमा के घर पहुँच गया।

वहाँ जा कर उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया।

ओकोमा ने पूछा — "कौन है?"

"मैं तुम्हारा दोस्त ओजुरू।"

ओकोमा बोला — "पिछली बार तुम तब आये थे जब तुमने मेरे अमीर होने की खबर सुनी थी। मेरे अमीर हो जाने की खबर सुन कर दोबारा आने में तुमने इतना समय क्यों लगाया? आज तो तुम मेरे घर दोबारा बहुत दिनों बाद आ रहे हो। कहो क्या बात है।"

"दरवाजा खोलो। आज तुम्हारी किस्मत खुल गयी है।"

"जरूर जरूर। पर अभी तो बहुत सुबह है। बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ। मैं और मेरा परिवार तो अभी भी बिस्तर में ही लेटे हैं। तुम वह लिस्ट मेरे दरवाजे पर छोड़ जाओ जो तुम्हें चाहिये और मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि वह सब तुमको दिन निकलते ही मिल जायेगा।"

ओजुरू बोला — "आज मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिये, ओ मेरे अमीर दोस्त। आज तो मैं तुम्हारे लिये ही कुछ करने आया हूँ।"

"मेरे लिये करने आये हो? क्या करने आये हो?"

"क्या तुमको वह इनाम वाला हिरन याद है जो तुमको हमेशा से चाहिये था। आज तुम उसको ले सकते हो।"

ओकोमा ने पूछा — "ओह वह वाला हिरन? वह कैसे?"

ओजुरू बोला — "मैंने अभी अभी मिस्टर न्वेके[23] को दो हिरन ले जाते देखा है। वे दोनों एक एक टन के तो जरूर होंगे। उनके तो सींग ही छह छह फीट लम्बे होंगे।

वह कह रहा था कि करीब करीब दो सौ हिरनों का एक झुंड उत्तर की तरफ के जंगल में देखा गया है। तो कोई भी वहाँ जा कर उनमें से जो कोई हिरन जिसको अच्छा लगे ले सकता है।"

ओकोमा बोला — "पर वह तो बहुत ही आलसी है।"

ओजुरू बोला — "यही तो मैं भी कहना चाह रहा हूँ।"

[23] Nweke – a Nigerian name for a male

यह सुन कर ओकोमा ने तुरन्त ही अपना शिकारियों वाला सूट पहना, अपनी बन्दूक अपने कन्धे से लटकायी जैसे कि कुत्ते को उसकी डोर से पकड़ते हैं, और दरवाजा खोला और अपना इनाम लाने के लिये जाने के लिये बेताबी से तैयार हो गया।

एक शिकारी के लिये इससे ज़्यादा और कोई अच्छी बात नहीं हो सकती कि गॉव भर में वह सबसे बड़ा शिकार कर के लाये। ओकोमा हमेशा से किसी बड़े शिकार की ताक में था पर अब तक एक गिलहरी भी नहीं मार सका था।

जंगल में उत्तर की तरफ शिकार करना तो बहुत बड़ी बात थी क्योंकि उधर शेर और हयीना[24] भी शिकार के लिये आते थे। पर अब उसके पास एक बहुत ही बढ़िया डबल बैरल बन्दूक[25] थी तो अब वह उधर जाने के लिये इन्तजार नहीं कर सका।

जब वे दोनों उत्तर की तरफ वाले जंगल में पहुॅचे तो ओजुरू ने ओकोमा को उस दिशा की तरफ इशारा किया जिस तरफ वह राजा की पत्नी की लाश छिपा कर आया था और उसके कान में फुसफुसाया — "उधर उधर। चला गोली।"

[24] Hyena – a lion or tiger like animal. See its picture above.
[25] Double barrel gun – it has two sources of bullets and is able to fire two quick shots.

बस ओकोमा ने आव देखा न ताव और दो गोलियॉ फटाक से चला दीं। जैसे ही वे दो गोलियॉ ओकोमा की बन्दूक से निकलीं कि ओजुरू हिरन को पकड़ने के लिये भागा।

वहॉ जा कर वह ज़ोर से रुऑसा हो कर चिल्लाया — "ओह, नहीं नहीं।"

ओकोमा ने भोलेपन से पूछा — "क्यों क्या हुआ? क्या मैंने हिरन के सींग तोड़ दिये?"

ओजुरू दुखी होते हुए बोला — "नहीं नहीं, तुमने तो राजा की पत्नी को मार दिया है।"

ओकोमा ने पूछा — "क्या? मैंने राजा की पत्नी को मार दिया? पर वह इतनी सुबह सुबह यहॉ इस जंगल में कर क्या रही थीं?"

ओजुरू बोला — "क्या तुम यह बात किसी राजा या रानी के बारे में पूछ सकते हो?"

ओकोमा तो यह सुन कर बहुत ही दुखी हो गया और अपने आपको कोसने लगा। वह जो गॉव भर में अपने अच्छे कामों के लिये मशहूर था अब राजा की पत्नी के हत्यारे के रूप में मशहूर हो जायेगा। और खास कर के तब जबकि उसने राजा की पत्नी के लिये कितना किया था।

वह तो अब वह वाला कुत्ता हो गया था जो न केवल अपने खाना खिलाने वाले को काटता ही था बल्कि उसको मार भी देता

था। पर ओजुरू आज इस बात से बहुत खुश था कि उसकी यह चाल उसकी योजना के अनुसार ठीक काम कर गयी थी।

अब जब कि ओजुरू यह सोच रहा था कि वह इस घटना को राजा को कैसे बताये, ओकोमा राजा की पत्नी का शरीर उठा कर अपने घर ले गया और उसको कपड़ों और चटाइयों से ढक दिया।

फिर उसने अपने दिमाग में उन सब घटनाओं को एक एक कर के दोहराया जो उसके साथ शुरू से ले कर उन गोली चलाने तक हुई थीं।

उसने सोचा — "इन घटनाओं की तरतीब से तो ऐसा लगता है कि वह मैं नहीं हो सकता जिसने राजा की पत्नी को मारा है। पर अगर ऐसा नहीं है तो फिर उसको किसने मारा? और मैं यह कैसे साबित करूँगा कि उसको मैंने नहीं मारा?"

यही सोचते सोचते उसको पूरा एक दिन बीत गया।

उधर राजा अपनी पत्नी को ढूँढ रहा था। उसने यह मुनादी पिटवा दी थी कि जो कोई भी उसकी पत्नी को ढूँढ कर लायेगा वह उसको बहुत सारा इनाम देगा और उसको इतना अमीर बना देगा जितना कि वह सपने में भी नहीं सोच सकता।

इसके अलावा उस आदमी को जिसने उसको अब तक रखा है और कुछ भी नुकसान पहुँचाया है उसको वह मौत की सजा देगा।

ओकोमा का वह सारा दिन बड़ी बेचैनी में और सोचते हुए गुजरा। शाम तक उसके दिमाग में एक विचार आया जो उसको लगा कि वह बहुत अच्छा था और वह काम कर जायेगा।

अगले दिन उसने अपना बहुत सारा पैसा अपने लिये सबसे बढ़िया कपड़े, गहने और जूते जैसे कि गॉव भर में कभी किसी ने न पहने थे खरीदने में खर्च किये। फिर तीसरे पहर उसने उनको पहना और वह ओजुरू के पास गया।

जब ओजुरू ने ओकोमा को देखा तो उसका मुँह तो आश्चर्य से खुला का खुला रह गया। उसने ओकोमा से कहा — "मुझे यह तो मालूम था कि तुम अमीर हो पर मुझे यह नहीं मालूम था कि तुम इतने अमीर हो।"

ओकोमा बोला — "हॉ, पर अब तो मैं हूँ।"

ओजुरू ने पूछा — "पर यह सब तुम्हें मिला कहॉ से?"

ओकोमा बोला — "राजा से।"

ओजुरू बोला — "राजा से? पहले उसकी पत्नी ने तुम्हें अमीर बनाया और अब खुद राजा ने? ऐसा कैसे हुआ?"

ओकोमा ने उसे चिढ़ाया — "उसकी पत्नी को मारने के लिये। साफ है कि वह अपनी पत्नी से छुटकारा पाना चाह रहा था पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उससे कैसे छुटकारा पाये सो उसने मुझे चुना।

ऐसा किसने सोचा था कि मैं इतनी जल्दी इतना अमीर हो जाऊँगा? मुझे लगता है कि हममें से कुछ लोग पैदा ही अच्छी किस्मत ले कर होते हैं।"

ओजुरू अपने में ही बुड़बुड़ाया — "हॉ कुछ लोग पैदा ही अच्छी किस्मत ले कर होते हैं, उफ़। यह सब तो मेरी किस्मत में होना चाहिये था।"

ओकोमा बोला — "तुमने कुछ कहा?"

ओजुरू बोला — "नही नहीं कुछ नहीं, कुछ नहीं। मैंने कहा कि तुम वाकई बहुत किस्मत वाले हो।" और ओकोमा ओजुरू के घर से चला आया और वहॉ से आ कर वह यही सोचता रहा कि वह भी उतना अमीर कैसे बने।

आखिर उसके दिमाग में एक प्लान आया। उसी रात ओजुरू राजा के महल की तरफ गया और उसका दरवाजा खटखटाया। एक नौकर ने दरवाजा खोला तो उसने राजा से मिलने की इजाज़त मॉगी। नौकर उसको राजा के पास ले गया।

राजा ने पूछा — "मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ मेरे बेटे? मुझे बहुत अफसोस है कि मैं आजकल किसी मेहमान से नहीं मिल जुल रहा हूँ जब तक कि मेरी रानी नहीं मिल जाती। अगर तुम उसी के गायब होने के सिलसिले में आये हो तो ठीक है वरना... ।

"मैं उसी के गायब होने के सिलसिले में आया हूँ, राजा अमर रहे। जो भी कुछ आपने ओकोमा को दिया है वह मेरा है।"

राजा कुछ परेशान सा होता हुआ बोला — "क्या कह रहे हो तुम? मैंने ओकोमा को क्या दिया है?"

ओजुरू बोला — "मैं सच कह रहा हूँ कि मैंने ही आपकी पत्नी को मारा है और वे सब चीज़ें अब मेरी हैं जो आपने ओकोमा को दी हैं।"

राजा की फिर भी कुछ समझ में नहीं आया तो ओजुरू ने उसको बताया कि उसने कैसे और क्यों उसकी पत्नी को मारा और फिर उसने कैसे इस तरह की तरकीब निकाली कि ऐसा लगे जैसे कि उसको ओकोमा ने मारा है।

राजा बोला — "मुझे यह कहते हुए बहुत दुख होता है कि तुम न केवल नीच हो बल्कि लालची भी हो। जो तलवार के सहारे जीते हैं वे तलवार से ही मरते हैं।"

राजा बहुत गुस्से में था। उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे उसको गिरफ्तार कर के जेल में डाल दें और फिर मार दें।

फिर ओकोमा को उसने इतनी सारी भेंटें दीं जितनी कि उसने कभी सपने में भी नहीं सोचीं थीं।

जब राजा मर गया तो गॉव वालों ने ओकोमा को अपना राजा बना लिया और उसके अच्छे कामों की देश भर में तारीफ होने लगी।

5 बॉसुरी[26]

बहुत साल पुरानी बात है एक आदमी अपनी दो पत्नियों के साथ रहता था। उसकी बड़ी पत्नी के तो कई बच्चे थे परन्तु छोटी पत्नी के केवल एक ही बेटा था।

एक दिन वह आदमी अपने सारे परिवार के साथ खेत पर गया। वहॉ सारे दिन सबने मिल कर काम किया फिर शाम को अपने अपने चाकू हल टोकरियॉ आदि इकट्ठी कीं और जल्दी जल्दी अपने घर चल दिये।

सात जंगल और सात नदियॉ पार कर वे सब अपने घर आये। अचानक उसकी छोटी पत्नी का बेटा बोला कि वह अपनी बॉसुरी तो खेत पर ही भूल आया था और अब वह उसको लाने के लिये अभी अभी वापस खेत पर जाना चाहता था।

उसकी मॉ ने रो कर उससे कहा भी कि इस समय रात को वह बॉसुरी लेने वहॉ न जाये। वह अगले दिन सुबह होते ही उसको नयी बॉसुरी दिला देगी।

पर वह तो अड़ गया कि उसको तो वही बॉसुरी चाहिये क्योंकि वह बॉसुरी उसकी अपनी बनायी हुई थी और वह उस बॉसुरी को किसी भी कीमत पर बदलना नहीं चाहता था।

[26] The Flute – a folktale from Nigeria, Western Africa

उसके पिता ने भी उसको बहुत समझाया और मना किया कि इस समय उसको खेत पर अपनी बॉसुरी लेने नहीं जाना चाहिये पर वह नहीं माना। आखिरकार उसके माता पिता ने उसको जाने तो दिया पर उससे होशियारी से जाने के लिये कहा।

जब वह खेत पर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वहॉ उसे भूत दिखायी दिये क्योंकि यह समय वहॉ भूतों के काम करने का था।

उन्होंने जब वहॉ एक बच्चे को देखा तो वे बहुत गुस्सा हुए। भूतों के नेता ने कहा — "ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहॉ इस समय किसने भेजा है और तू यहॉ क्यों आया है?"

बेचारा बच्चा डर के मारे वहीं की वहीं खड़ा रह गया। बड़ी मुश्किल से उसके मुँह से निकला — "दिन में मेरे माता पिता यहॉ खेत पर काम करने आये थे। उस समय मैं यहॉ अपनी बॉसुरी भूल गया था अभी मैं वही लेने आया हूँ।"

भूतों के नेता ने पूछा कि अगर उसे उसकी बॉसुरी दिखायी जाये तो क्या वह उसे पहचान सकता है?

लड़का खुशी से बोला — "हॉ हॉ, क्यों नहीं। वह मेरी बॉसुरी है। मैं उसे पहचानूँगा क्यों नहीं।"

भूतों के नेता ने खाल के थैले में से एक सोने की बॉसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

लड़का बोला — "नहीं नहीं, यह मेरी बॉसुरी नहीं है।"

भूतों के नेता ने एक बार फिर उस चमड़े के थैले में हाथ डाला और अबकी बार उसने उसमें से एक चॉदी की बॉसुरी निकाली और उसको दिखा कर उस लड़के से पूछा कि क्या वह थी उसकी बॉसुरी?

लड़का उदास हो कर बोला — "नहीं, यह बॉसुरी भी मेरी नहीं है।"

अबकी बार भूतों के नेता ने अपने थैले में से एक बॉस की बॉसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

लड़का उस बॉस की बॉसुरी को देखते ही खुशी से चिल्ला पड़ा — "हॉ, यही है मेरी बॉसुरी।"

भूतों का नेता बोला — "अगर यही है तेरी बॉसुरी तो इसे बजा कर दिखा न।"

लड़के ने भूतों के नेता के हाथ से बॉसुरी ले ली और उसे बजाना शुरू किया।

भूत उस लड़के की बॉसुरी सुन कर बहुत खुश हुए। भूतों का नेता बोला — "बच्चे, हम तेरी बॉसुरी सुन कर बहुत खुश हुए इसलिये हम तेरे माता पिता को एक भेंट देना चाहते हैं।"

ऐसा कह कर उसने दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे दो बरतन लाने के लिये कहा। दोनों भूत तुरन्त ही दो बरतन ले आये। भूतों के नेता ने उस लड़के से एक बरतन लेने के लिये कहा।

बरतन दोनों एक से थे, दोनों बन्द थे पर दोनों में से एक छोटा था और एक बड़ा। लड़के ने उनमें से छोटा वाला बरतन उठा लिया।

भूतों के नेता ने कहा — "खुश रह बच्चे। जब तू घर पहुँच जाये तो अपने माता पिता के सामने ही इस बरतन को तोड़ना।" लड़के ने भूतों के नेता का सिर झुका कर धन्यवाद किया और अपने घर चल पड़ा।

घर पहुँच कर लड़के ने वैसा ही किया जैसा कि भूतों के नेता ने उससे करने के लिये कहा था। उसने अपने माता पिता को बुलाया और सबसे पहले तो उसने अपने माता पिता को खेत पर जो कुछ भी हुआ था वह बताया और फिर उनके सामने ही उसने उस बरतन को तोड़ दिया।

तुरन्त ही उनके घर का ऑगन अच्छी अच्छी चीज़ों से भर गया जैसे सोना, चॉदी, कॉसा, अच्छे अच्छे कपड़े, मखमल, अनेक प्रकार के खाने, गाय, बकरियॉ आदि। लड़के की मॉ ने उस सामान से दो टोकरियॉ भरीं और अपनी सौत को दे आयी।

परन्तु उस आदमी की बड़ी पत्नी यह सब देख कर इतनी जली भुनी कि उसने वह भेंट भी नहीं ली और चिन्ता की वजह से वह रात भर सो भी नहीं पायी।

सुबह उठते ही उसने अपनी सौत से उन सब चीज़ों को पाने का तरीका पूछा। छोटी पत्नी ने जो कुछ भी हुआ था वह सब उसको सच सच बता दिया।

अगले दिन तड़के ही उसने अपने बड़े बेटे को उठाया और उसको अपनी बॉसुरी लाने के लिये कहा। फिर बोली — "आज हम लोग अपने खेत पर जायेंगे।"

"पर मॉ हम लोग कल ही तो खेत पर गये थे।" लड़का बोला।

मॉ ने कहा — "लेकिन हम आज भी जायेंगे।" कह कर वह अपने बेटे के साथ खेत पर चली गयी। जब वे खेतों पर गये तो वहॉ कोई काम तो था नहीं क्योंकि सारा काम तो पहले ही दिन खत्म हो चुका था फिर भी सारा दिन वे लोग वहॉ रहे।

जब शाम हुई तो बड़ी पत्नी ने अपनी टोकरी उठायी और घर चलने के लिये तैयार हुई। तो लड़के ने भी अपनी बॉसुरी उठायी और वह भी अपनी मॉ के साथ घर चलने लगा।

जब वे घर की ओर चलने लगे तभी मॉ ने कहा — "अरे बेवकूफ लड़के, क्या तुझे मालूम नहीं कि बॉसुरी को कैसे भूला जाता है? चल छोड़ अपनी बॉसुरी यहीं और घर चल।"

अब क्योंकि यह बॉसुरी लड़के की अपनी बनायी हुई तो थी नहीं और न उसको बजानी ही आती थी इसलिये यह सुन कर लड़के ने बॉसुरी वहीं पड़ी छोड़ दी और मॉ के साथ घर चल दिया।

जैसे ही वे लोग घर में घुसे कि उसकी मॉ ने अपने बेटे से कहा "जा और खेत पर से अपनी बॉसुरी उठा ला।" लड़का बेचारा यह सुन कर रोने लगा।

वह रात में अकेले खेत पर जाने से डर रहा था इसलिये कि वह वहॉ अकेले नहीं जाना चाहता था क्योंकि उसको मालूम था कि रात को वहॉ पर भूत आते थे और वह उनसे बहुत डरता था।

परन्तु उसकी मॉ ने उसे घर के बाहर धकेलते हुए कहा — "जा और बिना बॉसुरी और बिना बरतन के वापस नहीं आना।"

लड़का बेचारा डरते डरते खेत पर पहुँचा। वहॉ पहले दिन की तरह से भूत आ चुके थे। भूतों के नेता ने कहा — "ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहॉ इस समय किसने भेजा है और तू यहॉ क्यों आया है?"

लड़का डर के मारे रोते रोते बोला — "आज हम यहॉ खेत पर बिना किसी काम के आये थे। मैं दिन में यहॉ अपनी बॉसुरी छोड़ गया था तो मेरी मॉ ने मुझे मेरी बॉसुरी और भेंट वाला बरतन लाने के लिये भेजा है।"

भूतों के नेता ने पहले की तरह से थैले में से एक सोने की बॉसुरी निकाली और उसको उस लड़के को दिखा कर पूछा "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

अब इस लड़के ने तो बॉसुरी अपने हाथ से बनायी नहीं थी जो उसे उससे लगाव होता। वह सोने की बॉसुरी देख कर ललचा गया और बोला — "हॉ, यही है मेरी बॉसुरी।"

भूतों के नेता ने कहा — "अच्छा? यही है तेरी बॉसुरी? तो यह ले अपनी बॉसुरी। पर ज़रा इसे बजा कर तो दिखा।"

उस लड़के को तो बॉसुरी बजानी भी नहीं आती थी सो उसकी बॉसुरी से ऐसे ही कुछ बेमतलब आवाजें निकलने लगीं। वह लड़का बहुत परेशान हुआ पर कुछ कर नहीं सका क्योंकि उसने तो कभी बॉसुरी बजायी ही नहीं थी। थोड़ी ही देर में वह थक कर रुक गया।

सभी भूत खामोश खड़े थे किसी से कुछ कहते नहीं बन पा रहा था। तब भूतों के नेता ने ही दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे बोला — "लाओ वे दोनों बरतन उठा लाओ।"

जैसे ही वे दो भूत दो बरतन उठा कर लाये लड़के ने एक भूत के हाथ से बड़ा वाला बरतन छीन लिया और जाने के लिये तैयार हुआ तो भूतों का नेता बोला — "बेटा, जब तू घर पहुँच जाये तभी अपने माता पिता के सामने ही इस बरतन को तोड़ना।"

लड़का बोला "हॉ मुझे मालूम है।" और बिना धन्यवाद दिये अपने घर की तरफ दौड़ गया।

हॉफता हॉफता वह घर पहुँचा। बरतन बहुत बड़ा था और भारी भी। उसकी मॉ घर के बाहर ही उसका इन्तजार कर रही थी। अपने बेटे को बड़ा सा बरतन लाते देख कर वह बहुत खुश हुई।

लड़का हॉफते हॉफते ही बोला — "उन्होंने कहा है कि इस बरतन को मैं अपने माता पिता के सामने ही तोड़ूँ सो पिता जी को और बुला लो।"

मॉ तुनक कर चिल्लायी — "तुम्हारे पिता को उस बरतन के बारे में क्या मालूम है जो हम उनको बुलायें। इसको तो हम अपने आप ही तोड़ लेंगे।" और लड़के को अन्दर ला कर उसने अपनी झोंपड़ी का दरवाजा बन्द कर लिया।

उसने अपने सभी बच्चों को इकट्ठा किया और अपनी झोंपड़ी में बने सभी छेद और दरारें भी बन्द कर दीं ताकि कोई भी चीज़ उनमें से निकल कर बाहर दूसरी झोंपड़ियों की तरफ न जा सके।

फिर उसने वह बरतन तोड़ दिया। बरतन के टूटते ही उसमें से सब प्रकार की बीमारियॉ जैसे कोढ़, चेचक, तपेदिक आदि निकल पड़ीं और उन्होंने उस स्त्री और उसके बच्चों को वहीं मार दिया।

यह कहानी हमें कई शिक्षा देती है। पहली बात तो हमको लालची नहीं होना चाहिये। क्योंकि पहला वाला बच्चा लालची नहीं था इसी लिये वह दूसरों का आदर पा सका।

दूसरी बात यह कि बिना सोचे समझे दूसरों की नकल करने की आदत अच्छी नहीं होती। दूसरी मॉ ने अपने बच्चे से छोटी पत्नी के बच्चे की नकल करवायी तो क्या फल पाया।

और तीसरे हमें दूसरों के उपकारों का धन्यवाद जरूर देना चाहिये।

6 चिन्ये[27]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में एक लड़की रहती थी जिसका नाम था चिन्ये। उसके माता पिता मर गये थे सो वह अपनी सौतेली मॉ निकेची[28] और सौतेली बहिन अडॉमा के साथ रहती थी।

चिन्ये की सौतेली मॉ और बहिन उससे घर का सारा काम करवाती थीं। उधर अडॉमा एक बहुत आलसी और बिगड़ी हुई लड़की थी और घर में कोई काम नहीं करती थी।

असल में उसको घर में इधर उधर घूमना और दिन में कई बार नहाना बहुत अच्छा लगता था सो वह घर का बहुत सारा पानी खर्च कर देती थी। उन दिनों पानी घरों में पास की नदी से लाया जाता था। और इस तरह से पानी लाना आसान नहीं था।

एक दिन शाम को सारा पानी खत्म हो गया और शाम का खाना बनाने के लिये बिल्कुल भी पानी नहीं था सो निकेची ने चिन्ये को पानी लाने के लिये भेजा। हालॉकि रात बहुत अँधेरी थी।

---

[27] Chinye – a fairy tale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.365cinderellas.com/search/label/Baba%20Yaga
By Obi Onyefulu and E Safarevicz. From their book “From Chinye: a west African folktale. NY: Penguin Books. 1994.

[28] Chinye lived with her stepmother Nkechi.

उसने उससे कहा — "ओ बुरी लड़की, जा ज़रा नदी पर चली जा और जल्दी से थोड़ा सा पानी ले आ।"

हालॉकि चिन्ये कोई बुरी लड़की नहीं थी पर फिर भी वह उस अँधेरी रात में नदी से पानी लाने चली गयी क्योंकि उसके पास और कोई रास्ता ही नहीं था।

जब वह नदी के आधे रास्ते में पहुँची तो एक शक्ल उसके रास्ते में आ कर खड़ी हो गयी और वह डर के मारे चीख पड़ी।

पर तभी एक मीठी सी आवाज ने उससे कहा — "बच्ची तुम कहॉ जा रही हो।" और तभी वह शक्ल उसको एक हिरन[29] में बदलती नजर आयी।

जब चिन्ये ने उसको यह बताया कि वह इतनी रात को बाहर क्यों निकली तो उस शक्ल ने एक लम्बी सी सॉस भरी और उसको जाने दिया।

चिन्ये और आगे चली। जब वह नदी की तरफ तीन चौथाई रास्ता पार कर गयी तो उसके रास्ते में एक और शक्ल दिखायी दी। वह उसको हयीना[30] लगा।

उसने भी उससे बड़ी शान्ति से पूछा — "बेटी तुम इतनी रात गये इस अँधेरी रात में जंगल के इस खतरनाक रास्ते पर अकेली कहॉ जा रही हो?"

---

[29] Translated for the word "Antelope". See its picture above.

[30] Hyena – is a tiger-like animal. See its picture above.

जब चिन्ये ने उसे बताया कि वह उस समय में कहॉ और क्यों जा रही थी तो हयीना बोला — "जाओ बेटी मेरे आशीर्वाद के साथ जाओ। पर सॅभाल कर जाना एक शेर मेरा पीछा कर रहा है। तुम इस पेड़ के पीछे छिप जाओ जब तक वह यहॉ से गुजरता है। उसके जाने के बाद चली जाना।"

सो चिन्ये हयीना के बताये पेड़ के पीछे छिप गयी और तब तक वहॉ खड़ी खड़ी शेर का इन्तजार करती रही जब तक वह वहॉ से निकल कर चला नहीं गया। उसके जाने के बाद वह तुरन्त ही वहॉ से निकल कर नदी की तरफ दौड़ गयी। उसके बाद उसको वहॉ कोई जानवर नहीं मिला।

चिन्ये ने अपना पानी का बरतन पानी से भरा और लौटने के लिये घूमी कि अचानक उसके सामने एक बुढ़िया आ गयी जिसकी कमर उम्र की वजह से झुकी हुई थी। यह उस नदी की आत्मा थी जिससे वह अभी अभी पानी ले कर आ रही थी।

वह बुढ़िया बोली — "भगवान तुम्हारी रक्षा करे बेटी। जब तुम यहॉ से वापस जाओगी तो तुमको जंगल की एक झोंपड़ी से आती ढोल और गाने की आवाज सुनायी देगी तो तुम उस झोंपड़ी में घुस जाना।

वहॉ तुमको उस झोंपड़ी के फर्श पर बहुत सारे खोल[31] बिखरे मिलेंगे। तुम उनमें से सबसे छोटा और चुप रहने वाला खोल उठा लेना। तुम उनमें से बड़े वाले खोल और यह कहने वाले खोल मत उठाना जो तुमसे यह कहें कि "मुझे उठा लो।"

यह कह कर और एक बार फिर से उसको आशीर्वाद दे कर नदी की आत्मा वहॉ से गायब हो गयी। अब जैसा कि नदी की आत्मा ने कहा था वैसा ही हुआ।

जब वह वापस जा रही थी तो उसने जंगल में से एक झोंपड़ी से आती ढोल और गाने की आवाज सुनी। वह उसी झोंपड़ी में चली गयी। वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ तो वाकई बहुत सारे खोल पड़े हुए थे।

उनमें से कुछ की गरदनें सीधी थीं तो कुछ की गरदनें मुड़ी हुई थीं। कुछ चिन्ये के बराबर बड़े थे तो कुछ इतने छोटे थे कि वे उसकी हथेली में आ सकते थे। उसने वहॉ से सबसे छोटा खोल उठाया और उसको ले कर घर चल दी।

नदी की बुढ़िया उसके सामने फिर प्रगट हुई और बोली — "बेटी तुमने यह खोल बहुत ही अक्लमन्दी से चुना है अब जो भी

[31] Translated for the word "Gourd". See its picture above. Gourd is dry oluter cover of a fruit which can be used to keep dry or wet things.

यह तुम्हारी किस्मत में ले कर आये उसको भी तुम अक्लमन्दी से ही इस्तेमाल करना।" और इतना कह कर वह फिर गायब हो गयी।

पर जब चिन्ये घर पहुँची तो उसकी सौतेली बहिन ने उसका वह छोटा सा खोल उसके हाथ से छीन लिया और खाना बनाने के लिये उसको रसोईघर में धकेल दिया।

सौतेली माँ ने उसको देर से आने पर बहुत मारा और चिल्लायी — "हम शाम का खाना बनाने के लिये तेरा कबसे इन्तजार कर रहे हैं और तू अब आयी है।"

सो चिन्ये को घर पहुँच कर शाम का खाना बनाना पड़ा और फिर उन दोनों को खिलाना पड़ा। इस बीच उसको अपने लाये हुए खोल को खोलने का मौका ही नहीं मिला।

सुबह सवेरे वह अपने छोटे से काशीफल के खोल को ले कर एक खाली झोंपड़ी में चली गयी। उसने पास में से एक पत्थर उठाया और उस खोल पर मार कर उसको तोड़ दिया।

खोल के टूटते ही वह झोंपड़ी एक खजानेघर में बदल गयी। बहुत सुन्दर सुन्दर सोने के और हाथी दाँत गहने वहाँ बिखर गये और धूप में चमक उठे।

चिन्ये बहुत ही दयालु थी सो वह यह अच्छी खबर अपनी सौतेली माँ को देने के लिये दौड़ पड़ी। यह सब देख कर तो निकेची की लालची चमकीली आँखें खुली की खुली रह गयीं।

उसी शाम उसने अपनी आलसी बेटी अडॉमा को नदी की आत्मा को ढूँढने के लिये नदी पर भेज दिया। वह उसको वहॉ मिल गयी। उसने उस आलसी लड़की को भी वही आशीर्वाद और वही सलाह दी जो उसने चिन्ये को दी थी। पर क्या अडॉमा ने उसकी बात सुनी? नहीं।

जब वह जंगल की उस झोंपड़ी में आयी जहॉ से उसको खोल उठाने थे तो उसने जो वह ले जा सकती थी वह सबसे बड़ा खोल उठाया। उस बुढ़िया की बेवकूफी भरी सलाह पर हॅसती हॅसती वह उस खोल को किसी तरह से घसीटती घसीटती अपने घर ले गयी।

जब वह घर आयी तो निकेची बहुत खुश थी कि उसकी बेटी कितनी अक्लमन्द थी कि वह कितना बड़ा खोल लायी थी। अब तो उसमें चिन्ये के खोल से भी ज़्यादा सामान निकलेगा।

यही सोचते हुए निकेची ने अपने अपनी रसोई के सबसे बड़े चाकू से उस खोल के दो टुकड़े कर दिये। पर जब वह खोल टूटा तो उसमें से क्या निकला?

बिजली की चमक और कड़क। एक बवंडर उठने लगा। उसने उनके घर के सारे बरतन कपड़े कौड़ियॉ उठा कर बाहर अँधेरे में फेंक दिये।

अडॉमा और निकेची अपना सामान लाने के लिये अकेली ही उसके पीछे दौड़ीं क्योंकि घमंडी होने की वजह से वे किसी से सहायता तो मॉग नहीं सकती थीं। पर अकेली होने की वजह से

उनको उनमें से कुछ भी नहीं मिल सका। बवंडर बहुत तेज़ था और वह उन सबको बहुत जल्दी ही दूर ले गया।

पर चिन्ये को नदी की आत्मा के शब्द याद थे।

उसने अपने जवाहरात और गहने आदि अपने गॉव की भलाई के लिये लगा दिये। उसके बाद चिन्ये और उसका गॉव खुशी खुशी रहे।

7 अनन्सी और खाने का बरतन[32]

जैसा कि समय समय पर होता रहता है एक बार की बात है कि बहुत दिनों तक बारिश नहीं हुई। आसमान में बादल आते पर जल्दी ही गायब हो जाते और दिन ब दिन बहुत ज़ोर की धूप निकलती रहती।

इससे पौधों के छोटे छोटे अंकुरों को बहुत नुकसान पहुँचता और जमीन भी जलती रहती। जमीन जल जल कर या तो बहुत सख्त हो जाती या फिर गरम रेत बन जाती और या फिर और सख्त चट्टान जैसी बन जाती।

बहुत जल्दी ही लोगों के पास जो खाना था वह खत्म होने लगा। बहुत सारे जानवर मर गये। जो बचे थे वे पानी की तलाश में इधर उधर चले गये।

पानी न होने की वजह से सारे खेत बरबाद हो गये। शिकार से भी कुछ हासिल नहीं होता था क्योंकि बहुत सारे जानवर खाने पीने की तलाश में वहाँ से चले गये थे। बाकी जो बचे थे वे खाने की कमी से इतने दुबले पतले हो गये थे कि उनके ऊपर मॉस ही बहुत कम था।

---

[32] Anansi and the Feeding Pot – a folktale from Ghana, Africa.
This story taken from the book "The Pot of Wisdom: Ananse stories". By Adwoa Badoe.
Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p. Anansi is a very famous character of West African stories.
Its many stories are available from : hindifolktales@gmail.com - "Anansi Makade Ke Karname-1"

अनन्सी के गॉव में हर आदमी भूख से परेशान था। हर आदमी कमजोर था। बहुत सारे लोग बीमार थे। वे लोग रोज सरदार के ऑगन में बड़े लोगों को सुनने के लिये इकट्ठा होते।

वे वहॉ इस बारे में बात करने के लिये इकट्ठा होते थे कि वे इस हालत से कैसे निकल सकते थे। कैसे सबकी जान बचा सकते थे। पर उनको जल्दी ही पता चल गया कि वे कुछ भी नहीं कर सकते थे सो सरदार ने अपनी मीटिगें बन्द कर दीं।

उसी दिन वह दिन था जब अनन्सी का बेटा टिकूमा[33] गायब हो गया। अनन्सी ने अपने सिर पर हाथ मारा और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा — "ओह मेरे बेटे। तुम तो किसी भूखे चीते का शिकार बन गये होगे। क्या मेरी किस्मत में यही लिखा है कि मैं अपने बच्चों को इस तरह मरते देखूँ?"

तीन दिन गुजर गये। जब अनन्सी का बेटा वापस नहीं आया तो अनन्सी ने टिकूमा के दफ़न की रस्म करने की सोची।

उसने दफन की रस्म शुरू की। पर वे लोग जब दफन की रस्म कर शुरू ही कर रहे थे और सब लोग वहॉ उस रस्म के लिये इकट्ठा थे तो एक पीली चिड़िया उन सबके सिरों के ऊपर से उड़ी और उसने एक खास गीत गाया।

[33] Ntikuma – name of Anansi's son

"तुम लोग अनन्सी के बेटे टिकूमा के लिये दुख मत करो। उसने मुझे तुमको एक ऐसी खबर ले कर भेजा है जिसको सुन कर तुम लोग नाचने लगोगे, गाने लगोगे और खुशियॉ मनाने लगोगे। इसलिये तुम उसके लिये कोई अफसोस न करो।"

यह सुन कर अनन्सी सोचने लगा कि वह क्या करे तभी भीड़ में से कोई चिल्लाया — "यह आ गया टिकूमा। यह आ गया टिकूमा।"

और वाकई टिकूमा वहॉ था, वह ज़िन्दा था और ठीक था। उसके हाथ में एक छोटा सा बरतन था और वह उसको लिये हुए खुशी खुशी चला आ रहा था। सब उसको ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हो गये।

पर जब उससे यह पूछा गया कि वह इतने दिनों तक कहॉ रहा और उसने क्या किया तो उसने अपने हाथ ऊपर उठा कर वहॉ सबको चुप रहने के लिये कहा।

फिर उसने वह छोटा बरतन जमीन पर रख दिया और ज़ोर से बोला — "ओ छोटे बरतन, ओ छोटे बरतन। इन सबके लिये एक बढ़िया दावत का इन्तजाम करो जिसका खाना खूब गरम हो।"

अचानक चारों तरफ मेजें लग गयीं और उन मेजों पर प्लेटें और कटोरे जिनमें भाप निकलता हुआ गरम गरम खाना रखा था उन मेजों पर सज गये।

नयी पाम की शराब के बहुत सारे कैलेबाश[34] आ गये। सारे लोगों ने जब यह सब देखा तो वे तो इतने खुश हुए कि वे बिना किसी हिचकिचाहट के उन मेजों पर खाना खाने बैठ गये।

सबने खूब पेट भर कर खाना खाया फिर भी उनकी प्लेटों में कुछ खाना बच रहा जो वहाँ पास में रहने वाली चिड़ियों और दूसरे जानवरों को दे दिया गया।

अब यह कहने की तो जरूरत ही नहीं कि टिकूमा अपने गाँव का हीरो बन गया था। उसका वह छोटा सा बरतन अब गाँव भर के लिये रोज खाना बनाता और रोज लोग उन अकाल के दिनों में पेट भर कर खाना खाते।

पर कुछ समय के बाद अनन्सी कुछ नाखुश हो गया। वह अपने ही बेटे टिकूमा के इस मशहूर होने से और गाँव में उसकी इज़्ज़त से जलने लगा।

टिकूमा को अब बड़े लोगों की मीटिंगों में बुलाया जाता और हर आदमी कहता कि वह बहुत ही अक्लमन्द था।

एक शाम अनन्सी ने टिकूमा को बुलाया और उससे कहा — "मुझे यह बताओ टिकूमा कि लोग यह कह रहे हैं कि तुमको कोई

[34] Calabash full of Palm wine – Calabash is the dried outer skin of a pumpkin like vegetable. It may be used to keep dry and wet things and looks like clay pitcher of India. It comes in many sizes and shapes. See the picture of one of its kinds above.

अजीब आदमी उठा कर ले गया था। क्या यह सच है? मुझे सच सच बताओ कि सच में तुम्हारे साथ क्या हुआ था।"

टिकूमा के मुँह से कोई शब्द नहीं निकला पर अनन्सी ने उसको यह बताने पर बहुत जिद की कि उसके साथ क्या हुआ था तो टिकूमा को बताना ही पड़ा — "मैं आपको बताता हूँ पिता जी अगर आप इस बात को राज़ ही रखें तो।"

अनन्सी बोला — "हाँ, मैं उसको राज़ ही रखूँग।"

टिकूमा बोला — "उस दिन सुबह को मुझे बहुत ज़ोर से भूख लगी थी कि तभी मैंने एक छिपकली[35] को देखा। सो मैंने सोचा कि कौन जानता है कि यह छिपकली मेरे लिये एक बहुत अच्छा खाना साबित हो।"

अनन्सी थूकते हुए बोला — "हुँह।"

टिकूमा आगे बोला — "सो मैंने अपनी गुलेल[36] निकाली और उस छिपकली का जंगल तक पीछा किया। पर जब भी मैंने उसको पकड़ने की कोशिश की वह छिप जाता और मुझे उसके पीछे और आगे तक जाना पड़ता।

[35] Translated for the word "Lizard"

[36] Translated for the word "Slingshot". See its picture above.

जल्दी ही मुझे पता चल गया कि मैं तो उस जंगल में खो गया था। मैं चिल्लाया और तब तक चिल्लाता रहा जब तक मैं अपने शरीर में काफी कमजोरी महसूस नहीं करने लगा।

जब मैं काफी थक गया तो एक बहुत ऊँचे पेड़ के नीचे लेट गया। मुझे लगने लगा कि मैं तो बस अब जल्दी ही मर जाऊँगा। तभी मुझे तीन पाम की गिरी[37] जमीन पर पड़ी दिखायी दीं।

मैंने पाम की उन तीनों गिरियों को उठा लिया और साथ में उनको तोड़ने के लिये एक पत्थर भी उठा लिया ताकि मैं उनके अन्दर की गिरी खा सकूँ।

जब मैंने पहली गिरी तोड़ी तो वह वहीं पास के एक गड्ढे की तरफ लुढ़क गयी और उसमें जा कर गायब हो गयी।

यही हाल मेरी दूसरी गिरी का भी हुआ। अब मेरे पास केवल एक ही गिरी बची थी। मेरे मुँह से निकला — "हे भगवान, मेरी इस गिरी को उस गड्ढे में मत लुढ़का देना।"

मैंने फिर पत्थर उठाया और उसको तोड़ दिया। उसका छिलका तो उड़ गया पर उसका वह छोटा सा फल भी उसी गड्ढे की तरफ लुढ़क गया।

[37] Palm nuts are the nuts found in palm fruits grown on Palm trees. See their picture above. Nut is inside them.

मैं तुरन्त ही उस गड्ढे में कूद गया और उस गिरी का पीछा किया। मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे उस गड्ढे की तली तो कभी मिलेगी ही नहीं। पर ऐसा हुआ नहीं। मुझे उसकी तली मिल गयी।

मैं नीचे एक अँधेरी गुफा में जा गिरा जिसमें एक बुढ़िया बैठी हुई थी। मैंने डर कर उस बुढ़िया को नमस्ते की। हालाँकि देखने में तो वह कुछ अजीब सी लग रही थी पर वह थी बहुत दयालु। मैंने उसकी वहाँ दो दिनों तक सेवा की।

फिर उसने मुझे अपने बागीचे में भेजा और कहा — "तुमको वहाँ बहुत सारे याम[38] मिलेंगे। उनमें से कुछ तुमसे यह कहेंगे कि "हमको उखाड़ लो।" उनको तुम ऐसे ही छोड़ देना।

पर इनमें से कुछ ऐसे भी होंगे जो तुमसे यह कहेंगे "नहीं तुम हमें मत उखाड़ो।" तुम उनको उखाड़ लेना और उनको मेरे पास ले आओ।"

सो मैं उसके बागीचे में गया तो वहाँ सबसे ज़्यादा तेज़ आवाजें पोना यामों की ही आयीं कि "हमें उखाड़ लो। हमें उखाड़ लो।" पर उनको मैंने छोड़ दिया क्योंकि उस बुढ़िया ने उनको उखाड़ने के लिये मना किया था।

[38] Yam is a tuber root vegetable commonly grown and used in tropical regions. One yam may weigh up to 10 pounds. It is staple diet in Western African countries. See its picture above.

मैंने उन पतले वाले पानी के यामों को उखाड़ लिया जो कह रहे थे "हमको छोड़ दो। हमको मत उखाड़ो।"

अनन्सी ने अपने मन में कहा — "तुम बेवकूफ हो। तुमने पानी वाले याम क्यों उखाड़े जबकि तुम पोना याम उखाड़ सकते थे?"

टिकूमा आगे बोला — "जब मैं वे याम उस बुढ़िया के पास ले कर गया तो उस बुढ़िया ने कहा — "अब तुम इनको छील लो। छील कर इनके अन्दर का गूदा फेंक दो और इनका छिलका उबाल लो।"

मुझे यह सुन कर आश्चर्य तो जरूर हुआ पर मैंने वैसा ही किया जैसा कि उसने मुझसे करने के लिये कहा था। मैंने वे छिलके पानी में डाल कर उबलने के लिये रख दिये। जल्दी ही पानी उबलने लगा।

जब वे छिलके उस पानी में उबल गये तो मैंने उनका पानी फेंक दिया तो वहाँ तो बहुत ही स्वादिष्ट याम थे जिनको हमने पलवा चटनी[39] के साथ खाया।

खाने के बाद वह बुढ़िया बोली — "बेटा, तुम मेरे बहुत ही वफादार रहे हो। जाओ बराबर वाले कमरे में जाओ और वहाँ से कोई एक बरतन उठा लाओ। उस कमरे में बहुत सारे बरतन रखे हैं।

[39] Palava Sauce – is a very common stew or soup eaten in West African countries – Nigeria, Ghana, Liberia and Sierra Leone etc. It is made from meat or fish and greens (spinach etc) and is eaten with practically every food, such as boiled rice, potatoes, Gari, Fufu or Yams.

उनमें से कई बरतन तुमसे कहेंगे कि "हमें उठा लो। हमें उठा लो।" पर तुम उनको मत उठाना। उनमें से जो बरतन यह कहे कि "मुझे मत उठाओ।" तुम वही बरतन उठा लेना और अपने रास्ते चले जाना। फिर मेरी पीली चिड़िया तुमको बता देगी कि फिर तुमको क्या करना है।"

अनन्सी और आगे सुनने के लिये उत्सुक था सो उसके मुँह से निकला — "अच्छा? फिर।"

सो टिकूमा ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी — "बस ठीक यही हुआ मेरे साथ। मैं उस पास वाले कमरे में गया तो वहाँ तो सौ या फिर हजारों बरतन रखे हुए थे।

उनमें कुछ बरतन बहुत बड़े थे तो कुछ बहुत छोटे थे, तो कुछ सोने के थे तो कुछ चाँदी के थे, तो कुछ पीतल के तो कुछ मिट्टी के।

पर उनमें से जो बरतन मुझे अच्छे लग रहे थे करीब करीब उन सबने यही कहा कि "हमको उठा लो।" पर उनको तो मुझे उठाना नहीं था सो मैंने उनको वहीं छोड़ दिया।

केवल एक बरतन बोला "मुझे छोड़ दो।" और वह था यह छोटा बरतन। बस मैंने उसी बरतन को उठा लिया, उस बुढ़िया को धन्यवाद दिया और वहाँ से चल दिया।

उसकी पीली चिड़िया मेरे आगे आगे उड़ रही थी।"

अनन्सी बोला — "तुमको कोई बड़ा बरतन चुनना चाहिये था। वह शायद इससे ज़्यादा खाना बनाता।"

टिकूमा बोला — "कौन जानता है। अच्छा तो यही था कि मैं उन बरतनों की मालकिन की बात मानता।"

अनन्सी बोला — "हुँह। पर इस बात पर तुम मेरा विश्वास करो कि तुमको वहाँ से सबसे बड़ा बरतन ही चुनना चाहिये था।"

अनन्सी उस रात सो नहीं सका। वह सारी रात केवल उन बरतनों के बारे में ही सोचता रहा। उसने सोचा कि कल वह भी वहाँ जायेगा और वह इससे ज़्यादा अच्छा बरतन ले कर आयेगा। कल... कल... कल...।

अगले दिन हालाँकि सारे गाँव का पेट बहुत अच्छे से भरा हुआ था फिर भी अनन्सी ने दिखावा किया कि वह एक छिपकली का पीछा कर रहा है और वह जंगल की तरफ दौड़ गया जैसा कि टिकूमा ने उसको बताया था।

वहाँ उसको एक ऊँचा सा पेड़ मिल गया तो वह उसके नीचे जा कर लेट गया। लो वहाँ तो तीन गिरियाँ और एक पत्थर पहले से ही पड़ा हुआ था।

उसने वे तीनों गिरियाँ और वह पत्थर तुरन्त ही उठा लिया। उसने पहली गिरी तोड़ी तो उसमें से एक गिरी निकली पर वह अपने आप गड्ढे की तरफ नहीं लुढ़की।

सो चारों तरफ को देखते हुए उसने वह गिरी पास के एक गड्ढे की तरफ लुढ़का दी। फिर उसने दूसरी गिरी तोड़ी तो वह भी वहीं जमीन पर ही पड़ी रही वह भी नहीं लुढ़की। अनन्सी ने उसको भी उसी गड्ढे की तरफ लुढ़का दिया।

फिर उसने तीसरी गिरी तोड़ी। जब वह भी अपने आप गड्ढे में नहीं गयी तो उसने उसको भी गड्ढे की तरफ लुढ़का दिया और उसके पीछे पीछे उस गड्ढे में कूद गया। इस तरह वह भी उसी बुढ़िया के पास जा पहुँचा।

पर वह बुढ़िया उससे कुछ नहीं बोली तो अनन्सी खुद ही बोला — "दादी माँ, क्या मैं आपके लिये याम पका दूँ?"

बुढ़िया ने जवाब दिया — "अगर तुम्हारी मरजी हो तो। जब तुम बागीचे में जाओगे तो उन यामों को छोड़ देना जो तुमसे यह कहें कि "हमको उखाड़ लो।" बल्कि केवल उन्हीं यामों को उखाड़ना जो यह कहें कि "हमें छोड़ दो, हमको मत उखाड़ो।"

अनन्सी बोला — "ठीक है दादी माँ।"

जब अनन्सी याम के बागीचे में पहुँचा तो वहाँ पोना यामों ने चिल्लाना शुरू किया "हमें उखाड़ लो, हमें उखाड़ लो।" और पतले पानी वाले यामों ने चिल्लाना शुरू किया "हमें छोड़ दो हमें छोड़ दो, हमको मत उखाड़ो हमको मत उखाड़ो।"

अनन्सी ने कुछ देर सोचा कि यह तो कोई बच्चा भी जानता था कि बड़े बड़े पोना याम बहुत मीठे और स्वादिष्ट होते हैं सो उसने कुछ पोना याम तोड़े और उनको उस बुढ़िया के पास ले आया।

वह बुढ़िया अपने एक स्टूल पर बैठी थी। उसने अनन्सी की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। बस वह बोली — "तुम इनको छील लो। छील कर इनका गूदा फेंक देना और इनके छिलकों को पका लो।"

अनन्सी ने सोचा — "यह बुढ़िया तो आधी पागल लगती है। भला कोई याम के छिलके भी उबालता है।" सो उसने छिलके तो फेंक दिये और उसका गूदा उबलने रख दिया।

वे याम काफी देर तक उबलते रहे। काफी देर तक उबालने के बाद जब अनन्सी ने उनका पानी फेंका तो बरतन में तो केवल छोटे छोटे पत्थर पड़े हुए थे और कुछ भी नहीं था।

आखिर भूखा अनन्सी बोला — "दादी मॉ, क्या आप मुझे ले जाने के लिये एक बरतन नहीं देंगी?"

वह बुढ़िया बोली — "हॉ हॉ बेटे क्यों नहीं। तुम दूसरे कमरे में जाओ वहॉ बहुत सारे बरतन रखे है। उनमें से जो बरतन तुमसे यह कहे कि "मुझे उठा लो" तुम उस बरतन को मत उठाना और जो यह कहे कि "मुझे छोड़ दो, मुझे मत उठाओ" उसको उठा लेना।"

अनन्सी अपनी भूख तो भूल गया क्योंकि यही तो वह वजह थी जिसकी वजह से उसने घने जंगल तक की और फिर वहाँ से यहाँ तक की यात्रा की थी।

सो वह जल्दी जल्दी उस कमरे में गया जहाँ बहुत तरीके के बरतन रखे हुए थे – छोटे बड़े, सोने के चाँदी के, पीतल के ताँबे के, टैराकोटा के मिट्टी के, चमकीले, पके हुए, रंगीले आदि आदि।

वे सब अनन्सी से बोले।

एक बोला — "मैं तुम्हारे लिये बहुत ही बढ़िया खाना बनाऊँगा।"

दूसरा बोला — "मैं तुम्हारे लिये बहुत ही बढ़िया माँस भूनूँगा।"

तीसरा बोला — "अगर तुम मुझे उठा लोगे तो तुम कभी भूखे नहीं रहोगे। सो तुम मुझे उठा लो।

तभी एक छोटा सा बरतन बोला — "मेहरबानी कर के मुझे मत उठाओ मुझे छोड़ दो।" यह बरतन टिकूमा के बरतन से भी बहुत छोटा था।

अनन्सी ने एक बहुत बड़े सोने के बरतन की तरफ हाथ बढ़ाते हुए और उस छोटे से बरतन की तरफ देखते हुए सोचा "मैं तो तुमको वैसे भी नहीं उठाने वाला था।"

उसने सोचा कि उस बड़े सोने के बरतन से वह ज़्यादा लोगों को खाना खिला पायेगा और फिर वह सोने का होने की वजह से पैसा भी लायेगा।

अनन्सी ने कमरे का दरवाजा बन्द किया, उस बुढ़िया को धन्यवाद दिया और बोला — "दादी माँ, अगर आप मुझे इजाज़त दें तो अब मैं चलता हूँ।"

बुढ़िया ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और अनन्सी पीली चिड़िया की सहायता से अपना बाहर जाने का रास्ता ढूँढ कर वहाँ से बाहर निकल आया।

अनन्सी बोला — "ओ पीली चिड़िया, तुम मेरे लोगों के पास उड़ कर जाओ और उनको खुशियाँ मनाने को कहो क्योंकि मैं जीत कर घर वापस लौट रहा हूँ।

मैं नीचे की दुनियाँ में हो कर आ रहा हूँ और मैं बहुत अमीर भी हो गया हूँ। अब उनको मेरी इज़्ज़त करने के लिये इकट्ठा होना ही चाहिये।"

चिड़िया ने वैसा ही किया और गाँव के लोग अनन्सी को इज़्ज़त देने के लिये गाँव के मैदान में इकट्ठा हो गये।

ढोल बजाने वालों ने ढोल बजाने शुरू कर दिये। गवैयों ने गाना शुरू कर दिया। नाचने वालों ने पैर पटक पटक कर नाचना शुरू कर दिया और वे तब तक नाचते रहे जब तक कि अनन्सी वहाँ नहीं आ गया।

आते ही वह बोला — "भाइयो देखो, यह एक सोने का बरतन है। यह अब ऐसा खाना पकायेगा जैसा कि तुम लोगों ने पहले कभी नहीं देखा होगा। ओ सोने के बरतन, अब मैं तुमको हुक्म देता हूँ कि इन सबके लिये एक दावत का इन्तजाम करो।"

उस बड़े बरतन में बहुत ज़ोर की गड़गड़ाने की आवाज हुई और उस बरतन में से बहुत सारे कीड़े, मकोड़े, मकड़ियाँ, छिपकलियाँ, साँप आदि निकल पड़े। रेंगने वाले जानवरों की प्लेटों पर प्लेटें सज गयीं।

पीली चिड़िया जो अभी भी ऊपर आसमान में थी ज़ोर से हँस पड़ी। उसकी आवाज बिल्कुल उस बुढ़िया जैसी ही थी।

वह बोली — "तुम अपना लालच खाओ अनन्सी। तुम अपनी जलन खाओ। तुम तो मुझसे बारिश माँग सकते थे या फिर शिकार के लिये जानवर माँग सकते थे पर तुमने यह सब कुछ नहीं माँगा। बल्कि तुमने तो मेरा कहा भी नहीं माना। अब तुम मेरा कहा न मानने का फल खाओ।"

वहाँ इकट्ठा हुए लोगों ने अनन्सी को उनकी बेइज़्ज़ती करने के लिये सजा देखने के लिये ढूँढा पर अनन्सी तो अपनी शर्म छिपाने के लिये छत के कोने में बने अपने जाले में जा कर बैठ गया था।

8 जादुई खीरे[40]

नकल की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के ज़िम्बाब्वे देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार ज़िम्बाब्वे देश के एक गॉव में एक नौजवान रहता था। उसका नाम वॉगे[41] था। हालॉकि उस गॉव में बहुत सारी लड़कियॉ थीं पर फिर भी वह अभी तक कुँआरा ही था क्योंकि उन लड़कियों का कहना था कि वह बहुत ही पतला दुबला और बदसूरत था।

उसकी उम्र के दूसरे नौजवानों की शादियॉ हो चुकी थीं और वहॉ के रीति रिवाजों के अनुसार किसी किसी के तो एक से ज़्यादा पत्नियॉ भी थीं।

इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि वॉगे यह सब देख देख कर और सोच सोच कर ही दिन पर दिन दुबला हुआ जा रहा था। वह देखने में तो सुन्दर नहीं था परन्तु वह दयालु बहुत था।

एक दिन उस गॉव के लोगों ने कुश्ती का प्रोग्राम रखा। सुबह सवेरे ही गॉव के सारे लोग मैदान में इकट्ठा हो गये। वॉगे भी उनके साथ था। दोपहर तक उन सबमें खूब कुश्ती हुई। दोपहर को जब

[40] Magical Cucumbers – a folktale of Zimbabwe, Southern Africa.
[41] Wange – name of the man who was not married

काफी गरम हो गया सो सभी लोग कुश्ती रोक कर पेड़ों की छाया में लेट गये।

एक आदमी ने ढोल बजाना शुरू किया तो उनकी पत्नियों को पता चल गया कि उनके पतियों के दोपहर के खाने का समय हो गया है सो वे सब अपने अपने पतियों के लिये दोपहर का खाना ले कर कुश्ती के मैदान को चलीं।

सभी ने अपनी अपनी पत्नियों के हाथ का स्वाददार खाना पेट भर कर खाया परन्तु वॉग की तो कोई पत्नी ही नहीं थी इसलिये न तो उसके लिये कोई खाना है ले कर आया और न ही वहॉ उसको किसी ने खाना खाने के लिये पूछा।

वॉगे बेचारा भूख से परेशान था। उसने सोचा — "काश, मेरी भी कोई पत्नी होती तो वह भी मेरे लिये खाना लाती। अब तो मुझे अपने आप ही अपना खाना ढूँढना पड़ेगा। चलूँ, पास की नदी से ही कोई मछली पकड़ता हूँ।"

ऐसा सोच कर वह पास की नदी की तरफ चल दिया।

उसने अपना मछली पकड़ने वाला कॉटा नदी में फेंका। कॉटा खींचने पर भारी लगा तो उसने सोचा कि "लगता है आज कोई बड़ी मछली फॅसी है क्योंकि मेरा कॉटा खूब भारी हो गया है। आज तो मजा आ गया।"

यह सोच कर उसने जैसे ही वह कॉटा ज़ोर लगा कर ऊपर खींचा तो उस कॉटे की रस्सी टूट गयी और वह कॉटा नदी में डूब गया।

वह दुखी हो कर बोला — "अरे, यह तो रस्सी भी टूट गयी, मेरा कॉटा भी गया और मैं मछली भी नहीं पकड़ सका। मैं इस बड़ी मछली को किसी भी हाल में अपने हाथ से जाने नहीं दूँगा।" और वह तुरन्त ही नदी में कूद गया।

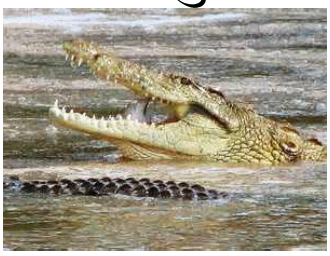

पर चारों ओर देखने पर भी उसको नदी में मछली तो कोई दिखायी नहीं दी, हॉ, एक बहुत बड़ा मगर जरूर दिखायी दे गया।

वॉगे ने उससे पूछा — "क्या तुमने मेरा कॉटा चुराया है?"

मगर ने जवाब दिया — "नहीं, इन सब खेलों के लिये तो मैं अब काफी बूढ़ा हो चुका हूँ लेकिन मैंने तुम्हारा कॉटा चुराने वाले को उस रास्ते पर जाते हुए जरूर देखा है। अगर तुम जल्दी से उधर चले जाओ तो शायद उसे पकड़ पाओ।"

यह कह कर उसने पानी में जाते एक रास्ते की तरफ इशारा कर दिया।

जिस तरफ मगर ने इशारा किया था वॉगे ने उस तरफ देखा तो उसे पानी में जाता एक पथरीला रास्ता दिखायी दिया जिसके दोनों तरफ घास लगी हुई थी। उसने मगर को धन्यवाद दिया और उस रास्ते पर चल दिया।

सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह रास्ता पानी के अन्दर था और उसको पानी के अन्दर सॉस लेने में कोई मुश्किल नहीं हो रही थी।

वह उस रास्ते पर ऐसे बढ़ता चला जा रहा था जैसे धरती पर चल रहा हो। रास्ते में उसने सुनहरी रुपहली मछलियॉ देखीं, पानी के सॉप देखे और हरे केकड़े भी देखे।

चलते चलते अचानक ही वह काले सफेद पत्थरों से बने एक घर के सामने जा पहुँचा। वहॉ पहुँच कर उसने आवाज लगायी — "नमस्ते, अन्दर कोई है?"

मकान के अन्दर से आवाज आयी "नमस्ते" और कुछ ही पल में झुकी हुई कमर वाली एक बुढ़िया बाहर आयी।

वॉगे ने बुढ़िया से पूछा — "यहॉ किसी ने मेरा कॉटा चुरा लिया है क्या आप बता सकती हैं कि मेरा कॉटा किसने चुराया है?"

बुढ़िया ने पूछा — "पर तुम यहॉ इस पानी के राज्य में क्या कर रहे हो, ओ आदमी के बच्चे?"

वॉगे बोला — "मैं नदी पर मछलियॉ पकड़ रहा था कि मेरा कॉटा खो गया। मैं उसे ढूँढते ढूँढते यहॉ तक आ गया।"

बुढ़िया बोली — "क्या? तुम एक छोटे से कॉटे के लिये इतनी तकलीफ उठा रहे हो? बड़े गरीब लगते हो।"

वॉगे बोला — "जी हॉ यही मेरे खाने पीने का सहारा है इसलिये मैं इसे खोना नहीं चाहता।"

बुढ़िया के मुँह से निकला "ओह" और पास से उसने एक स्पंज तोड़ लिया और वॉगे से कहा — "यह स्पंज लो और ज़रा मेरी पीठ तो साफ कर दो।"

हालॉकि वॉगे इस समय बुढ़िया की पीठ साफ करने के बिल्कुल भी मूड में नहीं था परन्तु क्योंकि स्वभाव से ही वह बहुत दयालु था इसलिये वह उस स्पंज से बुढ़िया की पीठ साफ करने लगा।

थोड़ी देर बाद वह बुढ़िया से बोला — "यह लीजिये, आपकी पीठ साफ हो गयी। अब यह चॉद की तरह चमक रही है।"

बुढ़िया ने कहा — "नहीं, अभी नहीं, थोड़ा और साफ करो।"

तो वॉगे ने फिर से उसकी पीठ साफ करनी शुरू कर दी। थोड़ी देर बाद वह फिर बोला — "यह लीजिये, अब शायद आपकी पीठ साफ हो गयी है क्योंकि अब यह सूरज की तरह चमक रही है।"

बुढ़िया ने कहा — "धन्यवाद बेटा, मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। अब तुम मुझसे जो चाहे मॉग लो। बोलो तुम्हें क्या चाहिये?"

वॉगे अपना कॉटा खोने का दुख तो भूल गया और खुशी से भर कर बोला — "मुझे एक सुन्दर सी पत्नी चाहिये। क्या आप मुझे वह दे सकेंगी?"

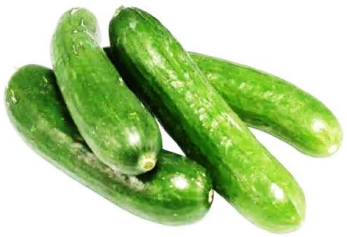

बुढ़िया बोली — "ज़रूर ज़रूर, क्यों नहीं।" कह कर वह घर के अन्दर गयी और चार सुन्दर चिकने खीरे ले आयी।

उन खीरों को वॉगे को देते हुए वह बोली — "लो ये खीरे लो और घर वापस चले जाओ। जब तुम नदी के किनारे पहुँचोगे तब इनको तोड़ना। हर खीरे में से एक एक सुन्दर लड़की निकलेगी।

लेकिन याद रखना कि इन खीरों को नदी के किनारे ही तोड़ना, उससे पहले नहीं, क्योंकि ये लड़कियॉ तुरन्त ही पीने के लिये पानी मॉगेंगी और अगर तुमने इनको तुरन्त ही पानी न दिया तो ये गायब हो जायेंगी और फिर कभी नहीं आयेंगी।"

वॉगे को हालॉकि बुढ़िया की इन बातों पर ज़रा भी विश्वास नहीं हुआ पर फिर भी सिर झुका कर उसने "अच्छा जी" कहा और वे खीरे उससे ले कर अपनी जेब में रख लिये।

फिर बोला — "धन्यवाद, मेरे ऊपर यह आपकी बड़ी मेहरबानी है कि आपने मुझे इतनी सुन्दर भेंट दी। जैसा आपने कहा है मैं वैसा ही करूँगा।"

ऐसा कह कर वह वहॉ से अपने घर की तरफ चल दिया। रास्ते में उसने सोचा — "अब मैं कभी अपना कॉटा वापस नहीं पा सकूँगा इसलिये जब मैं धरती पर पहुँच जाऊँगा तब इन खीरों को खा लूँगा।"

धरती पर पहुँच कर उसने देखा कि वह बूढ़ा मगर अभी भी वहीं लेटा हुआ है। वॉगे ने उसको नमस्ते की और ऊपर चल दिया।

ऊपर अभी भी बहुत गरम था इसलिये वह नदी से कुछ दूर पर लगे एक पेड़ की छाया में बैठ गया। कुछ देर बाद उसने अपनी जेब से चारों खीरे निकाले और उनको अपने हाथों में उलटने पलटने लगा। वे उसे बहुत ही रसीले और ताजे दिखायी दे रहे थे।

उसे बहुत तेज़ भूख लगी थी सो वह उन खीरों को खाना चाहता था। उसने खीरा खाने के लिये हाथ बढ़ाया ही था कि उसे बुढ़िया के शब्द याद आये कि इन खीरों को नदी के पास ही तोड़ना।

उसने तय किया कि वह पहले बुढ़िया के कहे अनुसार ही करेगा। अगर वे जादू के खीरे हुए तो उनमें से लड़कियॉ जरूर निकलेंगी।

सो उसने पहले एक खीरा तोड़ा। तुरन्त ही उसमें से एक सुन्दर लड़की निकल कर उसके सामने खड़ी हो गयी और बोली "पानी दो"। वॉगे तो उसको देख कर आश्चर्यचकित सा बैठा ही रह गया, न हिल सका न डुल सका।

उस लड़की ने फिर कहा "मुझे पानी चाहिये।" अब वह जैसे सपने से जगा और उसे ख्याल आया कि उसे तो ये खीरे नदी के किनारे तोड़ने चाहिये थे। वह तुरन्त ही नदी से पानी लेने भागा और

पानी ले कर उलटे पैरों वापस आया पर उसे देर हो गयी थी और वह लड़की गायब हो चुकी थी।

सो बुढ़िया की बात तो सच निकली। वह पछताने लगा कि अपनी बेवकूफी से उसने अपनी इतनी सुन्दर पत्नी खो दी।

अब वह बाकी बचे हुए खीरे नदी के किनारे ले आया और उसने पानी भी अपने पास रख लिया।

उसने फिर दूसरा खीरा तोड़ा। उसमें से भी एक सुन्दर सी लड़की निकली और बोली "पानी"। वॉगे ने कॉपते हाथों से उसे पानी पिलाया। अबकी बार वह लड़की गायब नहीं हुई बल्कि उसको देख कर मुस्कुरा दी।

इसी तरह उसने बाकी बचे दो खीरे भी तोड़े और उनमें से भी दो सुन्दर लड़कियॉ निकलीं। उसने उनको भी तुरन्त ही पानी पिलाया।

कुछ देर के लिये तो वह हक्का बक्का रह गया, उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। फिर जब वह होश में आया तो उन तीनों लड़कियों से बोला — "चलो घर चलते हैं। जब वह घर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वह जल्दी से अपनी तीनों पत्नियों को ले कर घर के अन्दर घुस गया ताकि उन्हें कोई देख न ले।

अगली सुबह फिर कुश्ती हुई। वॉगे भी उनके साथ था। दोपहर को जब खाने का समय हुआ तो सभी लोगों की पत्नियॉ अपने अपने पतियों के लिये खाना ले कर आयीं।

पहले दिन की तरह से उस दिन भी किसी ने भी वॉगे को खाना नहीं दिया सो वह उनसे कुछ दूर हट कर बैठ गया।

अचानक उसने सरसराहट और फुसफुसाहट की आवाजें सुनी। उसके सभी साथी फुसफुसा रहे थे। तभी उसकी नजर सामने पड़ी तो उसने देखा कि उसकी तीनों पत्नियॉ कुछ न कुछ अपने सिर पर रखे चली आ रही थीं।

उसकी पहली पत्नी ने उसके आगे दलिये का बरतन रखा, दूसरी ने मॉस का और तीसरी ने पीने के साफ पानी का। वॉगे ने बड़े प्रेम से खाना खाना शुरू कर दिया।

वहॉ बैठे सभी लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कल तक तो यह अकेला था और आज इसके लिये इसकी तीन तीन पत्नियॉ खाना ले कर आयी हैं। यह मामला क्या है?

वे तुरन्त ही दौड़े दौड़े वॉगे के पास पहुँचे और उससे सवाल पर सवाल करने शुरू कर दिये — "तुमको ये पत्नियॉ कहॉ से मिलीं?" "तुम कोई सरदार हो जो तुम तीन तीन पत्नियॉ रखे हो?"

"हमने इतनी सुन्दर लड़कियॉ तो पहले कभी नहीं देखीं।" "हमारी पत्नियॉ तो इनके आगे बहुत ही बदसूरत और भद्दी दिखायी देती हें।" आदि आदि वाक्य वॉगे के कानों में पड़ने लगे।

वॉगे ने जवाब दिया — "आप लोग शान्ति से बैठें तो मैं आपको सब कुछ बताता हूँ।" कह कर उसने कॉटा खोने से ले कर पत्नियॉ मिलने तक की पूरी कहानी उन सबको बता दी।

उसकी कहानी सुनते ही वे सब भी विचार करने लगे कि किस तरह पानी में जा कर वैसी सुन्दर लड़कियों को लाया जाये।

तुरन्त ही वे सब घर गये और अपनी अपनी पत्नियों को कह आये कि तुम सभी बड़ी बदसूरत हो इसलिये तुम अपने अपने पिता के घर जाओ अब हम तुम्हें नहीं रखेंगें। पत्नियॉ बेचारी रोती हुई अपने अपने पिता के घर चली गयीं।

उधर वे सब लोग नदी के किनारे आ गये जहॉ वॉगे ने अपना मछली का कॉटा खोया था। उन्होंने भी अपने अपने कॉटे पानी में फेंके और इस बात का इन्तजार किये बिना ही कि कोई मछली उसमें फॅसी कि नहीं वे नदी में कूद गये।

वह बूढ़ा मगर आश्चर्यचकित सा अभी भी वहीं लेटा हुआ था। वे सभी उसको ऐसे ही छोड़ कर घर को जाने वाले पथरीले रास्ते की तरफ बढ़ गये।

वे लोग इतनी जल्दी में थे कि न तो वे मछलियों की सुन्दरता ही देख सके और न ही हरे केकड़ों पर नजर डाल सके। आखिर वे उस पथरीले रास्ते पर चलते हुए उसी काले सफेद पत्थरों के बने हुए घर के सामने आ खड़े हुए जहॉ वॉगे पहुॅचा था।

किसी को वहॉ न देख कर उन्होंने चिल्लाना शुरू किया — "ओ बुढ़िया, अरी ओ बुढ़िया, जल्दी से बाहर निकल और हम सबको सुन्दर सुन्दर पत्नियॉ दे वरना हम सभी मिल कर तुझे पीटेंगे।"

बेचारी बुढ़िया कॉपती सी घर के बाहर आयी और पहले की तरह एक स्पंज तोड़ा और उसे उन लोगों की तरफ ले जा कर बोली — "मेरी पीठ बड़ी गन्दी हो रही है पहले ज़रा मेरी पीठ साफ कर दो।"

पर वे सभी इस बात पर ज़ोर से हॅस कर बोले — "यह हमारा काम नहीं है। हम तेरी पीठ साफ क्यों करेंगे? हमको तो बस तू जल्दी से वे जादू के खीरे दे दे जिनको तोड़ने पर सुन्दर सुन्दर लड़कियॉ निकल आती हैं नहीं तो हम तेरे टुकड़े टुकड़े कर देंगे।"

वह बुढ़िया बेचारी धीरे धीरे घर के अन्दर गयी और दो टोकरी में बहुत सारे खुरदरे खीरे ले आयी। सभी लोगों ने टोकरी की टोकरी छीननी शुरू कर दी परन्तु बुढ़िया ने सबको केवल सात सात खीरे ही दिये।

उन लोगों ने सोचा कि हम तो वॉगे से बहुत अच्छे हैं क्योंकि वॉगे को तो केवल तीन ही खीरे मिले थे पर हमको तो सात सात खीरे मिले हैं। हमारी किस्मत उससे ज़्यादा अच्छी है। वे दौड़ते भागते खीरे तोड़ने के चक्कर में तुरन्त ही नदी के किनारे जा पहुॅचे।

जल्दी जल्दी उन्होंने खीरे तोड़े। सबसे पहले आदमी ने जैसे ही अपना पहला खीरा तोड़ा वह डर गया क्योंकि उसके सामने एक उससे भी लम्बी और बदसूरत औरत खड़ी थी।

सभी के साथ ऐसा ही हुआ। इस उम्मीद में कि किसी खीरे में से तो कोई सुन्दर सी लड़की निकलेगी उन्होंने सारे खीरे तोड़ डाले।

पर उन खीरों में निकली हर औरत पहली औरत से कहीं ज़्यादा लम्बी और कहीं ज्यादा बदसूरत होती गयी।

उनमें से सबसे लम्बी और सबसे ज़्यादा बदसूरत औरत ने कहा — "तुम हमको बदसूरत कहते हो?" और ऐसा कह कर उन्होंने सबने मिल कर उन सबको पीटना शुरू कर दिया।

दर्द से चिल्लाते हुए सभी आदमी गॉव की तरफ भागे और उन बदसूरत औरतों से बचने के लिये अपने घरों में छिप कर दरवाजा बन्द कर लिया। पर वे सब औरतें गॉव में आते ही गायब हो गयीं।

जब सब कुछ शान्त हो गया तब वे लोग अपने अपने घरों से बाहर निकले। अब उन्हें लगा कि वे कितने भूखे थे परन्तु वहॉ कोई भी औरत खाना बनाने के लिये नहीं थी क्योंकि अपनी सभी पत्नियों को तो उन्होंने उनके पिता के घर भेज दिया था।

कुछ लोगों ने अपनी पत्नियों को वापस लाने की कोशिश भी की पर बेकार। पत्नियों ने कहा — "तुम लोगों ने हमारे दिल को ठेस पहुॅचायी है इसलिये ऐसे बेरहम पतियों के पास हमें हमारे माता पिता भेजने को तैयार नहीं हैं।"

उधर वॉगे के पास अब तीन पत्नियॉ थीं और सब लोग उसको इज़्ज़त से देखने लगे थे। अच्छा खाना मिलने से अब वह सुन्दर भी हो गया था।

दूसरे लोगों को पत्नियों की खोज में फिर से दूर दूर जगह जाना पड़ा। फिर जब उनको पत्नियॉ मिल गयीं तो उन्होंने फिर कभी उन को बदसूरत नहीं कहा।

9 गीदड़ और भेड़िया[42]

एक बार की बात है कि एक गीदड़ किसी बस्ती के पास ही रहता था। एक बार उसने समुद्र के किनारे की तरफ से एक मोटर गाड़ी आती देखी। उस गाड़ी में मछलियॉ भरी हुईं थीं।

उसने उस गाड़ी मे पीछे से चढ़ना चाहा पर वह उसमें चढ़ नहीं सका सो वह सड़क पर आगे की तरफ ऐसे लेट गया जैसे कि मर गया हो।

जब गाड़ी उस गीदड़ के पास तक पहुॅची तो गाड़ी के ड्राइवर के साथी ने ड्राइवर से कहा — "अरे यह देखो तुम्हारी पत्नी के लिये यह कितना अच्छा जानवर है।"

ड्राइवर ने कहा — "तो चलो इसको भी गाड़ी में डाल दो।"

सो उसने गीदड़ को उठा कर गाड़ी में डाल दिया और गाड़ी उसे चॉदनी रात में ले कर फिर आगे बढ़ गयी।

सारे रास्ते गीदड़ गाड़ी में से मछलियॉ बाहर सड़क पर फेंकता रहा। फिर वह खुद भी उस गाड़ी से बाहर कूद गया। उसको तो आज बहुत सारा मॉस इनाम में मिल गया था।

पर एक बेवकूफ भेड़िया उधर आया और अपने हिस्से से ज़्यादा मॉस खा गया। इससे गीदड़ को भेड़िये से बहुत शिकायत हो

[42] The Jackal and the Wolf – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft07.htm

गयी। वह उससे बोला — "तुमको भी बहुत सारी मछली मिल सकती है अगर तुम भी मेरी तरह से गाड़ी के आगे मरे हुए की तरह से लेट जाओ तो - बिल्कुल शान्त, चाहे तुम्हारे आस पास कुछ भी होता रहे।

भेड़िया बोला — "हूँ।"

सो जब अगली गाड़ी समुद्री किनारे की तरफ से आयी तो वह भी सड़क पर जैसे उसको गीदड़ ने बताया था लेट गया।

ड्राइवर के साथी ने जब एक मरे हुए भेड़िये को सड़क पर पड़ा देखा तो बोला कि — "अरे सड़क पर यह भद्दी सी क्या चीज़ पड़ी है?"

कह कर वह उठा और उसने डंडी से उसको पीटना शुरू कर दिया। मारते मारते उसने भेड़िये को अधमरा कर दिया।

भेड़िया भी गीदड़ के कहे अनुसार जब तक उससे हो सका तब तक तो चुपचाप पड़ा रहा मगर फिर जब उससे नहीं रहा गया तो वह उठ कर वहाँ से भाग गया और गीदड़ से जा कर अपना सारा हाल कहा।

गीदड़ ने उसे शान्त करने का बहाना किया और बोला — "उफ़ कितनी बदकिस्मती है मेरी कि मुझे कभी ऐसी सुन्दर खाल नहीं मिली जैसी तुम्हारे पास है।"

10 रविवार सात[43]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के मैक्सिको देश में कही सुनी जाती है। यह वहॉ की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार मैक्सिको के एक गॉव में दो कुबड़े[44] रहते थे। एक बहुत दयालु किस्म का था और दूसरा कुछ नीच किस्म का था।

वे दोनों कुबड़े गॉव में काम नहीं कर सकते थे क्योंकि गॉव में हर आदमी इनका बहुत मजाक बनाता था जो उनको अच्छा नहीं लगता था इसलिये वे गॉव में काम न कर के पहाड़ियों पर जा कर लकड़ी काटने काम करते थे।

इन दोनों के पहाड़ियों पर जा कर लकड़ी काटने का मतलब यह था कि दयालु कुबड़ा तो बेचारा सारा दिन लकड़ी काटता था और नीच कुबड़ा सारा दिन घर बैठा आलस में गुजारता था।

---

[43] Sunday Seven (Domingo Siete) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold and written by Sra Camen F de Cordova
[Author's Note : This tale "Domingo Siete" is one of Mexico's best known tales. Any malapropism made by a Mexican will draw the comment, "y salio con su Domingo Siete" (he came out with his Sunday Seven), meaning that he has said or done something foolish. Stith Thompson in *The Folktale*, p. 49, states that in its present form the tale was recorded as early as the 17th century in the literature of both Italy and Ireland, and that earlier there had been an Arabic literary story dating from the 14th century in which a demon or afrit removes the hump from the hero and puts it on a second man, the villain.]

[44] Translated for the word "Hunchback" – a man or a woman with the hump somewhere on his or her body.

वह उस दयालु कुबड़े से कहता — "ए देखो न आज मैं कितना बीमार हूँ। कितना अच्छा हो अगर इस हफ्ते तुम जा कर लकड़ी काट आओ।"

अब क्योंकि उसका साथी दयालु था सो वह बेचारा पहाड़ी पर चला जाता और हर हफ्ते इसी तरह काम करता रहता।

एक दिन की बात है कि जब वह नीच कुबड़ा घर में आराम कर रहा था उस दयालु लकड़हारे ने बहुत काम किया और थक गया। क्योंकि उसका घर वहाँ से काफी दूर था सो उसने वहीं पास के एक झरने के पास ही रात बिताने की सोची।

उसने अपना तम्बू लगाया और उसके अन्दर जा कर सो गया। आधी रात को उसे किसी के गाने की आवाज सुनायी पड़ी।

पहले तो उसने सोचा कि शायद किसी ने उसके पास अपना कैम्प लगाया होगा पर जब उसने वह गाना सुना तो उसे महसूस हुआ कि वह आवाज तो आदमी की नहीं थी।

वह बड़ी सावधानी से उठा और चुपचाप उस तरफ चला जहाँ से वह गाने की आवाज आ रही थी। जरा सोचो तो कि उसको कितना आश्चर्य हुआ होगा जब उसने देखा कि परियों का एक झुंड आग के चारों तरफ नाच गा रहा है।

सोमवार और मंगलवार और बुधवार तीन
सोमवार और मंगलवार और बुधवार तीन

वे परियॉ बस यही गा रही थीं। वे इसी लाइन को बार बार दोहराये जा रही थीं। ऐसा लगता था जैसे बस उनको यही एक लाइन आती थी और यही एक गाना आता था।

यह सब देख कर उस लकड़हारे ने निश्चय किया कि वह उनसे बात जरूर करेगा। सो जैसे ही उन्होंने फिर से गाना शुरू किया तो वह आदमी उनके पास जा पहुँचा। उन लोगों ने उसको देख लिया।

परियों ने उससे पूछा — "ओ धरती के आदमी, तुमको क्या चाहिये? तुम हमको परेशान करने के लिये यहॉ क्यों आ गये?"

लकड़हारा बोला — "मैं यहॉ तुमको परेशान करने के लिये नहीं आया। मैं तो बल्कि इसलिये आया हूँ क्योंकि मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ।

तुम मुझे सुनो और फिर तुम देखोगी कि तुम्हारा यह गीत जो तुम इस समय इस तरह से ज़्यादा अच्छा लगेगा।"

यह कह कर उसने गाया –

सोमवार और मंगलवार और बुधवार तीन
गुरुवार और शुक्रवार और शनिवार छह

यह सुन कर वे परियॉ तो बहुत ही खुश हो गयीं। फिर उन्होंने देखा कि वह लकड़हारा तो कुबड़ा है। उन्होंने उसको घुटनों के बल बैठने के लिये कहा और अपनी जादू की छड़ी उसके कूबड़ पर छुआ दी।

अब क्या था। जैसे ही उनकी वह जादुई छड़ी उसके कूबड़ को छुई कि उसका कूबड़ तो चला गया और वह बहुत ताकतवर भी हो गया।

पर तभी एक डरावनी आवाज के साथ अचानक धरती हिलने लगी और पत्थर ज़ोर ज़ोर से लुढ़कने लगे। परियॉ लकड़हारे से चिल्ला कर बोलीं — "राक्षस[45] आ रहे हैं। जल्दी करो पेड़ पर चढ़ जाओ नहीं तो वे तुमको मार देंगे।"

इतना कह कर वे परियॉ गायब हो गयीं।

पलक झपकते ही लकड़हारा पेड़ पर चढ़ गया और उसके पत्तों के पीछे छिप गया। जैसे ही वह पेड़ पर ठीक से बैठा वैसे ही तीन बदसूरत और बहुत बड़े राक्षस उसी पेड़ के नीचे आ पहुॅचे और आपस में बात करने लगे।

वे आपस में पूछने लगे — "दोस्तों, इस साल में तुम लोगों ने कौन कौन सा बुरा काम किया।"

एक बोला — "अबकी बार मैंने सारे गॉव को अन्धा कर दिया और अब वे इतने अन्धे हो गये हैं कि अब तो उनको सूरज भी दिखायी नहीं दे सकता।" यह सुन कर वे सब एक दूसरे की पसलियों में उॅगली गड़ा गड़ा कर हॅसने लगे।

[45] Translated for the word "Ogre" – an ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

दूसरा राक्षस बोला — "आहा, क्या तुम समझते हो कि यह कोई काम था? तुम लोग अगर मेरा काम सुनोगे तो तुम्हें पता चलेगा कि काम क्या होता है। सुनो।

मैंने तो अपने राज्य के लोगों को बिल्कुल ही शान्त कर दिया है। और अब तो वे इतने गूँगे हो गये हैं कि उनके बच्चे तो अब रो भी नहीं सकते।"

सारे राक्षस मिल कर फिर ज़ोर से हँस पड़े।

अब तीसरा राक्षस बोला — "मैं भी कोई चुपचाप नहीं बैठा। मैंने अपने लोगों को इतना बहरा बना दिया है कि उनको तो अब नरक में पड़ी आत्माओं के रोने की आवाज भी सुनायी नही देगी।"

और सारे राक्षस मिल कर फिर और ज़ोर से हँस पड़े।

वे इन सब बातों को सुन कर खुशी के मारे जमीन पर लोट पोट हो रहे थे। वे इतने नीच थे कि उन आदमियों को दुखी कर के उनको इतनी खुशी हो रही थी।

बेचारा लकड़हारा पेड़ के ऊपर बैठा यह सब सुन सुन कर डर के मारे काँप रहा था।

इतने में पहला राक्षस बोला —"अगर तुम लोगों ने ऐसा ही किया है जैसा कि मैंने कहा है तब सब कुछ ठीक चल रहा है।

वे बदकिस्मत लोग जिनको मैंने अन्धा किया है वे बेचारे तो यह भी नहीं जानते कि वे ठीक भी हो सकते हैं। फिर भी तुम लोग यह

मत समझना कि मैं उनको ठीक करने जा रहा हूँ और मैं उनको ठीक करने की तरकीब तो बिल्कुल ही नहीं बताने वाला।"

दूसरा राक्षस बोला — "बहुत अच्छे। पर वह तरकीब तुम हम लोगों को तो बताओगे न? और मुझे पूरा यकीन है कि हमारा यह दोस्त भी अपने लोगों के गूँगेपन की दवा जरूर जानता होगा।"

तीसरा राक्षस बोला — "तुम ठीक कहते हो। मेरे पास भी एक तरकीब है जिससे वे गूँगे लोग फिर से बोल सकते हैं।"

पहला राक्षस बोला — "मेरे लोगों के अन्धेपन को ठीक करने के लिये किसी को बस यही करना है कि अप्रैल के पहले हफ्ते की ओस में अपनी उँगली डुबो कर उनकी आँखों में मले तो उनकी आँखों की रोशनी वापस आ सकती है।"

दूसरा राक्षस बोला — "तुमको अपने इस भेद को ठीक से छिपा कर ही रखना चाहिये क्योंकि तुम्हारा यह भेद बहुत ही कीमती भेद है।

पर अब तुम मेरे इलाज के बारे में भी तो सुनो। जैसा कि मैंने तुमसे कहा कि मैंने अपने लोगों को बहरा कर दिया है। क्या तुमको यह पता है कि वे कैसे ठीक हो सकते हैं? इस बहरेपन का इलाज तुम्हारे अन्धेपन के इलाज से कहीं मुश्किल का काम है।

तुम लोगों ने घंटों वाली पहाड़ी[46] का नाम तो सुना ही है। उन अन्धों को बस यही करना है कि अन्धे आदमी को उस पहाड़ी पर ले

[46] Hill of the Bells

जाना है, उसको चट्टान के सहारे खड़ा करना है और फिर उस चट्टान को हथौड़े से मारना है। उस चट्टान से निकली हुई आवाज से ही उसका बहरापन ठीक हो जायेगा।"

तीसरा राक्षस बोला — "यह तो कुछ भी नहीं। मेरे आदमियों का गूँगापन ठीक करने के लिये किसी को खेतों में जाना चाहिये और वहाँ जा कर सैनीज़ो[47] पौधे के फूल चुनने चाहिये जो काफी बारिश के बाद ही फूलते हैं।

इन फूलों को उबाल कर उसकी चाय बनानी चाहिये और वह चाय उस गूँगे को पिला देनी चाहिये। इससे न केवल उसका गूँगापन ही ठीक हो जायेगा बल्कि उसकी और दूसरी बीमारियाँ भी ठीक हो जायेंगी।"

इस तरह बात करते करते वे राक्षस आपस में आनन्द कर रहे थे कि सुबह होने का समय हो आया। उन लोगों ने आपस में अगले साल इसी दिन फिर मिलने का वायदा किया और वहाँ से चले गये।

जैसे ही वे राक्षस वहाँ से गये वह लकड़हारा अपने मन में यह कहते हुए तुरन्त ही उस पेड़ से नीचे उतर आया कि क्योंकि परियों ने मेरे ऊपर दया की है तो मुझे भी उनकी दया का बदला दया से ही देना चाहिये।

[47] Flowers of Cenizo plant. See its picture above.

मैं अभी जाऊँगा और उन दुखी लोगों को ठीक करूँगा जिनकी अभी राक्षस लोग बात कर रहे थे। अप्रैल का महीना तो अभी दूर है इसलिये मैं पहले जा कर बहरों और गूँगों ठीक करता हूँ।

सो चलते चलते वह उस गॉव में पहुँच गया जिसमें गूँगे लोग रहते थे। उसने सैनिज़ो के फूल चुने, उनकी चाय बनायी और उन सब गूँगे लोगों को पिला दी।

उस चाय को पीते ही उन सबकी बोलने की ताकत तुरन्त ही वापस आ गयी और वे पूरी तरीके से स्वस्थ हो गये क्योंकि उनकी दूसरी बीमारियॉ भी उस चाय को पीने से ठीक हो गयी थीं।

वे लोग उस लकड़हारे के इतने ज़्यादा खुश हुए कि उन्होंने उस लकड़हारे के छोटे से गधे पर जितना लाद सकते थे उतना सोना और चॉदी लाद दी।

यहॉ से अपना काम खत्म कर के वह लकड़हारा फिर बहरों के गॉव की तरफ चल पड़ा। वहॉ उन बहरों को ले कर वह घंटों की पहाड़ी पर चला गया। वहॉ उनको चट्टान के सहारे खड़ा कर कर के उसने उस चट्टान को हथौड़े से मारा तो उसकी आवाज से उनका बहरापन ठीक हो गया।

यहॉ भी ये बहरे लोग उससे इतने खुश हुए कि उन्होंने भी उसका गधा सोने चॉदी से लाद दिया।

इस सबको करने के बाद अब अप्रैल का महीना पास आ रहा था सो वह अब अन्धों के गॉव की तरफ चल दिया। वह एक घास

से भरे मैदान में डेरा डाल कर रहने लगा। वह वहॉ अप्रैल के पहले हफ्ते का इन्तजार कर रहा था।

जब अप्रैल का पहला हफ्ता आया तो उस लकड़हारे ने उन फूलों पर पड़ी काफी सारी ओस इकट्ठी कर ली और अन्धों के गॉव में घुसा और उसको सबकी ऑखों पर लगा लगा कर उनकी ऑखों की रोशनी वापस ले आया।

ऑखों की रोशनी पा कर वे सब इतने खुश हुए कि उन्होंने उस को पिछले गॉव वालों से भी ज़्यादा सोना और चॉदी दिया।

यह सब कर के वह अपने घर लौट आया जहॉ उसका वह जलने वाला दोस्त उसका इन्तजार कर रहा था।

उस दयालु लकड़हारे ने उसको अपना सारा हाल बताया पर उस नीच को सोने चॉदी की कोई ज़्यादा परवाह नहीं थी वह तो बस अपना कूबड़ ठीक कराना चाहता था।

सो वह अपने दोस्त से बोला — "दोस्त, तुम मुझे यह क्यों नहीं बताते कि वह पेड़ कहॉ है? वे राक्षस वहॉ अब आने ही वाले होंगे। हो सकता है कि मैं भी तुम्हारी तरह से अमीर हो जाऊॅ।

पर सबसे बड़ी बात तो मेरे लिये यह होगी कि अगर वे परियॉ मेरी भी कमर सीधी कर दें।"

दयालु लकड़हारे को अपने दोस्त पर दया आ गयी और वह इस बात पर राजी हो गया कि वह वैसा ही करेगा जैसा कि उसका दोस्त कह रहा था।

सो उस सुबह को जिस दिन वे राक्षस आने वाले थे वह दयालु लकड़हारा अपने दोस्त को ले कर उस पेड़ के पास गया। वह नीच दोस्त अपने दोस्त को बिना धन्यवाद दिये ही पेड़ पर चढ़ गया और राक्षसों और परियों के वहॉ आने का इन्तजार करने लगा।

परियों के आने से पहले धरती और चट्टाने कॉपने लगीं जैसे पहले कॉपी थीं और राक्षस लोग भी पेड़ के नीचे फिर पहले की तरह मिलने के लिये आ गये।

सबसे बड़ा राक्षस बोला — "दोस्तों, ऐसा लगता है हम लोगों में से कोई हमको धोखा दे रहा है। पिछले साल यहॉ से जाने के बाद किसी ने मेरे लोगों को अन्धापन ठीक कर दिया।

और क्योंकि केवल हम ही लोगों को उसका इलाज मालूम था जिसकी हमने एक साल पहले यहॉ बात की थी इसलिये मुझे यकीन है कि वह हम में से कोई एक ही है जिसने उनका अन्धापन दूर किया है।"

दूसरा राक्षस बोला — "वह मैं नहीं हूँ क्योंकि मेरे राज्य में भी लोग अब बात कर सकते हैं। उनका गूँगापन भी किसी ने ठीक कर दिया है।"

तभी तीसरा राक्षस गुस्से में भर कर बोला — "और वह मैं भी नहीं हूँ क्योंकि मेरे बहरे लोग भी अब सुन सकते हैं। एक लकड़हारा मेरे राज्य में आया और वह सबका इलाज कर गया।"

इस पर दूसरे दो राक्षस चिल्लाये — "फिर तो बस यह वही लकड़हारा होगा जिसने हमारे लोगों को ठीक किया है।"

तभी वहॉ पर परियॉ प्रगट हुईं। वे राक्षसों के डर को भूल गयी थीं। उन्होंने फिर अपना पुराना गाना गाना शुरू कर दिया –

सोमवार और मंगलवार और बुधवार तीन
गुरुवार और शुक्रवार और शनिवार छह

वह कुबड़ा जिसने परियों को आते देख लिया था उस गीत में कुछ जोड़ने के लिये बेचैन हो रहा था। उसको यह उम्मीद थी कि जब वह उनके गीत में कुछ जोड़ेगा तो वे खुश हो कर उसका भी कूबड़ ठीक कर देंगी।

सो जैसे ही उन परियों ने छह कहा उस कुबड़े के दिमाग में जो कुछ भी सबसे पहले आया वह चिल्ला पड़ा —

और रविवार सात

एक पल के लिये तो वे राक्षस और परियॉ ऐसे खड़े रह गये जैसे पत्थर की मूर्तियॉ खड़ी हों। पल भर के बाद जब उनको होश आया तो परियॉ बोलीं — "अरे इसने तो हमारा गीत ही खराब कर दिया।" कह कर वे सब परियॉ गायब हो गयीं।

उन भूतों ने भी इधर उधर देखा और चिल्लाये — "ओह तो वह धोखा देने वाला यह है।" कह कर वे पेड़ पर चढ़ गये और उस कुबड़े को पकड़ कर नीचे ले आये।

वे उससे बोले — "तो तुम हो वह धोखा देने वाले ओ छोटे मकड़े। तुम्हीं ने हमारे भेद खोले हैं। लो यह लो।"

कह कर उन राक्षसों ने उसकी कमर पर एक डंडा मारा जिससे उसकी कमर पर एक और कूबड़ बन गया।

वह कुबड़ा बेचारा अपनी जान बचा कर वहॉ से भाग लिया और अपने घर ही आ कर दम लिया। तो यह हुआ उसके नकल करने का फल।

11 कैन्डी वाला आदमी[48]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के तिब्बत देश की है। तिब्बत देश भारत के उत्तर में स्थित है और चीन देश में आता है। यह संसार में सबसे ऊँची जगह है[49] – औसतन सोलह हजार फीट। इसलिये इसको संसार की छत भी कहा जाता है।

एक बार की बात है कि तिब्बत के पहाड़ों में दो भाई रहा करते थे। जब उनके माता पिता मर गये तो उनका सब कुछ बड़े भाई को मिल गया।

सो अब बड़ा भाई अमीर था और छोटे भाई के पास कुछ भी नहीं था। बड़े भाई के पास तो अपनी जरूरत से भी ज़्यादा पैसा था पर वह खुश नहीं था।

उसको जो कुछ पैसा अपने माता पिता से मिला था वह उसने ऊँचे ब्याज पर उधार दे दिया। इससे उसका पैसा और बढ़ गया था पर फिर भी वह खुश नहीं था। वह बहुत ही लालची था।

छोटे भाई के पास कोई पैसा नहीं था पर फिर भी वह हमेशा मुस्कुराता रहता। वह रोज रोज घर घर काम माँगने जाता था और जो भी काम उसको मिल जाता वह उसी को कर लेता।

---

[48] The Candy Man – a folktale from Tibet, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=209
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[49] Tibet is called “The Roof the World”.

वह कभी अपने बारे में भी कोई शिकायत नहीं करता बल्कि अपने बड़े भाई के बारे में भी अच्छा ही बोलता था और अच्छा ही सोचता था।

एक दिन छोटे भाई को एक पहाड़ी पर लगे एक प्रकार के पेड़ के रस की भारी भारी भरी बालटियॉ उठाने का काम मिला। वह रस वहॉ इकट्ठा किया जाता था और फिर वहॉ से वह बालटियों मे भर कर पहाड़ियों के नीचे लाया जाता था जहॉ उसको पका कर उसका मीठा शहद और मीठी गोलियॉ बनायी जाती थीं।

एक बार जब वह रस से भरी उन बालटियों को ले कर नीचे आ रहा था तो उसका पैर फिसल गया और वह नीचे गिर पड़ा। वह लुढ़कता चला गया और वह रस उसके सारे शरीर पर लिपटता चला गया। जब वह रुका तो उसके चारों तरफ कुछ राक्षस[50] खड़े हुए थे।

राक्षस चिल्लाये — "कैन्डी[51] वाला आदमी। कैन्डी वाला आदमी।"

राक्षसों को कैन्डी बहुत अच्छी लगती थी सो वे बाले — "अरे आज तो हमारे पास खाने के लिये एक कैन्डी वाला आदमी है।"

उन राक्षसों ने उस छोटे भाई को उठा लिया और उसको पहाड़ में बनी अपनी एक गुफा में ले गये। कुछ राक्षस तो उसको तभी

[50] Translated for the word "Goblin"

[51] Sweet balls of sugar for children

खाना चाहते थे पर राक्षसों के राजा ने उनको ऐसा करने से रोक दिया।

वह बोला — "यह हमारा तरीका नहीं है।" उसने एक जादू का ढोल बजाया तो कमरे के बीच में एक मेज पर बहुत सारा खाना प्रगट हो गया।

उन राक्षसों की नाकें लम्बी होने लगीं जिनसे वे खाने की खुशबू अच्छी तरह से ले सकते थे। जैसे ही उनकी नाकें लम्बी हुईं तुरन्त ही वे अपने मुँह के एक ही दाँत से मॉस, डबल रोटी और केक पर टूट पड़े।

छोटे भाई को वह खाना सूँघने में बहुत ही स्वादिष्ट लग रहा था। उसने इतने स्वादिष्ट खाने की खुशबू पहले कभी नहीं सूँघी थी।

राक्षसों के राजा ने अपना वह ढोल एक बार फिर बजाया और बोला — "अब तुम लोग नदी तक हो कर आओ फिर हम अपने इस कैन्डी वाले आदमी को खायेंगे।" सारे राक्षस वहाँ से बाहर की तरफ भाग गये और छोटा भाई अब गुफा में अकेला रह गया।

वह बिल्कुल चुपचाप बैठा रहा ताकि राक्षस उसे न खायें। सबके जाने के बाद वह कूदा और वह जादू का ढोल उठा कर गुफा के बाहर भाग लिया और अपने घर का रास्ता ढूँढ कर अपने घर आ गया।

घर आ कर उसने वह ढोल बजाया तो उसके पास तो खाने के लिये भी खाना था और बेचने के लिये भी खाना था। धीरे धीरे उसके पास भी अब अपने कुछ पैसे हो गये तो उसने भी अपने बड़े भाई जितना बड़ा घर खरीद लिया।

बहुत जल्दी ही उसके बड़े भाई को उसकी खुशकिस्मती के बारे में पता चल गया। उसने अपने छोटे भाई से प्रार्थना की कि वह उसको यह बता दे कि वह अमीर कैसे बना। छोटा भाई तो बहुत दयालु था सो उसने अपने बड़े भाई को सब बता दिया।

सुनते ही उसका बड़ा भाई उसी पहाड़ी के ऊपर दौड़ गया और वहॉ से रस की बालटियॉ ले कर लौटा तो अपने शरीर पर बहुत सारा रस लपेट लिया और पहाड़ी से नीचे लुढ़क गया।

वह भी अपने छोटे भाई की तरह उन राक्षसों के बीच आ पहुॅचा। उन राक्षसों में से एक राक्षस बोला — "अरे देखो यह तो हमारा वही कैन्डी वाला आदमी है।"

कहते हुए वे राक्षस उसको घसीटते हुए अपनी गुफा में ले गये। वह वहॉ चुपचाप ही रहा ताकि मौका पड़ने पर वह अपना जादू का ढोल वहॉ से उठा कर भाग सके।

"पिछली बार तो हमारा कैन्डी वाला आदमी हमारे खाने से पहले ही भाग गया था। इस बार हम ऐसा नहीं होने देंगे। चलो इसको हम पहले पिघलाते हैं और खाना खाने से पहले ही इसका रस पी लेते हैं।"

कह कर राक्षसों ने उस बड़े भाई को एक बड़े से बरतन में रखा और उस बरतन को ढक दिया। फिर उन्होंने उसके नीचे आग जलायी। जैसे ही उन्होंने आग जलायी वह बड़ा भाई तो तुरन्त ही उस बरतन का ढक्कन हटा कर उसमें से बाहर कूद गया।

राक्षस बोले — "अरे यह हमारा वाला कैन्डी वाला आदमी नहीं है। लगता है यह तो कोई मामूली चोर है।"

राक्षसों के राजा ने अपना दूसरा जादू का ढोल बजाया और उस भाई की नाक खींचनी शुरू की। उस ढोल के बजाने से उसकी नाक लम्बी होती चली गयी। वे तब तक अपना ढोल बजाते रहे जब तक कि उसकी नाक सात फीट लम्बी नहीं हो गयी।

राक्षसों को नोचना बहुत अच्छा लगता है सो नाक बढ़ाने के बाद में उन्होंने उसके सारे शरीर को नोचना शुरू कर दिया।

बड़े भाई के पास अपने बचाव के लिये और तो कुछ था नहीं तो उसने अपनी लम्बी नाक को ही इधर उधर घुमा कर कोड़े की तरह इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

इस तरह उसने सब राक्षसों को नीचे गिरा दिया और गुफा से बाहर की तरफ भागा। घर आ कर वह अपनी पत्नी से बोला — "जल्दी दरवाजा खोलो।"

उसकी पत्नी ने तुरन्त ही दरवाजा खोला और वह अपनी लम्बी नाक में उलझ कर घर में अन्दर की तरफ गिर पड़ा।

सब कुछ सुन कर उसकी पत्नी अपने पति के छोटे भाई के पास गयी और उससे कहा — "यह सब तुम्हारी अपनी गलती है। अगर तुमने मेरे लालची पति को यह न बताया होता कि तुम अमीर कैसे हुए तो आज उसकी नाक सात फीट लम्बी न हुई होती।"

छोटे भाई को पता था कि उसके भाई की नाक सात फीट लम्बी केवल उसके लालची होने की वजह से ही हुई है फिर भी वह क्योंकि अपने भाई को बहुत प्यार करता था उसने अपने भाई से वायदा किया कि वह उसकी सात फीट लम्बी नाक का कोई हल जरूर निकालेगा।

अगले दिन छोटा भाई फिर से उन राक्षसों की गुफा में गया। वहॉ उसने तब तक इन्तजार किया जब तक वे राक्षस अपनी गुफा से बाहर जाने लगे।

जाते जाते वे आपस में बात करते जा रहे थे — "कल उस चोर की नाक लम्बी करने में कितना मजा आया। यह कितनी बुरी बात है कि उसको यह नहीं मालूम था कि अपनी नाक को पहले जैसा करने के लिये उसको केवल जादू का ढोल पीट कर यह कहना था "ओ मेरी नाक सिकुड़ जाओ।"

बस छोटे भाई को तो यही मालूम करना था। यह सुन कर वह दौड़ा दौड़ा घर आया। उसने अपना वह जादू का ढोल बजाया और बोला "ओ मेरी नाक सिकुड़ जाओ।"

पहली बार इस तरह कहने से उसके भाई की नाक करीब दो इंच सिकुड़ गयी। यह देख कर छोटा भाई बहुत खुश हुआ। वह तब तक उस ढोल को बजाता रहा और "ओ मेरी नाक सिकुड़ जाओ।" दोहराता रहा जब तक उसके भाई की नाक तीन फीट नहीं रह गयी।

पर तब तक उसकी पत्नी से सब्र नहीं हुआ वह बेसब्री से चिल्लायी — "यह ढोल तुम मुझको दो। मैं देखती हूँ।"

कह कर उसने अपने पति के छोटे भाई से वह ढोल जबरदस्ती छीन लिया और उसे जल्दी जल्दी बजाना शुरू किया। अब उसके पति की नाक जल्दी जल्दी सिकुड़ रही थी और अब वह बहुत खुश थी।

पर फिर भी "नाक सिकुड़" कह कर उसने वह ढोल बहुत ज़ोर से पीट दिया तो एक ही बार में उसके पति की नाक छोटी हो कर उसके चेहरे से जा कर चिपक गयी।

अब आज तक उस भाई के कोई नाक नहीं है। उसको अपने लालच का फल मिल गया था।

12 बन्दर का ढोल[52]

बहुत दिनों पहले की बात है कि चीन में एक बड़ा दयालु नौजवान रहता था जिसका नाम था यान[53]। वह अपने बड़ों की बहुत इज़्ज़त करता था और जानवरों के ऊपर बहुत दया करता था।

वह अकेला ही रहता था उसके कोई पत्नी तो नहीं थी क्योंकि अभी उसकी शादी नहीं हुई थी पर उसकी निगाह में एक बहुत ही सुन्दर लड़की थी जो उसको बहुत अच्छी लगती थी।

वह उससे शादी करना चाहता था पर वह एक बहुत ही अमीर आदमी की बेटी थी और उसका पिता अपनी बेटी की शादी किसी ऐसे आदमी से नहीं करना चाहता था जो उसको ठीक से "दुलहिन की कीमत"[54] नहीं देता।

अमीर आदमी बोला — "कोई आदमी मेरी बेटी से शादी नहीं करेगा जब तक कि वह शादी की भेंट – यानी एक लाल लिफाफे में काफी जवाहरात या फिर काफी पैसा मुझे नहीं देगा।"

"दुलहिन की कीमत" लेना चीन में एक रिवाज था जो चीन में हर लड़की का पिता मानता था। लेकिन यह कीमत इस बात से तय होती थी कि लड़के वालों के पास कितना पैसा है।

---

[52] The Monkey's Drum – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=111
Retold and written by Mike Lockett

[53] Yan – the name of the young man who wanted to marry

[54] Bride Price – is the money paid by the bridegroom to the bride's father to marry his daughter.

बहुत सारे परिवार इस बात का बहुत ध्यान रखते थे कि वे अपनी बेटी के लिये बहुत सारा पैसा न माँगें ताकि लोगों को ऐसा न लगे कि वे अपनी बेटी को बेच रहे हैं।

यान के पास केवल एक ही कीमती पत्थर था और वह उसकी अँगूठी में जड़ा हुआ था जो उसकी माँ ने उसको बरसों पहले दी थी।

वह उसको अपने गले में पहने रहता था कि एक दिन शायद उसकी पत्नी उसको पहनेगी। सो वह यह पत्थर इस लालची आदमी को देने वाला नहीं था।

एक दिन यान इस अमीर आदमी के घर काम करने की इच्छा से गया ताकि वह उसको यह दिखा सके कि वह बहुत मेहनती आदमी था और साथ में एक बहुत अच्छा दामाद भी।

फिर भी उस आदमी ने यान के साथ बहुत बुरा बरताव किया और अपने दूसरे काम करने वालों के मुकाबले में उससे बहुत ज़्यादा तो काम लिया और यान को उतना पैसा भी नहीं दिया जितना कि उसको उसे देना चाहिये था।

वह नहीं चाहता था कि यान जैसा गरीब आदमी उसकी बेटी से शादी करे।

एक दिन यान पहाड़ों की तरफ लकड़ी काटने गया। वह सारी सुबह बहुत मेहनत से काम करता रहा। जब उसने दोपहर का खाना

खाने के लिये अपना काम बन्द किया तो वह कुछ देर के लिये धूप में अपना सिर कर के लेट गया और ऑखें बन्द कर लीं।

जब वह वहॉ लेटा हुआ था तो उसने बन्दरों की चिचियाने की आवाजें सुनी। वे वहीं उसके पास वाले पेड़ों पर खेल रहे थे। यान देखना चाहता था कि अगर वे बन्दर उसको इस तरह चुपचाप बिना हिले डुले पड़े देखते तो वे क्या करते सो वह वहॉ चुपचाप बिना हिले डुले पड़ा रहा।

कुछ ही देर में बन्दरों ने उसको चारों तरफ से घेर लिया पर फिर भी वह वहीं चुपचाप लेटा रहा और हिला भी नहीं।

एक बन्दर ने यान की एक बॉह में चिऊँटी काटी और पूछा — "यह क्या है?" यान नहीं हिला।

दूसरा बन्दर बोला — "यह तो आदमी की तरह से नहीं हिल रहा।" उसने यान के बाल भी खींचे पर यान नहीं हिला।

वह बन्दर फिर बोला — "लगता है यह तो मूर्ति है।"

तीसरे बन्दर ने यान की पलक उठायी पर यान फिर भी नहीं हिला।

एक और बन्दर ने यान के कान में घास का एक तिनका घुसाया पर यान फिर भी नहीं हिला।

एक बन्दर ने यान का मुँह खोला और उसकी जीभ बाहर खींची पर यान फिर भी नहीं हिला।

एक बन्दर ने यान की नाक में अपनी उँगली डाली पर यान फिर भी नहीं हिला।

बन्दर ने घोषित किया कि वह एक मूर्ति पड़ी थी क्योंकि अगर वह कोई आदमी होता तो वह जरूर ही हिलता।

एक बन्दर ने यान के पेट में मारा तो उसके पेट से हवा निकली जिससे यान के मुँह से निकला "उँह"। यह सुन कर वह बन्दर बोला — "अब मुझे पता चला यह तो मूर्ति भी नहीं बल्कि एक ढोल है।"

उसने यान को दोबारा मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

उसने यान को तिबारा मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

उसने यान को चौथी बारा मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

यान को उसने फिर पॉचवीं बार मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

बस अब वह यान को मारता रहा और उसमें से "उँह उँह" की आवाज आती रही।

बन्दर बोले — "वाह क्या ही अच्छा ढोल है। यह तो बड़ा आदमी वाला ढोल[55] है। चलो हम इसको अपनी गुफा में ले चलते हैं और वहॉ ले जा कर इसको बजायेंगे। अब तो हमारे पास यह बड़ा आदमी ढोल है।"

और वे उसको अपने सिर के ऊपर उठाकर ले चले — "उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह.... । इसको हवा में उठाओ

[55] Translated for the words "Big Man Drum"

और सँभाल कर ले चलो।" और वे उसको इस तरह से उठा कर पहाड़ के ऊपर अपनी गुफा में ले चले।

एक बन्दर यान के पेट पर बैठ गया और उसको मारता चला गया जैसे ढोल को बजाते हैं — "हमारे बड़े आदमी ढोल को नीचे मत गिराना, हमारे बड़े आदमी ढोल को नीचे मत गिराना, उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह।"

अब बन्दरों ने एक बड़ी सी गहरी घाटी पार करनी शुरू की जिसमें नीचे नदी बह रही थी। जब वे उस घाटी के ऊपर वाला पुल पार कर रहे थे तो बन्दरों ने यान को बहुत सँभाल कर पकड़ा हुआ था। यान ने भी अपनी ऑखें बन्द कर रखी थीं और वह बिल्कुल नहीं हिल रहा था।

पुल पार कर के बन्दर पहाड़ों में अपनी गुफा की तरफ चले। उन्होंने यान को अपनी गुफा में एक पत्थर की मेज पर लिटा दिया — "यह बड़ा आदमी ढोल तो हमारा है, हम इसको फूलों से ढक देते हैं। उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह।"

बन्दरों ने यान को फूलों से ढकना शुरू कर दिया। उन्होंने उसके बालों में फूल लगाये, कानों में फूल रखे, नाक में फूल रखा। उसी समय एक बन्दर ने वह चमकीली अँगूठी देखी जो यान ने अपने गले में पहनी हुई थी।

एक बन्दर बोला — "ओह, कितना सुन्दर पत्थर है।" फिर वह अपनी सोने वाली जगह गया और वहाँ से कुछ लाल और हरे

रंग के पत्थर उठा लाया और उसकी अँगूठी के पास ला कर रख दिये।

दूसरे बन्दर भी वहाँ से दूसरी रंगीन मोतियों की माला, जंजीरें और चमकीले पत्थर लाने के लिये दौड़ गये।

इस बीच यान ने अपनी आँखें ज़रा सी खोलीं तो देखा कि बन्दर उसके शरीर को कीमती पत्थरों, गले के हारों, कलाई के कंगनों से ढक रहे थे। उसने अपनी आँखें फिर से बन्द कर लीं और चुपचाप लेटा रहा।

"चलो अब अपना बड़ा आदमी ढोल बजाते हैं – उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह उँह।"

बन्दर रात गये तक अपना ढोल बजाते रहे और नाचते रहे। फिर जब वे थक गये तो अपनी अपनी सोने की जगहों पर चले गये।

जब सारे बन्दर सो गये तो यान सावधानी से उस पत्थर के ऊपर से नीचे उतरा। उसने वहाँ से जितने जवाहरात उठा सकता था उतने जवाहरात उठाये और अपने गाँव की तरफ जल्दी जल्दी चल दिया। उसने उस घाटी के ऊपर का पुल बड़ी सावधानी से पार किया।

घर आ कर उसने कुछ जवाहरात बेच कर एक बड़ा सा खेत खरीद लिया और अपने लिये एक बड़ा सा मकान बना लिया। कुछ पैसा उसने गाँव के गरीबों की सहायता करने में लगा दिया और कुछ

जवाहरात उसने उस दिन के लिये अपने पास रख लिये जब उसकी शादी होगी।

जल्दी ही उसके पुराने लालची मालिक को उसके अमीर होने का पता चल गया। उसने यान से कहा — "अब तुम मेरी बेटी की "दुलहिन की कीमत" देने लायक हो गये हो। क्या मैं तुम्हारे लिये लाल बड़ा लिफाफा ले आऊँ ताकि हम तुम्हारी शादी के बारे में बात कर सकें?"

यान बोला — "नहीं धन्यवाद। मैं पत्नी खरीदना नहीं चाहता।"

पर वह लालची आदमी यान के पीछे पड़ा रहा जब तक कि यान ने उसको यह नहीं बता दिया कि वे जवाहरात और पैसे उसको कहाँ से मिले थे।

यान की कहानी सुनने के बाद वह लालची आदमी तुरन्त ही बड़े बड़े थैले लाने के लिये अपने घर गया ताकि वह वहाँ से यान से भी ज़्यादा जवाहरात ला सके। और फिर तुरन्त ही उस पहाड़ की तरफ चल दिया जहाँ यान बन्दरों से मिला था।

वह लालची आदमी भी यान की तरह से आँखें बन्द कर के उस पहाड़ पर जमीन पर लेट गया। कुछ मिनटों में ही उसको भी बन्दरों की चिचियाहट की आवाज सुनायी पड़ने लगी। वह हिला नहीं और चुपचाप पड़ा रहा।

जल्दी ही बन्दरों ने उसको घेर लिया। एक ने उसके बाल खींचे, दूसरे ने उसके कानों में, मुँह में, ऑखों में उँगली घुसायी, पर वह नहीं हिला।

एक बन्दर बोला — "यह तो हमारा बड़ा आदमी वाला ढोल है"।

फिर एक ने उसके पेट में मारा तो वह बोला — "आउ आउ।" फिर दूसरे ने मारा, फिर तीसरे ने मारा तो वह बोलता रहा — "आउ आउ आउ आउ आउ।"

एक बन्दर बोला — "हमारा यह ढोल ठीक से नहीं बोल रहा। पर फिर भी हम इसको अपनी गुफा में ले चलते हैं इसको हम वहीं बजायेंगे।"

सो वे उस लालची आदमी को अपने सिर पर उठाकर पहाड़ की तरफ अपनी गुफा में ले चले — "इसको हवा में उठाओ और सँभाल कर ले चलो, आउ आउ आउ आउ आउ।"

एक बन्दर उसके पेट पर बैठ गया और उसके पेट पर मारता रहा। वह लालची आदमी वैसे तो चुपचाप लेटा रहा बस वह जभी बोलता था जब वह बन्दर उसके पेट पर मारता था।

"हमारे बड़े आदमी ढोल को नीचे नहीं गिराना, आउ आउ आउ आउ आउ।"

बन्दरों ने अब वह घाटी वाला पुल पार करना शुरू कर दिया था जिसके नीचे वह बहुत तेज़ नदी बह रही थी। जब वे पुल पार

कर रहे थे तो वे उसको बड़ी सावधानी से ले जा रहे थे पर उस लालची आदमी ने ऑख खोल कर नीचे देखा तो डर के मारे चिल्लाया — "ए तुम लोग गिरा मत देना मुझे।"

उसकी इस चिल्लाहट से बन्दर डर गये और उनके हाथों से वह आदमी छूट गया। वह नीचे पानी में जा गिरा जहॉ से वह तेज़ पानी उसको बहा कर ले गया।

यान ने वह अँगूठी उस लालची आदमी की बेटी को दे दी। उस लालची आदमी के जाने के बाद वह लड़की यान की बहुत प्यारी पत्नी बन गयी। दोनों खुशी से रहने लगे।

उसके बाद बन्दरों को अपना बड़ा आदमी ढोल फिर कभी नहीं मिला इसलिये वे फिर अपने पेट को ही बजा बजा कर गाते रहे — "हमारे पास एक बड़ा आदमी ढोल था, हमारे पास एक बड़ा आदमी ढोल था, आउ आउ आउ आउ आउ।"

13 सूरज का टापू[56]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के चीन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि चीन के एक गॉव में एक किसान रहता था जिसके दो बेटे थे। उसका बड़ा बेटा बहुत ही मतलबी और लालची था जबकि उसका छोटा बेटा बहुत दयालु और दानवीर था।

कुछ समय बाद किसान मर गया। उसके बड़े बेटे ने उसकी सारी जमीन ले ली और छोटे भाई के लिये एक टोकरी और एक तेज़ चाकू छोड़ दिया जिससे वह आग जलाने के लिये लकड़ी काट सके।

सो वह अब जंगल जाता आग जलाने के लिये लकड़ी काटता और थोड़े से चावल के लिये बाजार में बेच देता। वह गरीब था उसके पास कुछ नहीं था।

एक दिन वह छोटा भाई जंगल से होता हुआ पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया। वहॉ जा कर वह एक चट्टान पर जा कर बैठ गया और डूबते हुए सूरज को देखने लगा।

---

[56] The Island of the Sun – A folktale from China, Asia.
Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/382/preview
By David Heathfield

जब वह वहॉ अकेला बैठा था तो उसने ऊपर से हवा का एक बहुत ज़ोर का झोंका महसूस किया तो उसने ऊपर देखा तो उसने देखा कि एक बहुत ही चमकीला चिड़ा बहुत जल्दी से उसी की तरफ उड़ता हुआ नीचे आ रहा है। उसने हवा के झोंके की तेज़ी महसूस की और अगले ही पल वह चिड़ा उसके सामने बैठा था।

चिड़े ने उससे पूछा — "तुम यहॉ बिल्कुल अकेले क्यों बैठे हो?"

लड़का बोला — "मैं बहुत गरीब हूॅ मेरे पास कुछ नहीं है।"

चिड़ा बोला — "यह सच है या झूठ?"

लड़का बोला — "मैं सच कहता हूॅ मैं बहुत गरीब हूॅ मेरे पास कुछ नहीं है।"

वह ताकतवर चिड़ा बोला — "तब तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ और मैं तुमको सूरज के टापू पर ले चलता हूॅ। वहॉ से तुम चलने से पहले सोने एक टुकड़ा उठा लेना।"

सो वह लड़का उस चिड़े की पीठ पर बैठ गया और चिड़ा उसको ले कर उड़ चला। चिड़ा पहाड़ से दूर उड़ चला। वह जंगलों के ऊपर उड़ा। वह पानियों के ऊपर उड़ा। वह सूरज के टापू की तरफ उड़ा।

जैसे ही वह चिड़ा सूरज के टापू पर आ कर उतरा तभी वहॉ सूरज डूबा तो वह टापू सूरज की सुनहरी चमकीली रोशनी में डूब गया। लड़के ने बहॉ से एक सोने का टुकड़ा उठा लिया और उसको

अपनी टोकरी में रख लिया। वह फिर से बड़े चिड़े की पीठ पर बैठ गया।

बड़ा चिड़ा अब टापू से दूर उड़ चला। बड़ा चिड़ा पानियों के ऊपर उड़ा। बड़ा चिड़ा जंगलों के ऊपर उड़ा। बड़ा चिड़ा पहाड़ पर वापस आया।

लड़का उस सोने के टुकड़े को ले कर जंगल के बाहर आया। वहॉ आ कर उसने उससे एक छोटी सी जमीन खरीदी। उस जमीन पर उसने सूअर गाय और मुर्गियॉ पालीं। फिर वह वहॉ मेहनत करता रहा और अच्छी तरह रहने लगा।

एक दिन उसका बड़ा भाई वहॉ आया तो उसने उससे पूछा कि उसको वह धन और वह जमीन कहॉ से मिली। छोटे भाई ने उसे सब बता दिया।

"मुझे भी यह चाहिये। तुम मुझे अपनी टोकरी और वह चाकू दो।" छोटे भाई ने उसको अपना चाकू और टोकरी दे दी। बड़े भाई ने वह चाकू और टोकरी उठायी और उसी पहाड़ की तरफ चल दिया जिसकी तरफ उसका भाई गया था।

वहॉ जा कर वह भी एक चट्टान पर बैठ गया और उस चिड़े का इन्तजार करने लगा।

जब वह वहॉ बैठा हुआ था तो उसने भी अपने ऊपर से हवा का एक बहुत ज़ोर का झोंका महसूस किया तो उसने ऊपर देखा तो उसने देखा कि एक चमकीला चिड़ा बहुत जल्दी से उसी की तरफ

उड़ता हुआ नीचे आ रहा है। उसने भी हवा के झोंके की तेज़ी महसूस की और अगले ही पल वह चिड़ा उसके सामने बैठा था।

चिड़े ने उससे पूछा — "तुम यहाँ बिल्कुल अकेले क्यों बैठे हो?"

बड़ा भाई बोला — "मैं बहुत गरीब हूँ मेरे पास कुछ नहीं है।"

चिड़ा बोला — "यह सच है या झूठ?"

बड़ा भाई बोला — "यह सच है कि मैं बहुत गरीब हूँ मेरे पास कुछ नहीं है मुझे सोना चाहिये।"

वह ताकतवर चिड़ा बोला — "तब तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ और मैं तुमको सूरज के टापू पर ले चलता हूँ। वहाँ से तुम चलने से पहले सोने एक टुकड़ा उठा लेना।"

सो वह लड़का उस चिड़े की पीठ पर बैठ गया और चिड़ा उसको ले कर उड़ चला। चिड़ा पहाड़ से दूर उड़ चला। वह जंगलों के ऊपर उड़ा। वह पानियों के ऊपर उड़ा। वह सूरज के टापू की तरफ उड़ा।

जैसे ही वह चिड़ा सूरज के टापू पर आ कर उतरा तभी वहाँ सूरज डूबा तो वह टापू सूरज की सुनहरी चमकीली रोशनी में डूब गया। सारा टापू सुनहरा हो गया। बड़े भाई ने वहाँ से सोने का एक टुकड़ा उठा कर अपनी टोकरी में रख लिया।

पर उस एक टुकड़े को देख कर उसे लगा कि उसकी टोकरी तो अभी खाली है वह तो उसमें अभी काफी सोना भर सकता था सो

उसने एक और टुकड़ा उठा कर रख लिया। उसको अभी भी अपनी टोकरी खाली लगी तो उसने फिर तीसरा टुकड़ा उठा लिया फिर चौथा फिर पॉचवॉ।

इस तरह से वह तब तक उन सोने के टुकड़ों को उठाता रहा जब तक कि उसकी टोकरी उनसे भर नहीं गयी। जब उसकी टोकरी भर गयी तो वह वापस जाने के लिये मुड़ा और जैसे ही वह मुड़ा तो उसने देखा कि वह चिड़ा तो उड़ कर चला गया है और सूरज निकल रहा है।

वह वहीं खड़ा रह गया और जल कर बिल्कुल कड़क हो गया।

छोटे भाई ने बड़े भाई की जायदाद भी ले ली। उसने जमीन को बहुत मेहनत और प्यार से जोता। उसकी जमीन में बहुत पैदावार हुई जिसको उसने अपने गॉव वालों के साथ भी बॉटा।

12 शेर के मुँह में[57]

वॉग चुंग और उसका छोटा भाई वॉग सायो[58] दक्षिण चीन के एक छोटे से गॉव में रहते थे। वे आपस में कभी अच्छे दोस्त तो नहीं रहे पर वे अपने माता पिता के दिये हुए एक ही जमीन के टुकड़े से अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये मजबूर थे।

छोटा भाई वॉग सायो बहुत ही दयावान था जबकि बड़ा भाई वॉग चुंग बहुत ही मतलबी था। अब जैसी जिसकी किस्मत होती है। बड़े भाई वॉग चुंग की शादी भी इत्तफाक से एक ऐसी स्त्री से हो गयी जो बहुत ही मतलबी और बेरहम थी।

वॉग चुंग की पत्नी को अपने पति का छोटा भाई बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। वह उसको घर से निकालने का कोई न कोई मौका ढूँढ रही थी।

एक दिन वॉग सायो खेत के काम से थका हारा आया तो उससे चाय का एक प्याला टूट गया। बस उसकी भाभी को बहाना मिल गया और उसने उसको इसी बात पर घर से बाहर निकाल दिया।

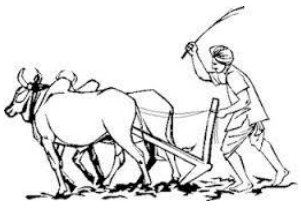

वॉग चुंग ने जाते समय उसको लकड़ी का एक हल और पतला सा एक भूसे का गद्दा दे दिया और

[57] Into the Mouth of the Lion – a legend from China, Asia. Adapted from the book : "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Hindi Translation of this book is available from hindifolktale@gmail.com for free.

[58] Wang Chung and his younger brother Wang Hsaio

उसको घर से बाहर जाने दिया। दोनों चीज़ें ले कर वॉग सायो कई दिनों तक ऐसे गॉवों और शहरों से हो कर चलता रहा जिनके उसने नाम तो सुने थे लेकिन उनको कभी देखा नहीं था।

पॉचवी रात वह एक सुनसान अकेली जगह आ गया। उस जगह के बीच में एक टूटा फूटा मन्दिर खड़ा था। आज उसके उन फर्शों पर घास उग आयी थी जो कभी चमकते रहे होंगे। मन्दिर की दीवारें टूटी फूटी थी छत भी खराब थी सो उन छतों में से उसको आसमान दिखायी दे रहा था।

उसको तो कहीं ठहरने की जगह चाहिये थी सो वह इसी मन्दिर की तरफ बढ़ा। इतनी सब टूट फूट के बाद भी उस मन्दिर के ऑगन में एक बहुत ही सुन्दर पत्थर का शेर खड़ा हुआ था। वह आज भी वैसा ही चमक रहा था जैसा कि शायद अपने बनने के पहले दिन चमक रहा होगा।

वॉग सायो को यह एक अच्छा शकुन लगा सो उसने उस जगह को कुछ दिनों के लिये अपना घर बनाने के लिये सोच लिया।

उसने एक पैसा उधार देखने वाले से थोड़ा सा पैसा उधार ले लिया था सो उस पैसे से उसने इतना अनाज खरीद लिया था कि वह वहॉ मन्दिर के आस पास की जमीन पर खेती कर सकता था।

अनाज खरीद कर उसने वहॉ वह अनाज बो दिया और अपनी खेती के बड़े होने का इन्तजार करता रहा। इस बीच में वह जंगली फलों और जानवरों के मॉस पर अपना गुजारा करता रहा।

वह अपने दिन खेत पर और शाम मन्दिर की सीढ़ियों पर बैठ कर गुजारता। वहॉ अकेली जगह में कौन तो उसके पास उससे मिलने आता और वह खुद भी गॉव के लोगों से मिलने जाना नहीं चाह रहा था सो वह वहॉ अकेला ही रहता रहा।

पत्थर का वह शेर जो मन्दिर की रखवाली कर रहा था बस वही उसका एक दोस्त था। अपने अकेलेपन में वह बस उसी से एकतरफा दोस्ती में लग गया।

उसने उस शेर की सुरक्षा के लिये सरकंडे[59] का एक कमरा बनाया। वह रोज सुबह उसको खाना खिलाता था और शाम को उससे बात करता था। वह शेर भी शान से उसके सामने बैठा तो रहता पर ऐसा लगता नहीं था कि वह उसकी कुछ सुन भी रहा था।

गरमी की एक शाम बहुत गरम था सो वॉग सायो पंखा झलता जा रहा था और अपने उस शेर से अपनी फसल के बारे में बात करता जा रहा था।

"ओ मेरे पत्थर के शेर, तुमको पता नहीं है कि तुम कितने खुशकिस्मत हो। तुम यहॉ सारा दिन दुनियॉ की सारी चिन्ताओं से आजाद बैठ सकते हो पर मुझे देखो मैं सारा दिन खेत में लगा रहता हूॅ और फिर भी मुझे यह नहीं मालूम कि मेरी फसल ठीक से उगेगी भी या नहीं।"

[59] Translated for the word "Reed". See its picture above.

और दिनों की तरह से वह शेर सुन रहा था या नहीं सुन रहा था पर वॉग सायो ने इसके आगे कुछ कहा ही नहीं। वह अपने ख्यालों में खोया हुआ शेर के पैरों के पास चुपचाप बैठा रहा।

इतने में जमीन हिलनी शुरू हुई। पहले तो वह धीरे से हिली पर फिर वह ज़ोर के शोर में बदल गयी। वॉग सायो डर गया। उसको लगा कि शायद कोई तूफान आ गया है सो वॉग सायो वहॉ से उठ कर शेर के सरकंडे वाले मकान में घुस गया और अपने ठंडे शरीर को सिकोड़ कर बैठ गया।

उसके सिर के ऊपर से किसी की बड़ी गहरी सी आवाज आयी — "तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।"

वॉग सायो को तो यकीन ही नहीं हुआ कि वह शेर की आवाज थी। वह बोला — "तुम कैसे बोल सकते हो तुम तो पत्थर के बने हो?"

"मैंने तुमसे कह दिया न कि तुम चिन्ता न करो। और तुम मुझसे और सवाल भी मत पूछो।"

शेर ने वॉग सायो से फिर कहा — "मेरे मुँह में हाथ डालो और वहॉ जो कुछ भी हो निकाल लो।"

वॉग सायो ने शेर के मुँह में हाथ डाला और उसके मुँह में से चॉदी का एक टुकड़ा निकाल लिया। उसने शेर को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

शेर बोला — "अभी मुझे धन्यवाद मत दो। अभी तो मेरे मुँह में बहुत कुछ है। तुम इसमें से जितना चाहो निकाल लो।"

वॉग सायो ने उस शेर के मुँह में फिर से हाथ डाला तो मुट्ठी भर कर सोने चॉदी के टुकड़े निकाल लिये। उसने उनको सावधानी से अपने थैले में रख लिया जो उसके पैरों के पास ही पड़ा हुआ था।

शेर ने अपना मुँह खूब चौड़ा खोल रखा था इससे वॉग सायो उसके मुँह में से और भी बहुत कुछ निकाल सकता था पर उसने अब तक जितना निकाल लिया था वह उससे सन्तुष्ट था।

वॉग सायो अपना यह पैसा अपने बड़े भाई को भी देना चाहता था सो वह अपने घर की तरफ लम्बी यात्रा पर चल दिया। जब वह अपने भाई के घर पहुँचा तो वह इतना खुश था कि वह उसके घर में बिना दरवाजा खटखटाये ही अन्दर चला गया और सोने चॉदी का वह थैला उसके पैरों अपने भाई के पैरों के पास पलट दिया।

जैसे ही उसने वह थैला खाली किया और उसको शेर की कहानी सुनायी तो उसके बड़े भाई ने उसको उसकी गरदन से पकड़ लिया और उससे उस मन्दिर का पता पूछा।

वॉग सायो ने जैसे ही उसका पता बताया वॉग चुंग दरवाजे से बाहर भाग गया और अँधेरी गलियों में गुम हो गया। वह भी जैसे उसका भाई अनजाने शहरों और गॉवों से होता हुआ वहॉ पॉचवें दिन वहॉ पहुँचा था वह भी पॉचवें दिन उस मन्दिर में पहुँच गया।

खजाने का लालची वह मन्दिर के ऑगन की तरफ दौड़ा और जा कर उस पत्थर के शेर से चिल्ला कर बोला — "अपना मुँह खोलो। अपना मुँह खोलो।" पर शेर न तो कुछ बोला और न ही उसने अपना मुँह खोला।

इस पर वॉग चुंग को गुस्सा आ गया। उसने मन्दिर की दीवार के पास पड़ा एक पत्थर उठा लिया और उसे घुमा कर शेर के मुँह पर मारा। जैसे ही वह पत्थर शेर के चेहरे पर लगा तो वह दर्द से दहाड़ा और उसने अपना मुँह खोल दिया।

वॉग चुंग ने भी तुरन्त ही उसके मुँह में नीचे तक अपना हाथ डाल दिया। इससे पहले कि शेर अपना मुँह बन्द करता उसने उसके मुँह में से काफी पैसा निकाल लिया।

जैसे ही वह अपना निकाला हुआ पैसा अपने थैले में रख कर उस थैले का मुँह बॉध रहा था कि शेर को बोलने का मौका मिल गया।

वह बोला — "तुमने काफी सामान ले लिया है। मैं हमेशा के लिये अपना मुँह खुला नहीं रख सकता और तुम्हारे पास तुम्हारी ज़िन्दगी के लिये अब काफी पैसा है।"

इतना कह कर शेर अपना मुँह बन्द करने लगा पर इससे पहले कि शेर अपना मुँह बन्द करता वॉग चुंग ने उसके मुँह में अपना हाथ एक बार और डाल दिया।

पर इस बार शेर ने अपना मुँह बन्द कर लिया और उसकी बाँह उसके मुँह में फँस कर रह गयी। अब वाँग चुंग कितनी भी ज़ोर से अपना हाथ उसके मुँह से खींच रहा था पर शेर का मुँह ही नहीं खुल रहा था।

वाँग चुंग सहायता के लिये बहुत चीखा चिल्लाया पर उसकी चीख तेज़ हवा की आवाज में दब गयी जो अभी अभी चल निकली थी।

जल्दी ही आसमान में बारिश के बादल छा गये और एक एक दो दो मिनट बाद बिजली चमकने लगी। आखिर तूफान आ गया। बहुत ज़ोर की बारिश होने लगी और पानी मन्दिर की नालियों से हो कर जमीन पर नदियों की तरह बहने लगा।

वाँग चुंग ने अपने दूसरे हाथ से पैसे का थैला सँभाला और फिर से अपना हाथ शेर के मुँह से निकालने की कोशिश की पर उसके डर का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि बारिश से भीग कर उसका वह थैला साइज़ में छोटा होता जा रहा था। उसके थैले का सोना चाँदी उस बारिश के पानी से भीग कर पिघल कर धरती पर बहा जा रहा था।

आखिर वह तूफान थमा और रात हो गयी पर शेर उसका हाथ अपने मुँह में लिये हुए नहीं थका था।

उधर जब वाँग चुंग कई दिन तक घर नहीं आया तो उसकी पत्नी उसको ढूँढने निकली। एक हफ्ता ढूँढने के बाद उसने वाँग

चुंग को शेर के सहारे बेहोश सा बैठा हुआ पाया। उसका हाथ अभी भी शेर के मुँह में फँसा हुआ था।

उसने आ कर अपने पति से पूछा कि उसको वह पैसा कैसे तो मिला और कैसे खो गया। जब वॉग चुंग अपनी पत्नी को यह सब बता रहा था तो पत्थर का शेर चुपचाप सब सुन रहा था।

वॉग चुंग की पत्नी ने पूरी कहानी सुनने से पहले ही नीचे से एक पत्थर उठाया और शेर के सिर पर दे मारा। पत्थर तो शेर के सिर से टकरा कर टूट गया पर शेर के सिर पर उस पत्थर का कोई असर नहीं पड़ा।

यह देख कर वॉग चुंग चिल्लाया — "ऐसा नहीं करो। तुम अपने ऐसे बरताव से हालात और खराब कर दोगी और वह शेर मुझे यहॉ कैद कर के रखने के लिये और ज़्यादा पक्का इरादा कर लेगा।

अगर वह चाहता तो मेरा हाथ अपने दॉतों से कुचल कर उसका बिल्कुल चूरा ही कर देता परन्तु उसने ऐसा किया नहीं इसलिये हमको बस अब समय का इन्तजार करना चाहिये। तुम जाओ और वॉग सायो को ढूँढ कर लाओ। शायद वही शेर को अपना मुँह खोलने के लिये राजी कर सके।"

वाग चुंग की पत्नी मुँह फुला कर वॉग सायो को ढूँढने चल दी। वह वॉग सायो को ढूँढने के लिये अपने घर वापस आयी। सारे

शहर में ढूँढने पर भी वह उसको कहीं नहीं मिला। वह तो अपने खजाने के साथ पहले ही वहाँ से चला गया था।

अब वाँग चुंग की पत्नी ऐसे किसी आदमी को नहीं जानती थी जो उसके पति को उस शेर से आजाद करा सकता। सो अगले तीन महीनों के लिये उसने उस मन्दिर के पास के गाँव में एक कमरा किराये पर ले लिया और रोज अपने पति को खाना खिलाने के लिये वह वहीं से जाती रही।

तीन महीने बाद उनका बचा हुआ पैसा भी खत्म हो गया और वह अपने पति को केवल चावल के पुराने बन[60] ही खिला सकी।

वाँग चुंग अब इतना पतला और कमजोर हो चुका था कि वह अब अपने आप खाना भी नहीं खा सकता था। उसकी पत्नी उसको बच्चे की तरह खाना खिलाती फिर बचा हुआ खाना खुद खाती।

यह सब देख कर उसको रोना आ गया।

तभी वह किसी के ज़ोर के हँसने की आवाज सुन कर कुछ होश में आयी। यह हँसी की आवाज शेर के मुँह से आयी थी। जैसे ही शेर हँसा तो उसका मुँह खुला, और उसका मुँह खुला तो वाँग चुंग का हाथ उसके मुँह से छूट गया।

शेर गरज कर बोला — "तुमने अपना सबक सीख लिया? मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि अगर तुम मेरा ख्याल रखोगे तो मैं भी तुम्हारा ख्याल रखूँगा।"

[60] Bun – a kind of bread in the form of round balls

उस दिन के बाद से इन दोनों पति पत्नी ने वॉग सायो का छोड़ा हुआ खेत ले लिया। मन्दिर का ऑगन साफ किया। वहॉ की जमीन की सफाई की। मन्दिर में भेंटें चढ़ायीं और रोज शेर के पैरों पर फूल चढ़ाये।

उसके बाद शेर फिर कभी नहीं बोला पर उनकी देखभाल के बदले में उसने उनके खेत को हमेशा हरा भरा रखा।

14 दुखी बोगोटिर[61]

एक बहुत छोटे से गॉव में, बस मुझसे यह मत पूछो कि कहॉ पर, पर रूस में ही, दो भाई रहते थे। इनमें से एक भाई अमीर था और दूसरा भाई गरीब था।

अमीर भाई की किस्मत अच्छी थी वह जो कोई भी काम करता उसको उसी में कामयाबी मिलती और उसको फायदा होता। जबकि गरीब भाई कितनी मुश्किलों से कोई काम करता पर उसको उसमें कुछ हासिल नहीं होता।

इस तरह से अमीर भाई और अमीर होता जा रहा था और अब वह एक अमीर आदमियों वाले शहर में चला गया था वहॉ उसने एक बड़ा मकान भी खरीद लिया था।

गरीब भाई अभी भी गरीब था और इतना गरीब था कि अक्सर उसके केबिन में डबल रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं होता था। उसके बच्चे बेचारे बहुत ही दुखी से खाने के लिये चिल्लाते रहते थे।

एक दिन गरीब भाई का धीरज छूट गया और वह अपनी बदकिस्मती की बड़े ज़ोर ज़ोर से रो कर शिकायत करने लगा कि

[61] Woe Bogotir – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book “Folk Tales from the Russian”, by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com as an e-book for free.

वह अब क्या करे। असल में अब उसकी सारी हिम्मत टूट गयी थी और उसका सिर उसकी छाती पर लटक गया था।

सो एक दिन उसने अपने अमीर भाई के घर जाने का और उससे कुछ सहायता माँगने का फैसला किया। वह उसके घर गया और उससे बोला — "भाई मेरे ऊपर दया करो। क्योंकि अब मेरे पास बिल्कुल भी पैसे नहीं है।"

अमीर भाई बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। हम लोग कुछ ऐसे काम जरूर कर सकते हैं। हमारे पास पैसा है। पर देखो करने के लिये काम भी बहुत है। तुम मेरे घर पर ही रहो और मेरे काम में मेरा हाथ बँटाओ।"

गरीब भाई राजी हो गया "ठीक है।" कह कर उसने तुरन्त ही अपने अमीर भाई के घर में काम करना शुरू कर दिया। वह उसका बड़ा सा मैदान साफ करता उसके घोड़ों की देखभाल करता कुँए से पानी खींच कर लाता और लकड़ी काटता।

काम करते करते उसे एक हफ्ता बीत गया, दो हफ्ते बीत गये। तब उसके भाई ने उसको पच्चीस कोपैक्स[62] दिये। जिसका मतलब था केवल तेरह सैन्ट। उसने उसको काली राई[63] की एक डबल रोटी भी दी।

[62] Copeck is a monetary unit of Russia and some other countries of the former Soviet Union, equal to one hundredth of a ruble – which means only 13 cents.

[63] Rye is a kind of grain which is used to make bread etc.

गरीब भाई ने उसे ले लिया और नम्रतापूर्वक बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहॉ से अपने बदकिस्मत घर को जाने ही वाला था कि अमीर भाई की आत्मा कचोट उठी और उसने अपने गरीब भाई को वापस बुलाया और कहा — "अरे इतनी जल्दी भी क्या है। कल मेरा जन्मदिन है दावत खा कर जाना।"

यह सुन कर गरीब भाई रुक गया। पर इस खुशी के मौके पर भी उस बदकिस्मत की किस्मत अच्छी नहीं निकली। उसका अमीर भाई अपने मेहमानों और तारीफ करने वालों के स्वागत में बहुत ज़्यादा व्यस्त था जो आते जा रहे थे और कहते जा रहे थे कि वह कितना अच्छा था और वे उसको कितना प्यार करते थे।

अमीर भाई उन सबको उनके प्यार के लिये धन्यवाद दे रहा था और बहुत नीचे झुक झुक कर उन सबको खाने पीने और आनन्द करने के लिये कह रहा था।

उसके पास अपने भाई के लिये कोई समय नहीं था।

जब अमीर भाई ने उसको बिल्कुल ही अनदेखा कर दिया तो गरीब भाई एक कोने में जा कर बैठ गया। उसको न खाने के लिये पूछा गया और न पीने को।

जब सारी भीड़ जाने के लिये तैयार हुई तो जाने से पहले उन खुश लोगों ने अपने मेजबान को सिर झुकाया और बहुत अच्छी अच्छी बातें कहीं। तो गरीब भाई ने भी ऐसा ही किया। बल्कि

उसने उन लोगों से भी ज़्यादा नीचा सिर झुकाया और अपने अमीर भाई को और ज़्यादा धन्यवाद दिया।

मेहमान लोग अपनी अपनी किसानों वाली गाड़ियों में बैठ कर गाते हुए अपने अपने घर चले गये। गरीब भाई भूखा और दुखी अपने रास्ते चल दिया कि तभी उसके दिमाग में एक विचार आया।

"क्या हो अगर मैं भी खुशी का गीत गाऊँ। लोग सोचेंगे कि मैंने भी अपने भाई के घर में कुछ अच्छा समय गुजारा और मैं भी अब अपने घर खुशी खुशी जा रहा हूँ।"

उसने अपना गाना शुरू किया ही था कि वह तो बेहोश हो कर नीचे गिरने ही वाला था क्योंकि उसने अपने पीछे साफ साफ अपनी ही धुन किसी दूसरे की आवाज में चीखने की आवाज में सुनी।

उसने तुरन्त ही अपना गाना रोक दिया तो उस आवाज ने भी गाना रोक दिया। उसने फिर गाना शुरू किया तो उस आवाज ने भी गाना शुरू कर दिया।

गरीब भाई अपने बराबर में देख कर चिल्लाया — "कौन है वहाँ, तुरन्त बाहर आओ।"

"हा हा हा हा।" एक राक्षस[64] वहाँ फटे कपड़े पहने प्रगट हुआ पतला सा पीला सा बिल्कुल एक ढाँचे जैसा।

वह बेचारा गरीब आदमी उसे देख कर डर गया पर हिम्मत से उसने क्रास का निशान बनाया और बोला — "तू कौन है?"

[64] Translated for the word "Monster"

वह बोला — "मैं "बहुत ज़्यादा दुखी"[65] हूँ। मैं एक रूसी हीरो हूँ। मेरा नाम दुखी बोगोटिर[66] है। मैं सब कमजोर लोगों पर दया करता हूँ। मुझे तुझ पर भी दया आती है। मैं चलते चलते तेरी भी सहायता करूँगा।"

"ठीक है ओ बहुत ज़्यादा दुखी। चलो हम लोग एक दूसरे की बाँह में बाँह डाल कर चलते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है इस दुनियाँ में मेरा और कोई दोस्त ही नहीं है।"

राक्षस हँस कर बोला — "चल सवारी करते हैं ओ भले आदमी। मैं हमेशा तेरा वफादार साथी रहूँगा।"

"धन्यवाद पर हम सवारी किस पर करेंगे?"

"मुझे तेरा तो पता नहीं कि तू किस पर सवार होगा पर मैं तुझ पर सवारी करूँगा।" कह कर वह उस बदकिस्मत आदमी के कन्धों पर बैठ गया।

अब उस बेचारे गरीब आदमी के अन्दर तो ताकत ही नहीं थी कि वह उसको अपने कन्धे पर से उतार फेंके। वह बेचारा बहुत ज़्यादा दुखी को अपने कन्धे पर बिठा कर अपने रास्ते पर रेंगता हुआ सा चलता रहा।

[65] Translated for the words "Bitter Woe"

[66] Woe Bogotir

वह गरीब आदमी तो बेचारा बहुत धीरे से चल पा रहा था पर बहुत ज़्यादा दुखी गाता हुआ सीटी बजाता हुआ उसको चाबुक मारता हुआ चला जा रहा था।

जब भी गरीब आदमी एक लम्बी साँस भरता तो बहुत ज़्यादा दुखी पूछता — "मास्टर इतने दुखी क्यों हो। मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें एक गीत सिखाता हूँ। यह मेरा बहुत प्यारा छोटा सा गीत है —

मैं बहादुर बहुत ज़्यादा दुखी हूँ मैं बहादुर बहुत ज़्यादा दुखी हूँ
जो मेरे साथ रहता है उसके दुख उसके काबू में रहते हैं
और जब पैसा नहीं होता तो मैं उसके लिये सोना ढूँढ लेता हूँ

ध्यान रखना मास्टर। तुम्हारे पास पच्चीस कोपैक्स हैं। चलो चल कर थोड़ी सी शराब खरीदते हैं। थोड़ा सा आनन्द मनाते हैं।"

गरीब आदमी ने उसकी बात मान ली। वे गये और उन्होंने सारे पैसों की शराब खरीद ली। शराब पीने के बाद यह बदकिस्मत आदमी बहुत ज़्यादा दुखी को अपने कन्धे पर लादे लादे अपने घर आया।

घर में उसकी पत्नी दुखी थी। उसके बच्चे भूखे थे और रो रहे थे। पर वह बहुत ज़्यादा दुखी और शराब के असर में गा रहा था और नाच रहा था।

अगले दिन बहुत ज़्यादा दुखी ने एक लम्बी साँस भरी और बोला — "मुझे पीने की इच्छा हो रही है चलो चल कर पीते हैं।"

गरीब आदमी बोला — "पर मेरे पास पैसे नहीं है।"

"क्या तुम मेरा बताया गीत भूल गये हो? चलो तुम्हारे खेती के यन्त्र बेच कर उनके पैसे से शराब पीते हैं और कुछ अच्छा समय बिताते हैं।"

"ठीक है।"

बेचारा गरीब आदमी उसको मना करने की हिम्मत भी नहीं कर सका और सबसे ज़्यादा दुखी बोगोटिर उसका मालिक बन बैठा। वे एक शराब की दूकान पर गये वहॉ जा कर शराब पी गाया और कुछ समय अच्छे से गुजारा।

अगले दिन सबसे ज़्यादा दुखी ने फिर एक लम्बी सॉस भरी ओर बोला "चलो चल कर पीते हैं। कुछ समय अच्छे से बिताते हैं। अब की बार हम अपने आपको छोड़ कर सब बेच देते हैं।"

गरीब आदमी ने समझ लिया कि बस अब तो अपनी बरबादी ही है सो उसने सबसे ज़्यादा दुखी को धोखा देने का निश्चय किया।

सो वह बोला — "मैंने एक बार अपने बड़े बूढ़ों से सुना था कि गॉव के पीछे घने जंगल के पास एक खजाना गड़ा है। पर वह खजाना एक बहुत बड़े भारी पत्थर के नीचे दबा है। वह पत्थर इतना भारी है कि एक आदमी से तो हिल भी नहीं सकता।

अगर हम दोनों मिल कर उस पत्थर हटाने में कामयाब हो जायें यानी तुम और में तो ओ सबसे ज़यादा दुखी बोगोटिर तो हम उस पैसे से खूब पी सकते हैं और अच्छा समय गुजार सकते हैं।"

बोगोटिर चिल्लाया — "चलो चलो जल्दी करो। सबसे ज़्यादा दुखी तो अभी इतना ताकतवर है कि पत्थर हटाने से भी ज़्यादा मुश्किल काम कर सकता है।"

सो वे गॉव के पीछे एक चौराहे की तरफ गये तो वहॉ जा कर उन्होंने एक बहुत बड़ा पत्थर देखा। वह पत्थर इतना भारी लग रहा था कि उसको हिलाने के लिये कम से कम पॉच छह किसान तो चाहिये। पर हमारे गरीब आदमी ने अपने साथी बहुत ज़्यादा दुखी बोगोटिर के साथ उसको तुरन्त ही हटा लिया।

पत्थर हटा कर उन्होंने उसके नीचे देखा तो उसके नीचे एक गड्ढा था – अॅधेरा गहरा गड्ढा। उस गड्ढे की तली में कुछ चमक रहा था।

किसान ने दुखी से कहा — "ओ बहादुर दुखी अब तुम इसके अन्दर कूदो और इसका सोना मुझे बाहर निकाल कर फेंको। तब तक मैं पत्थर पकड़ता हूॅ।"

दुखी गड्ढे के अन्दर कूद गया और फिर बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "मैं बता रहा हूॅ मास्टर कि सोने का तो यहॉ कोई अन्त ही नहीं है। यहॉ तो सोने से भरे बीस से भी ज़्यादा बरतन हैं।" और दुखी ने एक बरतन उस गरीब आदमी को पकड़ा दिया।

गरीब आदमी ने जल्दी से वह बरतन दुखी से लिया और अपने कमीज के अन्दर छिपा लिया और वह भारी पत्थर उसकी पुरानी जगह खिसका दिया।

इस तरह वह सबसे ज़्यादा दुखी उस गड्ढे के अन्दर ही रह गया और किसान ने सोचा कि मेरे साथी के लिये यही जगह ठीक है क्योंकि ऐसे साथी के साथ तो सोना भी कड़वा लगेगा।

सो उस चालाक आदमी ने क्रास का निशान बनाया और जल्दी जल्दी वहॉ से घर की तरफ चल दिया।

अब तो वह एक नया आदमी बन गया था हिम्मतवाला नम्र और मेहनती। उसने अब फलों का एक बागीचा खरीद लिया था। अपना घर भी नया करवा लिया था। और एक नया व्यापार भी शुरू कर दिया था।

अब वह बहुत कामयाब हो गया था। एक साल के अन्दर अन्दर उसने बहुत पैसा कमा लिया था। पुरानी झोंपड़ी की जगह अब उसने एक नया केबिन बनवा लिया था।

एक सुन्दर दिन वह अपने भाई के बारे में जानने के लिये अपनी पत्नी और बच्चों के साथ शहर गया ताकि वह उसको अपने घर उस दावत में बुला सके जो वह अपने नये घर में देने वाला था।

अमीर भाई बोला — "यह तो कुछ मजाक सा लगता है। ओ बेवकूफ जेब में एक रूबल के बिना भी तू अमीरों की नकल करता है।" और यह कह कर उसका अमीर भाई हॅसता रहा हॅसता रहा।

पर वह साथ में यह भी सोचता रहा कि उसके गरीब भाई के साथ ऐसा कैसे हुआ कि वह इतनी जल्दी अमीर बन गया सो वह तुरन्त ही अपने गरीब भाई के नये घर गया।

उसको तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसका वह गरीब भाई तो बहुत अमीर हो गया था। शायद उससे भी ज़्यादा। उसके घर की हर चीज़ में पैसा बोल रहा था।

गरीब भाई ने अपने अमीर भाई और उसके परिवार का बहुत ही नम्रता से स्वागत किया और बहुत अच्छी तरह से खातिरदारी की। उसने उनको बहुत अच्छा खाना खिलाया और शहद पीने को दिया। सब लोग बहुत देर तक बातें करते रहे।

गरीब भाई ने दुखी के बारे में अपने अमीर भाई को सब बता दिया कि उसने कैसे उसको धोखा देने का निश्चय किया था और फिर कैसे उस बोझे से बच कर वह एक खुश आदमी बना।

यह सब सुन कर अमीर भाई की उत्सुकता बढ़ती गयी। उसने सोचा "क्या वह बेवकूफ है कि इतने सारे बरतनों में से वह केवल एक ही बरतन ले कर आया। वह तो वाकई बेवकूफ है बिल्कुल ही बेवकूफ। अगर किसी के पास पैसा है तो वह दुखी भी बुरा नहीं है।"

सो तुरन्त ही उसने उस पत्थर की खोज में जाने का, उसको हटाने का, सारे खजाने को लेने का और दुखी बोगोटिर को अपने भाई के पास वापस भेजने का विचार बनाया।

जितना जल्दी इसको सोचा गया उससे कहीं ज़्यादा जल्दी कर लिया गया। अमीर भाई ने अपने गरीब भाई को विदा कहा और वहॉ से चला गया।

पर वहॉ से वह अपने घर नहीं गया वह जल्दी से पत्थर की तरफ भागा। उसको पत्थर तो मिल गया पर उसको हटाने के लिये उसको बहुत मेहनत करनी पड़ी।

जैसे ही उसने उसको बहुत थोड़ा सा हटाया कि उसने तुरन्त ही उसके नीचे देखा। लगा कि दुखी बोगोटिर उसका इन्तजार ही कर रहा था वह कूद कर बाहर आ गया और उसके कन्धे पर बैठ गया।

अमीर आदमी को वह बोझ लगा तो उसके मुॅह से निकला "ओह कितना भारी बोझ है।" तो देखा तो उस राक्षस को अपने कन्धे पर बैठा पाया।

वह राक्षस उसके कान में फुसफुसा रहा था "तू तो बहुत होशियार निकला। तू मुझे उस गड्ढे में मरने के लिये छोड़ गया। पर अब मेरे प्यारे अबकी बार तू मुझसे छुटकारा नहीं पा सकता। अब हम साथ साथ रहेंगे।"

अमीर आदमी बोला — "ओ बेवकूफ दुखी, वह मैं नहीं था जो तुझे इस पत्थर के नीचे छोड़ गया था वह तो मेरा भाई था तू उसी के पास जा।"

पर नहीं वह दुखी तो उसके भाई के पास नहीं जायेगा। वह राक्षस तो बस फिर हॅसता ही रहा हॅसता ही रहा। उसने अमीर आदमी से कहा — "एक ही बात है। अबसे हम एक दूसरे के साथी रहेंगे।"

अमीर आदमी उस बदकिस्मती देने वाले राक्षस का भारी बोझ उठाये हुए अपने घर चला गया। उस राक्षस की वजह से उसका सारा पैसा चला गया।

उसके भाई के सिवाय कौन जानता था कि उस दुखी से छुटकारा कैसे पाया जाये। और वह अब तक अमीर था।

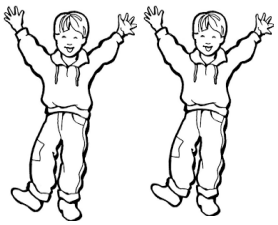

15 दुख[67]

यह कहानी इससे पहले वाली कहानी "दुखी बोगोटिर" का दूसरा रूप है। बहुत ज़्यादा अलग नहीं है यह उससे। बस इसका अन्त सुखदायी है।

एक समय की बात है कि एक बहुत ही गरीब गॉव में दो किसान रहते थे। वे दोनों सगे भाई थे। एक भाई गरीब था और दूसरा भाई अमीर था।

उनमें से अमीर भाई शहर में जा कर बस गया। वहॉ उसने अपना एक बढ़िया सा मकान बनवा लिया और एक सौदागर बन गया। जबकि गरीब भाई के पास खाने के लिये रोटी के टुकड़े भी नहीं होते थे।

उसके बच्चे बेचारे भूखे रोते रहते और खाना मॉगते रहते। सुबह से शाम तक वह बेचारा मेहनत करता पर उससे उसका पूरा नहीं पड़ता।

एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा — "मैं अपने भाई के पास कुछ मॉगने के लिये शहर जा रहा हूँ।"

[67] Sorrow – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916.
Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com as an e-book for free.

सो वह शहर आया और अपने भाई के पास गया और बोला — "हम लोग बहुत दुखी हैं। मेहरबानी कर के हमारी सहायता करो। मेरी पत्नी और बच्चे घर में भूखे हैं।"

बड़ा भाई बोला — "अगर तुम मेरे पास इस हफ्ते काम करो तो मैं तुम्हारी सहायता कर दूँगा।"

अब यह बेचारा क्या करता। काम करने के लिये तैयार हो गया। उसने उसका ऑगन बुहारा। घोड़ों की देखभाल की। उसके घर में पानी भर कर लाया। लकड़ी काटी।

एक हफ्ते बाद बड़े भाई ने उसको एक डबल रोटी दी — "यह लो अपनी मेहनत की मजदूरी।"

गरीब भाई ने उसे धन्यवाद दिया उसको सिर झुकाया और अपने घर जा ही रहा था कि बड़े भाई ने उससे कहा — "रुको। कल तुम अपनी पत्नी को साथ ले कर मेरे मेहमान बन कर आना। कल मेरा जन्म दिन है।"

"ओह भाई मैं कैसे आ सकता हूँ। जैसा कि तुम जानते हो सौदागर लोग तो फ़र और बूट पहन कर आते हैं। मेरे पास तो केवल पुराने जूते हैं और भूरे रंग का कोट है।"

"कोई बात नहीं। तुम कल आना। मैं तुम्हारे लिये जगह रखूँगा।"

छोटा भाई बोला — "ठीक है बड़े भाई मैं जरूर आऊँगा।" कह कर वह घर चला गया। घर पहुँच कर उसने अपनी पत्नी से कहा कि कल मैं और तुम मेहमान हैं।"

पत्नी बोली — "हमें किसने बुलाया है?"

गरीब भाई बोला — "मेरे भाई ने। कल उसका जन्म दिन है।"

पत्नी बोली — "ठीक है। चलो चलते हैं।"

अगले दिन सुबह उठ कर वे शहर गये। वे अपने बड़े अमीर भाई के दरवाजे पर पहुँचे उसको नमस्ते की और एक बैंच पर जा कर बैठ गये।

मेज पर बहुत सारे मेहमान बैठे हुए थे। घर का मालिक उनकी बहुत अच्छे से खातिरदारी कर रहा था। पर वह अपने छोटे भाई और उसकी पत्नी को भूल गया था। उसने उन्हें कुछ नहीं दिया। वे वहीं बैठे रहे और दूसरे लोगों को खाते पीते देखते रहे।

जब खाना खत्म हो गया तो मेहमान उठे और अपने मेजबान को झुक झुक कर धन्यवाद देने लगे। गरीब भाई भी उठा और उसने भी बड़े भाई के सामने बहुत झुक कर उसको नमस्ते की। सारे लोग बहुत पिये हुए थे। वे गाने गाते शोर मचाते चले जा रहे थे।

पर यह गरीब भाई खाली पेट ही वापस जा रहा था। उसने अपनी पत्नी कहा — "हमको भी कोई गीत गाना चाहिये।"

पत्नी बोली — "अरे बेवकूफ। दूसरे लोग गाते हुए जा रहे हैं क्योंकि उन्होंने बहुत अच्छा खाना खाया है। उनका पेट भरा हुआ है। हम गाना क्यों गायें?"

"क्योंकि मैं अपने भाई के जन्म दिन पर उसका मेहमान था और मुझे इस तरह से चुपचाप जाते हुए शरम आ रही है। अगर मैं गाऊँगा तो लोग सोचेंगे कि उसने मेरी भी बहुत अच्छी तरह से खातिरदारी की है।"

पत्नी गुस्से से बोली — "तुम्हें गाना हो तो तुम गाओ मैं नहीं गाऊँगी।"

सो गरीब किसान ने गाना शुरू कर दिया। वह गाता रहा गाता रहा तभी उसको दो आवाजें सुनायी पड़ीं। वह रुक गया और अपनी पत्नी से पूछा — "क्या तुम अपनी पतली सी आवाज में मेरे गाने को सहारा दे रही हो?"

पत्नी अभी भी गुस्से में थी। वह बोली — "तुम क्या सोचते हो कि मैं गा रही हूँ मैं ऐसा कुछ नहीं कर रही।"

"तो फिर वह क्या है?"

पत्नी बोली — "क्या पता। पर तुम गाओ मैं सुन रही हूँ।"

उसने फिर से गाना शुरू कर दिया। पर फिर से दो आवाजें सुनायी पड़ीं सो वह खड़ा हो गया और बोला — "ओ दुख क्या तुम मेरे गाने में मेरी सहायता कर रहे हो?"

दुख बोला — "हाँ मैं तुम्हारी सहायता कर रहा हूँ।"

गरीब किसान बोला — "तो ठीक है अब हम और तुम दोनों एक साथ गाते हुए चलेंगे।"

दुख बोला — "हॉ मैं अबसे हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा।"

सो किसान तो अपने घर की तरफ चला कि दुख ने उसे एक सराय में चलने के लिये कहा।

किसान बोला — "पर मेरे पास पैसे नहीं हैं।"

"पर ओ किसान तुम्हें पैसे चाहिये किसलिये? तुम्हारे पास अभी भी आधा फ़र है। अभी गरमियॉ आ जायेंगी तो तुम्हें इसकी भी जरूरत नहीं पड़ेगी। हम सराय में जायेंगे और इसे पी जायेंगे।" सो किसान और दुख दोनों एक सराय में गये और वह आधा फ़र उन दोनों ने पी लिया।

अगले दिन दुख फिर से रोने लगा। सो अगले दिन वे फिर से सराय गये और बाकी बचा आधा फ़र भी पी गये। तीसरे दिन दुख बोला कि पिछली रात को पीने की वजह से आज उसके सिर में बहुत ज़ोर का दर्द था इसलिये वह आज भी पीना चाहता था।

किसान बोला — "पर मेरे पास पैसे नहीं हैं।"

दुख बोला — "पैसे की जरूरत ही नहीं है। अपने स्ले[68] और अपनी गाड़ी ले लो। ये हमारे लिये काफी होंगी।"

[68] Sleigh is a wheelless moving vehicle which is used to go on ice in snowy countries. See its picture above. This drawn by horses or powerful dogs.

उसको कुछ कहने सुनने से कोई फायदा नहीं था। किसान दुख से बच नहीं पा रहा था। सो उसने अपनी स्ले और गाड़ी ली और उसको सराय की तरफ ले चला। वे दोनों उसको भी पी गये।

अगले दिन सुबह दुख फिर से कराहने लगा और किसान को फिर से पीने पर मजबूर किया तो किसान ने अपना हल बेच दिया।

इस तरह पीते पीते एक महीना निकल गया। दुख ने उसका सारा सामान पी लिया था। उसका मकान एक पड़ोसी को गिरवी रख दिया था और उससे आया सारा पैसा सराय वाले को दे दिया था।

दुख एक बार फिर आया तो किसान ने कहा — "नहीं दुख। अब और नहीं।"

दुख बोला — "अभी तुम्हारी पत्नी के पास दो सैरैफ़ान[69] हैं। उसके लिये एक काफी होगा।"

सो किसान ने अपनी पत्नी का एक सैरैफ़ान लिया और उसको भी पी गया। फिर उसने सोचा "अब मेरे पास कुछ भी नहीं बचा – न घर न कपड़े न मेरे पास कुछ है और न मेरी पत्नी के पास कुछ है।"

अगली सुबह जब दुख उठा तो उसने देखा कि अब वह किसान से और कुछ नहीं ले सकता था। सो वह बोला — "मास्टर। अब

[69] Sarafan – a type of Russian dress. It is a long jumper worn by girls and women forming a part of folk costume. Till 20th century it was very common. Its first mention was made in 1376. It can be knee-length or full length. See its picture above.

तुम्हारी क्या इच्छा है? अब तुम अपने पड़ोसी के पास जाओ और उससे दो बैल और एक गाड़ी उधार ले आओ।"

किसान अपने पड़ोसी के पास गया और बोला — "क्या आप मुझे थोड़ी देर के लिये अपने दो बैल और एक गाड़ी उधार दे सकते हैं?"

पड़ोसी ने पूछा — "तुम उनका क्या करना चाहते हो?"

"मैं उससे जंगल से लकड़ी काट कर लाऊँगा।"

"ठीक है ले जाओ पर ध्यान रखना कि उसमें बहुत सारी लकड़ी मत भर लेना।"

"नहीं नहीं बिल्कुल नहीं।"

किसान ने उसके बैल और गाड़ी ली और दुख के साथ उसको हॉक कर मैदान की तरफ ले गया। वहॉ पहुँच कर दुख बोला — "क्या तुम इस मैदान में इस बड़े पत्थर को जानते हो?"

"हॉ जानता हूँ।"

"तब तुम अपनी गाड़ी उस पत्थर के पास ले चलो।"

सो वे लोग उस पत्थर के पास आये। वहॉ आ कर वे दोनों गाड़ी से उतरे। दुख ने किसान से वह पत्थर वहॉ से हटाने के लिये कहा और खुद भी इस काम में उसकी सहायता की। उस पत्थर के नीचे एक गड्ढा था जिसमें सोना भरा हुआ था।

दुख ने पूछा — "अब देखो यहॉ तुम क्या देखते हो? जल्दी से तुम इसे अपनी गाड़ी में भर लो।"

किसान जल्दी ही अपने काम पर लग गया। उसने सारा सोना बाहर निकाल लिया, आखिरी डकैट[70] भी, और उसने देखा कि अब वहाँ कुछ और नहीं था तो उसने दुख से पूछा — "क्या यहाँ पर और सोना नहीं है?"

"मुझे तो कहीं दिखायी नहीं दे रहा।"

"देखो वहाँ उस कोने में कुछ चमक रहा है।"

"नहीं मुझे तो कुछ दिखायी नहीं दे रहा।"

"गड्ढे में उतरो तब तुम्हें दिखायी देगा।"

सो दुख गड्ढे में नीचे उतरा और जैसे ही वह गड्ढे में नीचे उतरा तो किसान ने ऊपर से पत्थर फेंक दिया। किसान बोला — "अब मुझे थोड़ा आराम मिलेगा। क्योंकि अगर ओ दुख मैं तुम्हें अपने साथ ले गया तो तुम तो मेरा यह सारा पैसा फिर पी जाओगे।"

किसान वह सोना ले कर अपने घर चला गया। सारा सोना उसने अपने घर के नीचे वाले कमरे में रख दिया और बैल और गाड़ी अपने पड़ोसी को वापस लौटा दी।

अब उसने अपना घर फिर से बनाना शुरू किया। बहुत सारी लकड़ी खरीदी बड़ा सा मकान बनाया और वह अब अपने भाई से दोगुना अमीर हो गया।

[70] Ducat is the currency used in medieval times. Shakespeare has used this word in his works.

फिर एक दिन वह शहर गया और अपने भाई और भाभी को अपनी जन्म दिन की दावत का न्यौता दिया।

अमीर भाई बोला — "अरे इसका क्या मतलब है। तुम्हारे पास तो खाने को भी नहीं है और तुम दावत देने जा रहे हो?"

छोटा भाई बोला — "हॉ पहले मेरे पास खाने को भी नहीं था पर अब मैं ठीक हूँ, तुम्हारे जैसा।"

"ठीक है मैं आऊँगा।"

अगले दिन अमीर भाई और उसकी पत्नी अपने गरीब छोटे भाई के घर गये तो उन्होंने देखा कि उनके गरीब भाई के पास तो बहुत बड़ा शानदार मकान है – बहुत सारे सौदागरों के मकानों से भी बहुत अच्छा। छोटे भाई ने उनको बहुत अच्छा खाना खिलाया जिसमें कई तरह का मॉस था और कई तरह के पेय थे।

यह देख कर अमीर भाई ने पूछा — "तुम यह तो बताओ कि तुम इतने अमीर बने कैसे?"

किसान ने उसको सब कुछ सच सच बता दिया कि कैसे दुख उसके पीछे पड़ा रहा। फिर कैसे वे दोनों सराय जाते रहे। किस तरह से उसने अपना सब कुछ इसमें गॅवा दिया सिवाय अपनी आत्मा और शरीर के। फिर किस तरह दुख ने उसको मैदान में यह खान दिखायी और फिर किस तरह से उसने दुख से छुटकारा पाया।

यह सुन कर अमीर भाई उससे जलने लगा। उसने सोचा "मैं भी उस मैदान में जाऊँगा और वहॉ से पत्थर हटाऊँगा। दुख मेरे भाई

को मार डालेगा ताकि मेरे सामने वह अपनी अमीरी की शान न बघार सके।"

सो उसने अपनी पत्नी को तो घर छोड़ा और खुद मैदान की तरफ चला गया बड़े पत्थर की तरफ। वहाँ पहुँच कर तुरन्त ही उसने वह पत्थर वहाँ से हटाया और नीचे यह देखने के लिये झुका कि उस पत्थर के नीचे क्या है। जैसे ही वह झुका कि दुख उसके कन्धे पर उचक कर बैठ गया।

दुख चिल्ला कर बोला — "तुम मुझे यहाँ छोड़ जाना चाहते थे जमीन के नीचे इस गड्ढे में? अब मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा।"

"सुनो सुनो ओ दुख। मैं वह आदमी नहीं हूँ जो तुम्हें यहाँ छोड़ कर गया था।"

दुख बोला — "अगर तुम वह आदमी नहीं थे तो फिर वह कौन था?"

बड़ा भाई बोला — "मेरे भाई मैं तो तुम्हें आजाद करने आया हूँ।"

दुख बोला — "नहीं तुम झूठ बोल रहे हो। तुम मुझे फिर धोखा दे रहे हो। इस बार मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।"

सो दुख उस सौदागर के कन्धे पर उसको ज़ोर से पकड़ कर बैठ गया। अमीर भाई को दुख को अपने साथ अपने घर ले कर आना पड़ा और उसकी गृहस्थी बुरी से और बुरी हालत में पहुँच गयी।

दुख उसको रोज सुबह से बीयर पीने के लिये कहता रहता और इस तरह से उसकी बहुत सारी जायदाद इसी में चली गयी। सौदागर ने सोचा कि यह ज़िन्दगी तो बहुत खराब है। अब मैं और नहीं सह सकता। मैंने दुख की बहुत सेवा की है। अब मुझे अपने को उससे दूर करना पड़ेगा। पर कैसे?

उसने सोचा और सोचा और सोच लिया कि उसे क्या करना है। वह अपने पीछे वाले कम्पाउन्ड में गया। वहाँ जा कर उसने ओक की लकड़ी के दो तख्ते काटे। एक नया पहिया लिया और उसकी एक गाड़ी सी बना ली।

फिर वह दुख के पास गया और उससे बोला — "अब तुम इस पर लेट जाओ।"

दुख बोला — "पर मैं यहाँ करूँगा क्या। अब इसमें करने को और क्या है?"

अमीर भाई बोला — "चलो कम्पाउन्ड में चलो लुका छिपी का खेल खेलते हैं।"

यह दुख को अच्छा लगा सो वह बाहर चला गया। पहले बड़ा भाई छिपा और दुख ने उसे तुरन्त ही ढूँढ लिया। अब दुख को छिपना था। वह बोला — "तुम मुझे आसानी से नहीं ढूँढ पाओगे। मैं तो किसी दरार में भी छिप सकता हूँ।"

सौदागर बोला — "तुम तो इस पहिये में भी नहीं छिप सकते फिर तुम दरार में कैसे छिप सकते हो?"

दुख बोला — "तुमने क्या कहा कि मैं इस पहिये में नहीं छिप सकता? तुम देखो कि मैं किस तरीके से इस पहिये में छिप सकता हूँ।"

सो दुख उस पहिये में जा कर छिप गया। सौदागर ने दूसरा तख्ता लिया और उससे उसको दूसरी तरफ से धकेल दिया और पहिये को पानी में फेंक दिया। फिर वह पहले की तरह से सुख से रहने लगा।

16 बतखों का बॅटवारा[71]

रूस की यह लोक कथा एक बहुत ही अक्लमन्दी की और बहुत ही मजेदार लोक कथा है।

यह बहुत दिन पहले की बात नहीं है जब एक अमीर रूसी भला आदमी दो किसानों के मकानों के बीच वाले मकान में रहता था।

उनमें से एक किसान के पास इतने सारे रूबल[72] थे कि वह बहुत अच्छी तरह से रह सकता था जबकि दूसरे किसान के पास इतने कम रूबल थे कि वह अपने परिवार का गुजारा भी बहुत मुश्किल से कर पाता था।

गरीब किसान का परिवार भी बहुत बड़ा था और उसका खेत छोटा था। इसके बाद भी उसको जो कुछ भी काम अपने खेत पर करना चाहिये था उसको करने में उसको बहुत देर लग जाती थी।

उसके बच्चे उसकी कोई भी सहायता कराने के लिये बहुत छोटे थे और उसकी पत्नी का सारा दिन उन बच्चों की देखभाल में ही निकल जाता था।

---

[71] Creative Division: the Peasant and the Geese – a folktale from Russia, Asia.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=57
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[A version of this story can be found in Jane Yolen's "Favorite Folktales from Around the World".
A more earlier version can be located in "The Runaway Soldier and Other Tales of Old Russia" as told by Fruma Gottschalk in 1946.]

[72] Ruble – or Rouble name of the Russian currency, such as Rupayaa of India, Dollar of USA…

उसके पास इतना पैसा भी नहीं था कि वह किसी को अपने साथ काम करने के लिये नौकर रख लेता। इसलिये उसको सुबह से ले कर शाम तक काम करना पड़ता। बल्कि कभी कभी तो रात को भी काम करना पड़ता।

हर रोज रात को जब अँधेरा हो जाता तो दोनों पति पत्नी अपनी परेशानियों पर बात करते और उनका हल निकालने की कोशिश करते पर कुछ सोच न पाते।

एक रात पति ने पत्नी से कहा — "अब हमारे पास केवल इतना ही अनाज है कि हम बच्चों को सुबह को उसका दलिया बना कर खिला सकें। बतख को खिलाने के लिये तो हमारे पास कुछ भी नहीं है।"

हर हालत में खुश रहने वाली पत्नी बोली — "यह अच्छा है। क्योंकि हमारे पास बतख में डालने के लिये नमक भी नहीं है और न ही उसमें भरने के लिये रोटी है इसलिये हमारे बच्चे अपनी सुबह भरे पेट शुरू करेंगे और हमको कल सुबह तक बतख की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।"

सुबह किसान की पत्नी को एक विचार आया तो वह किसान से बोली — "क्योंकि हमारे पास बतख के लिये खाना नहीं है, नमक और रोटी भी नहीं है तो क्यों न हम उसको अपने पड़ोसी को दे दें। हो सकता है कि वह हमको उसके बदले में ही कुछ दे दे।"

किसान अपनी पत्नी से बोला — "तुम हमेशा की तरह से बहुत ही चतुर हो।" कह कर वह बतख को अपनी बगल में दबा कर अपने अमीर पड़ोसी के पास ले चला।

उसका अमीर पड़ोसी अपने बहुत बड़े घर के दरवाजे पर ही खड़ा था। उस किसान को आते देख कर बोला — "आओ आओ। मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?"

उसने सोचा कि उसका गरीब पड़ोसी शायद कुछ पैसे या खाना माँगने आया होगा और उसके लिये वह उसको मना करने वाला था क्योंकि कोई आदमी किसी से पैसे लेकर अमीर नहीं होता।

किसान बोला — "जनाब, मैं आपके लिये एक भेंट ले कर आया हूँ।"

"भेंट? और मेरे लिये? पर तुम तो बहुत गरीब हो। एक गरीब आदमी एक अमीर आदमी को भेंट दे यह ठीक नहीं है।" फिर उसको शर्म आयी कि उसने उस गरीब के बारे में यह सोचा कि वह उससे खाना या पैसा माँगने आया होगा।

अपनी इस शर्म को छिपाने के लिये उसने उस गरीब की भेंट वापस करने की कोशिश करते हुए कहा — "यह तो बहुत छोटी सी बतख है और मेरा परिवार बहुत बड़ा है हम इसका क्या करेंगे।

खाने के लिये मैं हूँ, मेरी एक पत्नी है, दो बेटे हैं, दो बेटियाँ हैं। यह बतख तो हमारे एक बार के खाने के लिये भी काफी नहीं होगी इसलिये अच्छा यही होगा कि तुम इसको वापस ले जाओ।"

गरीब किसान मुस्कुरा कर बोला — "जनाब, अगर आप इस बतख को आज रात को ही पकाने का सोचते हों तो मैं आपको बताता हूँ कि इस बतख को सब लोगों में ठीक से कैसे बाँटा जाये ताकि हर एक को इसका काफी मॉस मिल सके। मैं शाम को आ कर आपको यह बताऊँगा कि इस बतख को कैसे बाँटना है।"

वह अमीर आदमी यह सुन कर यह जानने के लिये बहुत ही उत्सुक हो गया कि देखा जाये वह किसान उस एक बतख को उन छह लोगों में कैसे बाँटेगा। सो वह उस बतख को अन्दर ले गया और अपने रसोइये को उसको पकाने के लिये दे दी।

वह वापस लौट कर किसान के पास आया और बोला — "तुम्हारी भेंट के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। आज शाम को हम तुम्हारी बतख खायेंगे। मैं बतख को हम सबमें बाँटने की होशियारी देखने के लिये तुम्हारा इन्तजार करूँगा।"

सो किसान उस बतख को उस अमीर आदमी को दे कर घर चला गया। वह और उसकी पत्नी सारा दिन अपने खेत और बच्चों के काम में लगे रहे और उस बतख को कैसे उस परिवार में बाँटा जाये इसी बात पर विचार करते रहे।

शाम को खेत से आ कर वह किसान दोबारा नहाया और अपनी सबसे साफ कमीज पहनी और ठीक से कपड़े पहन कर उस अमीर आदमी के घर बतख बाँटने के लिये चल दिया।

उस भले आदमी ने किसान के लिये दरवाजा खोला तो देखा कि वह अपने हाथ मे एक खाली प्लेट और एक तेज़ चाकू लिये खड़ा था।

रसोइये ने बतख को रोटी, अंडे, मसाले और मुशरूम से भर रखा था सो जितनी बड़ी बतख उस किसान ने उस आदमी को दी थी इस समय वह उससे साइज़ में दोगुनी लग रही थी।

मेज पर उस बतख के साथ साथ बहुत सारी सब्जियॉ, सूप और भी बहुत सारा खाने का सामान रखा हुआ था सो अगर वह बतख उस मेज पर न भी होती तो भी वहॉ खाने की कोई कमी नहीं थी।

सच तो यह था कि वहॉ वह खाना देख कर उस किसान के मुँह में पानी भर आया। वहॉ बैठे सभी लोग उस गरीब आदमी के खरचे पर मजा लूटने के लिये बैठे थे।

उस किसान ने अपना चाकू उठा लिया और उस आदमी से कहा — "आप इस परिवार के सरदार हैं इसलिये आपको इसका सिर मिलना चाहिये।" इतना कह कर उसने उस बतख का सिर काट कर आदमी की प्लेट में रख दिया।

फिर उसने उसकी पत्नी से कहा — "आप अपने पति के सामने बैठती हैं इसलिये आपको इसकी पूँछ मिलनी चाहिये।" इतना कह कर उसने उस बतख की पूँछ काटी और उसकी पत्नी की प्लेट में रख दी।

फिर उसने उसके दोनों बेटों से कहा — "तुम दोनों चारों तरफ भागते रहते हो इससे तुम्हारे पैर घिसते हैं इसलिये तुमको बतख के पैरों की जरूरत है।"

इतना कह कर उसने बतख के दोनों पैर काटे और उसके दोनों बेटों को दे दिये।

फिर उसने बतख के दोनों पंख काटे और उनको उस आदमी की दोनों बेटियों की प्लेटों में रखते हुए बोला — "तुम दोनों बिल्कुल देवदूत[73] की तरह लगती हो पर तुम्हारे पास पंख नहीं हैं।

साथ में मुझे यह भी पता है कि जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दोनों उड़ जाओगी और शादी कर लोगी। उस समय के लिये मैं तुमको ये पंख देता हूँ।"

उसके बाद किसान ने तुरन्त खाने के वे कटोरे उठाये जो रसोइये ने वहाँ ला कर रखे थे और उनका खाना बराबर बराबर सबकी प्लेटों में बाँट दिया।

फिर बोला — "अब आप सब देखें कि आप सब लोगों के पास बतख का बराबर का हिस्सा है और प्लेट भर कर खूब खाना है।

और क्योंकि मैं केवल एक गरीब किसान हूँ इसलिये मैं वह ले लेता हूँ जो बच गया है ताकि आप लोगों में इस बात पर झगड़ा न हो कि बचा हुआ कौन लेगा।"

[73] Translated for the word "Angel"

कह कर उसने वहाँ से बतख का सबसे बड़ा हिस्सा, आलू, सब्जियाँ, रोटी आदि उठायीं और दरवाजे की तरफ चल दिया।

एक बतख का इस तरह बँटवारा देख कर वह भला आदमी और उसका परिवार ज़ोर से ठहाका मार कर हँसे बिना न रह सके।

आदमी उस किसान से बोला — "यह तो हमारा सबसे अच्छा मनोरंजन था जो हमने बरसों में नहीं किया। मैं तुमको तुम्हारी इस बतख के बदले में जरूर ही कुछ दूँगा।"

कह कर उसने रूबल भरा एक छोटा सा थैला निकाल कर उस किसान को दे दिया जो उस किसान ने खुशी से ले लिया।

इस तरह वह किसान अपने परिवार के लिये खाना और पैसा दोनों ले कर घर लौटा। इस पैसे से उसने बच्चों के दूध पीने के लिये एक गाय खरीदी और अपना हल चलाने और मशीन घुमाने और गाड़ी खींचने के लिये एक बैल खरीदा।

इन जानवरों की सहायता से अब वह ज़्यादा पैसा कमा सकता था और अपने परिवार के साथ ज़्यादा समय खर्च कर सकता था।

यह कहानी यहीं खत्म हो सकती थी जैसा कि दूसरी कहानियों में होता है जब तक कि एक आदमी की अच्छी किस्मत देख कर दूसरा कोई आदमी जलने वाला न हो।

सो इस कहानी में यह जलने वाला वह दूसरा अमीर किसान था जो उस भले आदमी के दूसरी तरफ रहता था इसलिये अब इस कहानी को आगे बढ़ाते हैं।

उस अमीर किसान ने उस गरीब किसान की नयी गाय और बैल देखे। उसने यह भी देखा कि उसके खेत भी बहुत अच्छे हो रहे हैं और उसका पड़ोसी हमेशा काम करने की बजाय अब अपने बच्चों के साथ खेल भी रहा है तो एक दिन वह इसका राज़ जानने के लिये उसके पास जा पहुँचा।

उसने उस किसान की पत्नी से बहुत ही बुरे ढंग से पूछा — "तुमको गाय और बैल खरीदने के लिये अचानक ये रूबल कहाँ से मिल गये? क्या तुम्हारे परिवार में कोई मर गया है जो तुमको यह सब पैसे दे गया?"

पत्नी बोली — "हे भगवान नहीं नहीं। आप ऐसा न कहें। हमारे परिवार में कोई नहीं मरा।

मेरे पति ने अपने पड़ोसी भले आदमी को खाने के लिये एक बतख दी थी। वह भला आदमी उस बतख को ले कर इतना खुश हुआ कि उसने हमको एक थैला भर कर रूबल दे दिये। हमने वही पैसा तरीके से खर्च कर के अपनी ज़िन्दगी सुधारी है।"

यह सुन कर वह अमीर किसान बहुत परेशान हुआ। वह जल्दी जल्दी घर आया और अपनी पत्नी को अपने पड़ोसी की अच्छी किस्मत के बारे में बताया।

वे दोनों ही उससे जल रहे थे सो दोनों ही किसी ऐसी अच्छी भेंट के बारे में सोचने लगे जिसको वे उस भले आदमी को दे सकें ताकि वह उनको भी सिक्कों का एक थैला दे सके।

उस अमीर किसान ने कहा — "अगर वह अपनी एक पतली सी बतख दे कर उससे एक थैला सिक्के ले सकता है तो हम अपनी पॉचों मोटी बतखें उसको भेंट में दे देंगे। उन बतखों के हमें उससे भी ज़्यादा पैसे मिलेंगे।"

सो उस प्लान के अनुसार उसके अगले दिन ही उस अमीर किसान ने अपने हाथ में एक डंडी ली और वह घर खोला जिनमें वह अपनी बतखें रखता था।

उसने अपनी बतखों के पीछे वह डंडी हिलायी, उनको उस घर में से बाहर निकाला और उन सबको वह उस भले आदमी के घर के दरवाजे पर ले गया।

पहले की तरह से उस भले आदमी ने अपने घर का दरवाजा खोला और उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये?"

अमीर किसान बोला — "मैं आपके लिये ये बतखें भेंट ले कर आया हूँ।"

भला आदमी बोला — "मुझे नहीं लगता कि तुमको मुझे भेंट देनी चाहिये क्योंकि तुम मुझसे गरीब हो।"

अमीर किसान जल्दी से बोला — "पर आपने मेरे पड़ोसी से तो उसकी दी हुई भेंट ले ली है।"

भला आदमी समझ गया कि मामला क्या है। वह जान गया कि यह आदमी उस गरीब आदमी को दिये गये रूबल के थैले से जल रहा है।

सो वह बोला — "ठीक है मैं तुम्हारी भेंट ले तो लेता हूँ और तुमको इसका इनाम भी दे दूँगा पर तुमको इन पॉच बतखों को मेरी छह लोगों के परिवार में न्यायपूर्वक बॉटना पड़ेगा।"

अमीर किसान कुछ सोच कर बोला — "जनाब, मुझे नहीं लगता कि आप इन पॉच बतखों को छह आदमियों में न्यायपूर्वक बॉट सकते हैं।"

भला आदमी बोला — "ठीक है तब हम तुम्हारे उस होशियार दोस्त को बुलवाते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि वह यह काम अवश्य ही ठीक से करेगा।"

यह कह कर उसने अपना एक नौकर उस गरीब किसान के घर उसको लाने के लिये भेज दिया। नौकर किसान को ले कर जल्दी ही आ गया।

अमीर किसान को अभी भी शरम आ रही थी कि वह उन बतखों को जैसा कि उस भले आदमी ने उससे कहा था बॉट नहीं पा रहा था। पर उसको इस बात का विश्वास था कि उसका पड़ोसी भी उन पॉच बतखों को छह आदमियों में न्यायपूर्वक नहीं बॉट सकेगा।

भले आदमी ने उस गरीब किसान से कहा — "पिछली बार तुम ने एक बतख को बहुत ही होशियारी से हम छह लोगों में बॉट दिया था। शायद आज तुम ये पॉच बतखें हम छह लोगों में बॉट सको।"

इस पर उस गरीब किसान ने एक बतख उठायी और उस भले आदमी को दे दी और बोला — "आप और आपकी पत्नी का एक जोड़ा है। इस एक बतख को मिला कर आप अब तीन हो गये।"

फिर उसने एक बतख उठा कर उसके दोनों बेटों को दे दी और बोला — "तुम दोनों भाई भी एक जोड़ा हो सो इस बतख को मिला कर तुम लोग भी तीन हो गये।"

फिर उसने एक बतख उठा कर उसकी दोनों बेटियों को दे दी और बोला — "तुम दोनों प्यारी बेटियॉ भी एक जोड़ा हो। तुमको भी मैं एक बतख देता हूॅ जिसको मिला कर अब तुम भी तीन हो गयी हो।"

अब उसने बची हुई दो बतखें पकड़ कर ऊपर उठा लीं और बोला — "ये दोनों बतखें भी एक जोड़ा हैं। ये बतखें मैं रख लेता हूॅ जिनको मिला कर मैं भी तीन हो जाऊॅगा।

जनाब, आपने देखा कि अब हर एक तीन तीन का एक सैट हो गया। आपकी पॉच बतखें सबमें बराबर बराबर बॅट गयी हैं।"

उसके बॅटवारे का ढंग देख कर वहॉ बैठे सब लोग फिर ज़ोर से हॅस पड़े – सिवाय उस अमीर किसान के जिसके पास अब पॉच बतखें उन बतखों से कम थीं जितनी कि उसके पास पहले थीं।

भले आदमी ने उस गरीब किसान को रूबल का पहले जैसा एक और थैला दिया। पर वह उस अमीर किसान की तरफ पलटा और उसको भी उसकी बतखों के लिये पैसे दिये ताकि वे तीनों अच्छे दोस्त रह सकें।

17 बीयर और रोटी[74]

एक राज्य के किसी प्रान्त में एक अमीर किसान रहता था। उसके पास पैसा भी बहुत था और खाना भी बहुत था। वह अपने गॉव के गरीब किसानों को पैसा उधार पर देता था।

और अगर वह अनाज उधार देता था तो वह उसको अगली गरमियों में पूरा वापस ले लेता था। इसके अलावा उधार लेने वाले को हर तीन पैक[75] पर दो दिन मालिक के खेतों पर काम करना होता था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि चर्च में कोई त्यौहार था सो उस त्यौहार के लिये सारे किसान बीयर[76] बना रहे थे पर उस गॉव में एक किसान ऐसा भी था जो इतना गरीब था कि उसके जितना गरीब वहॉ कोई और गरीब नहीं था।

उस त्यौहार के पहले दिन शाम को वह अपनी पत्नी के साथ अपने छोटे से घर में बैठा हुआ था। वह सोच रहा था "मैं क्या करूँ। सारे भले लोग त्यौहार मनाने की तैयारी में लगे हुए हैं और हमरे घर में रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं है।

---

[74] Beer and Bread – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com as an e-book for free.

[75] Peck is an Imperial and United States customary unit of dry volume, means two dry gallons or four dry quarts. Four pecks (eight gallons) make a Bushel.

[76] Beer is a light liqor.

मैं अमीर आदमी के पास जा सकता हूँ और उससे कुछ उधार ले सकता हूँ पर वह मेरा विश्वास ही नहीं करेगा। सो अब मैं करूँ क्या। मैं तो दिखने में भी बहुत ही गरीब लगता हूँ।"

वह सोचता रहा सोचता रहा फिर अपनी बैन्च से उठा और क्राइस्ट की मूर्ति के सामने जा कर खड़ा हो गया। उसने एक बहुत लम्बी साँस भरी और बोला — "लौर्ड[77] मेरे पापों को माफ करो। क्योंकि मैं तुम्हारे त्यौहार पर तुम्हारी मूर्ति के सामने दिया जलाने के लिये कोई तेल भी नहीं खरीद सकता।"

यह प्रार्थना कर के वह अपनी बैन्च पर आ कर बैठ गया। कुछ देर बाद ही उसके घर एक बूढ़ा आया और बोला — "ओ मास्टर क्या मैं आज की रात यहाँ ठहर सकता हूँ?"

गरीब किसान बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तुम यहाँ आज की रात बिल्कुल ठहर सकते हो पर मेरे घर में रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं है इसलिये मैं तुम्हें कोई खाना नहीं खिला सकता।"

बूढ़ा बोला — "कोई बात नहीं मास्टर। मेरे पास रोटी के तीन टुकड़े हैं और थोड़ा सा माँस है। मुझे बस एक चमचा पानी चाहिये। मैं रोटी का एक टुकड़ा खा कर उसके ऊपर से पानी पी लूँगा। हम लोगों का पेट भर जायेगा।"

[77] Lord means Jesus Christ.

सो वह बूढ़ा बैन्च पर बैठ गया और गरीब किसान से बोला — "मास्टर आप इतने दुखी क्यों हैं? किस बात ने आपको इतना दुखी कर रखा है?"

मास्टर बोला — "मैं दुखी क्यों न होऊॅ बाबा। यह त्यौहार तो भगवान की कृपा है। हम लोग इस त्यौहार के लिये इन्तजार करते रहते हैं। सब भले लोग खुश हैं और खुशियॉ मना रहे हैं पर हमारा घर बिल्कुल साफ पड़ा है। झाड़ू लगी हुई है। मेरे अन्दर और मेरे चारों ओर केवल एक खालीपन है।"

"कोई बात नहीं अब आप खुश हो जायें। आप अमीर किसान के पास जायें और उससे जो आपको चाहिये वह उधार मॉग लाइये।"

गरीब किसान बोला — "नहीं मैं उसके पास नहीं जा सकता। वह मुझे कुछ नहीं देगा।"

बूढ़े ने उससे जिद की — "आप जाइये तो सही। आप उससे तीन पैक माल्ट[78] ले आइये और फिर हम उससे बीयर बनायेंगे।"

गरीब किसान बोला — "पर अब तो बहुत देर हो चुकी है हम अब बीयर कैसे बनायेंगे। त्यौहार तो कल ही है।"

बूढ़ा बोला — "जैसा मैं कहता हूॅ आप वैसा करें। आप अमीर किसान के पास जाइये और उससे तीन पैक माल्ट ले आइये। वह

[78] Malt is the germinated seed of some grain, normally of barley which is germinated first the its germination process is stopped to make its malt drink. This process is called Malting.

आपको वह एकदम ही दे देगा। वह आपको मना कर ही नहीं सकता। कल आपको उसकी बीयर मिल जायेगी – इतनी बढ़िया बीयर कि वैसी बीयर आपको अपने सारे गॉव में नहीं मिलेगी।"

अब वह गरीब किसान बेचारा क्या कहता। वह उठा अपना एक थैला लिया और उस अमीर किसान के पास चला गया। वह उस अमीर आदमी के घर पहुँचा।

उसने उसको सिर झुकाया और उसको अपना और अपने पिता का नाम बताया। फिर उसने उससे तीन पैक माल्ट यह कह कर उधार मॉगा कि वह कल के लिये उससे बीयर बनायेगा।

अमीर किसान बोला — "तुमने इससे पहले इस बारे में क्यों नहीं सोचा? अब तुम यह कैसे करोगे क्योंकि यह तो त्यौहार की शाम है। इतनी देर में तुम्हारी बीयर कैसे बनेगी?"

गरीब किसान बोला — "कोई बात नहीं साहब। अगर आप मुझे यह माल्ट दे देंगे तो मैं और मेरी पत्नी दोनों मिल कर कुछ न कुछ तो बना ही लेंगे। साथ साथ पी लेंगे और त्यौहार मना लेंगे।"

अमीर किसान ने तीन पैक माल्ट निकाली और उसके थैले में डाल दी। गरीब किसान ने वह थैला अपने कन्धे पर रखा और अपने घर चला गया। फिर वह उन घटनाओं के ऊपर विचार करने लगा कि यह सब कैसे कैसे हुआ था।

बूढ़ा बोला — "अब मास्टर आप दावत खायेंगे। क्या आपके घर के पास कोई कुँआ है?"

किसान बोला — "हॉ है।"

"तो अब हम कुँए पर जायेंगे और वहॉ पर बीयर बनायेंगे। आप अपना थैला उठाइये और मेरे पीछे पीछे आइये।"

सो वे लोग ऑगन में बने हुए कुँए के पास गये तो बूढ़ा बोला — "अब इस माल्ट को सारा का सारा इस कुँए में पलट दीजिये।"

मास्टर बोला — "हम इतनी अच्छी चीज़ को इस कुँए में क्यों पलटें? यह तो केवल तीन पैक है और यह तो उसमें पड़ कर बेकार हो जायेगी।"

बूढ़ा बोला — "अगर आपको बढ़िया बीयर पीनी है तो बस यही एक काम है जो आप कर सकते हैं।"

गरीब किसान बोला — "यह हम कोई अच्छा काम नहीं कर रहे हैं बाबा। हम कुँए के पानी को केवल खराब कर रहे हैं।"

बूढ़ा बोला — "आप बस मेरी सुनिये और जो मैं कह रहा हूँ वही कीजिये। डरने की कोई बात नहीं है।"

अब वह क्या करे। उसको उस बूढ़े के कहे अनुसार अपनी सारा माल्ट उस कुँए में फेंकना पड़ा।

बूढ़ा बोला — "पहले तो इस कुँए में पानी था पर कल को आप देखियेगा कि यही पानी बीयर बन जायेगा। अब हम लोग घर जा कर सो जायेंगे। क्योंकि सुबह तो हमेशा ही शाम से ज़्यादा अक्लमन्द होती है। अब कल आप इसमें इतनी बढ़िया बीयर पायेंगे कि उसका केवल एक गिलास ही आपको नशा ला देगा।"

सो उन लोगों ने सुबह तक इन्तजार किया। अगले दिन जब खाने का समय आया तो बूढ़े ने कहा— "अब आप जितने चाहें उतने बैरल इकट्ठा कर लें और उनको कुँए के चारों तरफ रख लें। और फिर उन सबको बीयर से भर लें और सबको बुला बुला कर बीयर पिलायें। इस तरह से आप बढ़िया तरीके से त्यौहार मना पायेंगे।"

सो वह गरीब किसान अपने बहुत सारे पड़ोसियों के पास गया और उनके पास से बैरल इकट्ठे कर के लाया तो सबने उससे पूछा — "अरे तुम इतने सारे बैरल और बालटियों का क्या करोगे?"

गरीब किसान बोला — "ओह मुझे वे तुरन्त ही चाहिये क्योंकि मेरे अपने पास बीयर रखने के लिये काफी बरतन नहीं हैं।"

यह सुन कर उसके सारे पड़ोसी खुसपुस करने लगे कि इसके यह कहने का मतलब क्या है। क्या यह अच्छा खासा आदमी पागल हो गया है? इसके घर में रोटी का एक टुकड़ा तक तो है नहीं और यह बीयर की बात कर रहा है।

खैर किसी तरह से उसने बीस बैरल और बालटियॉ इकट्ठी कर लीं। उन सबको कुँए के पास रख कर उन्हें कुँए की बीयर से भर लिया। वह बीयर तो इतनी बढ़िया बनी थी कि कोई भी बीयर ऐसी बीयर होगी ऐसा सोच भी नहीं सकता था।

उसने बैरल ऊपर तक भर रखे थे पर कुँआ फिर भी भरे का भरा था। उसने ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया — "आओ अच्छे

ईसाइयो मेरे पास आओ और आ कर अच्छी तेज़ बीयर पियो ऐसी बीयर तुम लोगों ने कभी ज़िन्दगी में नहीं पी होगी।"

लोगों ने इधर उधर देखा। यह वह क्या कर रहा है। यकीनन कुँए से पानी तो हर कोई निकाल सकता है पर यह तो उसे बीयर कह रहा है। खैर चलो चल कर देखते हैं कि वह हमारे साथ क्या मजाक कर रहा है।

सो वे सब उन बैरलों की तरफ दौड़ पड़े और उनमें से बीयर निकाल निकाल कर उसे देखने लगे। यकीनन यह बीयर ही होगी सोच कर वे उसे पीने लगे।

तुरन्त ही उनके मुँह से निकला — "अरे इतनी बढ़िया बीयर तो हमने आज तक कभी पी ही नहीं।'

उसके ऑगन में तो भीड़ लग गयी। गॉव के सारे लोग वहॉ बीयर पीने आ गये। मास्टर का इसमें कोई नुकसान नहीं था। वह तो कुँए में से खींच खींच कर सारे गॉव को खूब बीयर पिला रहा था।

अमीर किसान ने जब यह सुना तो वह भी उस गरीब किसान के घर के ऑगन में आया। उसने भी बीयर पी तो गरीब किसान से पूछा — "तुमने इतनी बढ़िया बीयर कैसे बनायी?"

गरीब किसान बोला — "जनाब इसमें मेरी कोई खासियत नहीं है। यह तो दुनियॉ का सबसे आसान काम है। जब मैं आपसे तीन पैक माल्ट ले कर घर गया तो वह सारा माल्ट मैंने कुँए में डाल

दिया। उस समय तक यह पानी था। आज सुबह तक इसकी बीयर बन गयी।"

अमीर किसान ने सोचा "हूँ। मैं भी अपने घर जा कर ऐसा ही कुछ करूँगा।"

वह तुरन्त ही घर गया और अपने नौकरों को बुला कर उनसे कहा — "अनाजघर से मेरा सबसे बढ़िया वाला माल्ट निकालो और उसे कुँए में डाल दो।"

यह सुन कर उन्होंने उसके दस बोरे माल्ट उसके कुँए में फेंक दिये। अमीर किसान ने हाथ मलते हुए कहा — "मैं अब उस गरीब आदमी से ज़्यादा अच्छी बीयर पा सकूँगा।"

सो अगली बार जब वह कुँए तक गया और उसका पानी चखा तो वह तो पहले भी पानी था और अभी भी पानी था। बल्कि पहले पानी से ज़्यादा गन्दा था।

"मेरी समझ में तो यह बिल्कुल ही नहीं आ रहा कि यह सब क्या है। मुझे लगता है कि मैंने इसके अन्दर शायद बहुत ही कम माल्ट डाला था मुझे और ज़्यादा माल्ट डालना चाहिये था।"

सो उसने अपने नौकरों से पॉच बोरे भर कर माल्ट और डलवा दिया।

अब उस कुँए में बहुत सारा माल्ट था पर यह भी ठीक नहीं था। उसका सारा माल्ट बिल्कुल ही बेकार गया। जब त्यौहार खत्म

हो गया तो गरीब किसान के कुँए का पानी फिर से साफ पानी बन गया जैसे त्यौहार से पहले था। जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

एक बार फिर वह बूढ़ा गरीब किसान के पास आया और उससे पूछा — "मास्टर क्या आपने इस साल मक्का बोयी है?"

"नहीं बाबा। मैंने तो एक दाना भी नहीं बोया।"

बूढ़ा बोला — "तो एक बार फिर आप अमीर किसान के घर जाइये और उससे तीन पैक हर तरह का अनाज माँगिये। हम लोग खेतों पर खाना खायेंगे और वह अनाज बोयेंगे।"

गरीब किसान बोला — "अब हम अनाज कैसे बोयेंगे। अब तो जाड़े भी आधे गुजर चुके हैं। बरफ टूट रही है।"

बूढ़ा बोला — "आप उसकी चिन्ता छोड़िये। आप जाइये और वैसा ही कीजिये जैसा कि मैं कहता हूँ। मैंने आपके लिये बीयर बनायी थी अब मैं आपके लिये अनाज बोऊँगा।"

सो गरीब किसान एक बार और अमीर किसान के घर गया और उससे उसको तीन पैक हर तरह का अनाज देने के लिये कहा। वह अनाज ला कर उसने अपने बूढ़े मेहमान को दे दिया "लो बाबा यह लो।"

उस अनाज को ले कर वे खेतों में चले गये और वहाँ जा कर उन्होंने उनको बोने की बजाय खेत में इधर उधर फेंक दिया। लो देखो उन्होंने तो यह सारा अनाज बरफ में डाला था – एक एक दाना उसका बरफ में था।

बूढ़े ने कहा — "मालिक अब आप अपने घर जायें और गरमियॉ आने तक इन्तजार करें आपके घर में रोटी ही रोटी हो जायेगी।"

गरीब किसान अपने घर चला गया। गॉव के सारे लोग उस पर इस तरीके से अनाज बोने पर हॅस रहे थे — "ज़रा देखो तो। यह कितना बड़ा बेवकूफ है। यह तो यह भी भूल गया कि अनाज कब बोना चाहिये। इसने पतझड़ के मौसम में बोने के लिये नहीं सोचा।"

उसने उन लोगों की बात सुनी अनसुनी कर दी। उसने वसन्त का इन्तजार किया फिर गरम दिन आये। बरफ पिघलना शुरू हो गयी और अनाज के दानों में से कल्ले फूटने लगे।

गरीब किसान बोला — "आओ और देखो। अब मैं जा कर देखता हूॅ कि मेरा खेत कैसा दिखायी देता है।"

सो वह अपने खेतों पर गया और उसने वहॉ अनाज की बहुत ही शानदार पत्तियॉ देखीं जिनको देख कर किसी का भी दिल खुश हो सकता था। दूसरे लोगों के खेतों पर इससे आधी अच्छी भी फसल नहीं थी।

गरीब किसान के मुॅह से निकला — "भगवान की जय हो। अब मैं अपना सिर ऊपर उठा सकता हूॅ।"

जल्दी ही फसल काटने का मौसम आया। सारे किसान अपना अपना खेत काट कर अपना अपना अनाज इकट्ठा करने लगे। बूढ़ा भी वहॉ गया और अनाज काटने में लग गया।

उसने अपनी पत्नी को भी अपने काम में सहायता करने के लिये बुलाया। पर वह तो उस खेत के अन्दर घुस ही नहीं सका। उसने बहुत सारे छोटे छोटे किसानों को अपनी फसल काटने के लिये वहाँ बुलाया। इसके बदले में उसने उनको अपना आधा अनाज देने का वायदा किया।

सारे लोग उस गरीब किसान का खेत देख देख कर आश्चर्य कर रहे थे क्योंकि उसने तो अनाज बोया भी नहीं था बल्कि जाड़े में ऐसे ही बीज बिखेर दिये थे और अब उसका अनाज तो बहुत ही शानदार हुआ था।

अब उस गरीब किसान ने अपना घर ठीक से चलाया और वह अब बिना किसी तकलीफ के रहा। जो कुछ भी उसको अपने घर के लिये चाहिये था उसको रख कर बाकी का बचा अनाज वह बाजार जा कर बेच आया। उस अनाज के बेचने से उसको जो पैसे मिले वह उस पैसे से घर की जरूरत की दूसरी चीज़ें खरीद लाया।

अब उसने अपना उधार भी पूरा उतार दिया था।

अमीर किसान ने सोचना शुरू किया "हे हो। अबकी बार मैं भी जाड़े में अपना बीज बोऊँगा। हो सकता है कि मुझे भी इतनी बढ़िया फसल मिल जाये।"

इस बीच उसने जाड़े का इन्तजार किया और जब जाड़ा आया तो जिस दिन उस गरीब किसान ने अपने दाने बोये थे उसने भी अपने अनाज के दाने अपने सारे खेत में बिखेर दिये। उसने उनसे

अपना खेत पूरी तरह से भर दिया। पर उसी रात को एक तूफान आया बहुत तेज़ हवाऐं चलीं जिन्होंने उसके अनाज को दूसरे किसानों के खेतों में फेंक दिया।

उसके बाद सुन्दर वसन्त आया तो वह अमीर किसान अपने खेत देखने गया। वहॉ उसने देखा कि उसके खेत तो नंगे पड़े हुए हैं। वहॉ तो एक पत्ता भी दिखायी नहीं दे रहा था और दूसरे खेतों पर जहॉ किसी ने कोई हल नहीं चलाया था और बीज भी नहीं बोये थे वहॉ हरियाली दिखायी दे रही थी।

अमीर किसान ने फिर सोचना शुरू किया "ओ लौर्ड मैंने अनाज पर कितना पैसा खर्च किया पर वह सब बेकार गया और जो लोग मुझसे उधार ले गये जिन्होंने न अपने खेत में हल चलाया न बीज बोया उनका अनाज अपने आप ही उग गया। ओह लौर्ड मैं जरूर ही पापी हूॅ।"

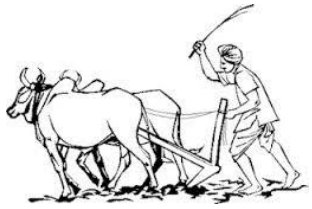

18 गंजी पत्नी[79]

एक बार की बात है कि एक आदमी के दो पत्नियॉ थीं। उनमें से उसकी जो छोटी पत्नी थी उसको वह अपनी बड़ी पत्नी से ज़्यादा प्यार करता था।

उसकी छोटी पत्नी दो चोटियॉ बनाती थी और उसकी बड़ी पत्नी केवल एक ही चोटी बनाती थी।

एक बार वह आदमी कुछ व्यापार करने के लिये किसी दूर जगह गया तो उसकी दोनों पत्नियॉ घर में अकेली ही रह गयीं। उनमें से उसकी छोटी पत्नी जो उसकी बहुत प्यारी थी वह उसकी बड़ी पत्नी से बहुत नफरत करती थी।

वह उससे घर का सारा छोटा छोटा काम कराती, दिन रात उसकी बेइज़्ज़ती करती और उसको पेट भर कर खाना भी नहीं देती।

एक दिन छोटी पत्नी ने बड़ी पत्नी से कहा — "ज़रा मेरे सिर में से जुऐं निकाल दो दीदी।" सो बड़ी पत्नी उसके सिर में से जुऐं निकालने बैठ गयी।

[79] The Bald Wife – a folktale from India, Asia.
Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. Its Hindi translation has been published by NBT, Delhi with the title "Bangal Ki Lok Kathayen" translated by Sushma Gupta in 2020.

जब बड़ी पत्नी छोटी पत्नी के सिर में से जुऐं निकाल रही थी तो छोटी पत्नी के सिर का एक बाल टूट गया। इस पर छोटी पत्नी ने गुस्सा हो कर बड़ी पत्नी की पूरी की पूरी चोटी ही उखाड़ दी और उसको घर से बाहर निकाल दिया।

अब बड़ी पत्नी बिल्कुल गंजी हो गयी थी और क्योंकि उसको घर से भी बाहर निकाल दिया गया था सो उसने जंगल जाने का निश्चय किया कि वहॉ या तो वह भूखी रह कर अपनी जान दे देगी और या फिर उसे कोई जंगली जानवर खा जायेगा।

जब वह जंगल जा रही थी तो रास्ते में उसको कपास का एक पेड़ मिला। उसके पास ही कुछ डंडियॉ पड़ी थीं उसने उनको इकट्ठा कर के एक झाड़ू बनायी और उससे उस पेड़ के चारों तरफ की जमीन साफ की। तो वह पौधा तो उसकी सेवा से बहुत खुश हो गया और उसने उसको एक वरदान देने का वायदा किया।

वह और आगे चली तो उसको एक केले का पेड़ मिला। उसने उस पेड़ के चारों तरफ की जमीन भी साफ की तो वह पेड़ भी उसकी सेवा से बहुत खुश हो गया और उसने भी उसको एक वरदान देन का वायदा किया।

वह और आगे बढ़ी तो उसको एक ब्राह्मणी के बैल के रहने का शैड मिला। उसका शैड बहुत गन्दा हो रहा था सो उसने उसको साफ कर दिया।

बैल उसकी सेवा से बहुत खुश हो गया तो उसने भी उसको एक वरदान देने का वायदा किया।

उसके बाद वह फिर और आगे चली तो उसको तुलसी का एक पौधा[80] मिला। उसने उसको झुक कर प्रणाम किया और उसके चारों तरफ की जमीन भी साफ की। तुलसी ने भी उसको एक वरदान देने का वायदा किया।

वह फिर और आगे चली तो उसको पेड़ की शाखों और पत्तों की बनी एक झोंपड़ी दिखायी दी। उसके पास एक आदमी पालथी मार कर बैठा था जो ऐसा लग रहा था जैसे ध्यान में बैठा हो।

वह एक पल के लिये उस मुनि के पीछे रुकी तो मुनि बोले — "तुम जो कोई भी हो मेरे सामने आओ। मेरे पीछे खड़ी नहीं रहो। क्योंकि अगर तुम मेरे पीछे खड़ी रहोगी तो मैं तुम्हें जला कर राख कर दूँगा।"

स्त्री ने यह सुना तो वह डर के मारे कॉपती हुई मुनि के सामने आ खड़ी हुई।

मुनि बोले — "बोल तेरी क्या इच्छा है बेटी?"

स्त्री बोली — "पिता जी आप तो जानते ही हैं कि मैं कितनी बदकिस्मत हूँ क्योंकि आप तो सब कुछ जानते हैं। मेरे पति मुझे प्यार नहीं करते। मेरे पति की दूसरी पत्नी ने तो मेरे सिर की एक

[80] A plant of Holy Basil

अकेली चोटी ही उखाड़ दी है। उसने मुझे घर से बाहर भी निकाल दिया है। मेरे ऊपर दया कीजिये मुनि महाराज।"

मुनि वहीं बैठे बैठे बोले — "वह जो सामने तुझे तालाब दिखायी दे रहा है तू उसमें जा कर केवल एक बार डुबकी लगा और फिर मेरे पास आ।"

स्त्री उस तालाब के पास गयी और उसमें मुनि के कहे अनुसार केवल एक बार डुबकी लगायी। जैसे ही वह उस तालाब में एक बार डुबकी लगा कर उसमें से बाहर निकली तो वह तो कितनी बदल चुकी थी।

उसका सारा सिर लम्बे घने काले बालों से भर चुका था। उसके बाल इतने लम्बे थे कि वे उसकी एड़ी तक आ रहे थे। उसका रंग बहुत गोरा हो गया था। वह अब ज़्यादा जवान और सुन्दर लगने लगी थी।

खुशी और कृतज्ञता से भरी वह मुनि के पास पहुँची और जमीन तक झुक कर उनको प्रणाम किया।

मुनि बोले — "ओ स्त्री उठ, और अब तू इस झोंपड़ी में अन्दर चली जा। वहाँ तुझको बहुत सारी डंडियों की बनी टोकरियाँ दिखायी देंगी। उनमें से तू कोई भी टोकरी जो भी तुझको अच्छी लगे उठा ला।"

स्त्री उस झोंपड़ी के अन्दर गयी और एक सादी सी टोकरी ले कर बाहर आ गयी।

मुनि बोलो — "अब इसे खोल।"

उसने उसको खोला तो उसको उसमें बहुत सारा सोना मोती जवाहरात और कीमती पत्थर मिले।

मुनि आगे बोले — "जा इस टोकरी को तू ले जा। यह कभी खाली नहीं होगी। जब भी तू इसमें से कुछ भी निकालेगी तो यह टोकरी फिर से भर जायेगी। और फिर और, और फिर और, और फिर और। और इस तरह से यह टोकरी कभी भी खाली नहीं होगी। जा बेटी जा खुशी खुशी जा।"

स्त्री ने एक बार फिर मुनि को कृतज्ञता के साथ जमीन तक झुक कर प्रणाम किया और वहॉ से चली गयी।

जब वह अपनी टोकरी हाथ में लिये अपने घर लौट रही थी तो वह तुलसी के पौधे के पास से गुजरी जिसके चारों तरफ की जमीन उसने वहॉ से जाते समय साफ की थी।

तुलसी का पौधा बोला — "जा खुशी खुशी जा मेरी बच्ची। तेरा पति तुझे बहुत प्यार करेगा।"

उसके बाद वह ब्राह्मणी के बैल के शैड के पास आयी जिसे उसने जाते समय साफ किया था।

उसने उसको सीपी के दो गहने दिये जो उसके सींगों में लिपटे हुए थे और कहा — "बेटी इन्हें ले जा और इनको अपनी कलाई पर पहन ले। और जब भी तू इनमें से किसी एक को भी हिलायेगी

तो उसमें से तुझको तू जो भी गहना और जैसा भी गहना चाहेगी तुझे मिल जायेगा।"

उसके बाद वह केले के पेड़ के पास आयी तो उसने उसको अपना एक चौड़ा सा पत्ता दिया और कहा — "ले यह पत्ता ले। जब तू इस पत्ते को हिलायेगी तो तुझे इससे न केवल सब प्रकार के केले मिलेंगे बल्कि सब तरह का स्वादिष्ट खाना भी मिलेगा।"

वहॉ से वह चली तो कपास के पेड़ के पास आयी जिसके चारों तरफ की जमीन उसने जाते समय साफ की थी।

उसने उसको अपनी एक शाख दी और कहा — "बेटी यह ले यह मेरी एक शाख लेती जा। तू जब भी इसको हिलायेगी तो न केवल तुझको इससे सूती कपड़े मिलेंगे बल्कि सब किस्म के कपड़े मिलेंगे।"

उसने वहीं वह शाख हिलायी तो उसके पैरों पर सिल्क की एक पोशाक गिर पड़ी। उसने वह पोशाक पहनी और कलाई पर बैल के दिये हुए सीपी के गहने पहने और हाथ में डंडियों की टोकरी, कपास की शाख और केले का पत्ता लिये अपने घर की तरफ चल दी।

जब वह अपने घर पहुॅची तो उसकी सौत घर के दरवाजे पर ही खड़ी थी। जब उसने एक सुन्दर सी स्त्री को अपनी तरफ आते देखा तो उसे ध्यान से देख तो वह तो दंग रह गयी। वह तो कितनी बदल गयी थी।

वह बूढ़ी गंजी स्त्री तो अब बहुत सुन्दर हो गयी थी। वह अमीर भी हो गयी थी। छोटी पत्नी तो अपनी बड़ी सौत से बहुत नफरत करती थी पर बड़ी पत्नी अपनी छोटी सौत से बहुत ही दया का व्यवहार करती थी।

उसने उसको बहुत सारे अच्छे कपड़े दिये, कीमती गहने दिये स्वादिष्ट खाने खिलाये पर इससे उसको कोई फर्क नहीं पड़ा। यह सब बेकार ही गया। क्योंकि उसकी छोटी सौत तो उसकी सुन्दरता और लम्बे बालों से जल रही थी।

यह सुन कर कि यह सब उसको जंगल में रह रहे पिता मुनि से मिला उसने भी वहॉ जाने की सोचा। और वह वहॉ चल दी।

रास्ते में कपास का पेड़ पड़ा पर उसने उसका कुछ नहीं किया। वह केले के पेड़ के पास से गुजरी, ब्राह्मणी के बैल का शैड पड़ा, तुलसी का पौधा पड़ा पर वह सबको अनदेखा करते हुए सीधी पिता मुनि की झोंपड़ी की तरफ ही चलती रही।

वह मुनि के पास पहुॅची तो उन्होंने उसको भी तालाब में केवल एक बार ही डुबकी मारने के लिये कहा। सो जब उसने एक बार डुबकी मारी तो वह तो बहुत सुन्दर हो गयी और उसके सिर पर भी बहुत सारे घने काले बाल हो गये। उसका रंग भी बहुत गोरा हो गया।

उसको लगा कि अगर वह दोबारा उस तालाब में डुबकी लगायेगी तो शायद और ज़्यादा सुन्दर हो जाये।

सो उसने उस पानी में दोबारा डुबकी लगा ली। पर यह क्या। वह तो फिर से वैसी ही हो गयी थी जैसी पहले थी।

वह रोती हुई मुनि के पास गयी तो मुनि ने उसको यह कहते हुए भगा दिया — "दूर हो जा मेरी नजरों के सामने से ओ कहना न मानने वाली स्त्री। तुझको मुझसे कोई वरदान नहीं मिलेगा।"

यह सुन कर वह दुख से कुछ पागल सी हो गयी और अपने घर चली गयी।

जब उन दोनों का पति घर वापस लौटा तो वह तो अपनी बड़ी पत्नी को देख कर दंग रह गया कि वह तो बहुत सुन्दर और बहुत लम्बे बालों वाली हो गयी है। वह उसको प्यार करने लगा और जब उसको यह पता चला कि वह सब उसको कहाँ से मिला तब तो वह उसको बहुत ज़्यादा प्यार करने लगा।

वे दोनों बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे। व्यापारी की छोटी पत्नी जो पहले उसकी बहुत प्यारी पत्नी थी अब उनके यहाँ नौकरानी की तरह से काम करती थी।

19 काशीफल के बीज[81]

एक बार की बात है कि कोरिया देश में दो भाई रहते थे। उनमें से छोटा भाई बहुत गरीब था और उसको अपना पेट पालने के लिये बहुत मेहनत करनी पड़ती थी।

वह एक बहुत छोटे से घर में रहता था और उसके पास कोई सामान भी नहीं था। पर वह आदमियों और जानवरों सब पर दया बहुत करता था।

जबकि उसका बड़ा भाई काफी अमीर था। अमीर होने की वजह से उसके सब काम बड़ी आसानी से हो जाते थे। उसके पास काम करने के लिये बहुत सारे नौकर चाकर थे। वह एक बहुत बड़े मकान में रहता था और उसके पास उसकी अपनी जरूरत से भी बहुत ज़्यादा सामान था।

पर इस सबके बावजूद वह बहुत लालची और कंजूस था और हर चीज़ के लिये शिकायत करता रहता था। उसका आदमियों और जानवरों किसी से भी अच्छा बरताव नहीं था।

---

[81] The Pumpkin Seeds – a folktale from Korea, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=54
Retold and written by Mike Lockett.
--Mike has adapted this story from a Collection of Korean Folktales first brought to the attention of the western world by Korean writer Kim So-Un – "The Story Bag: a collection of Korean folktales". 1989. 240 p. Readers who wish to re-tell this story are asked to please honor this individual by reminding their audience who preserved this marvelous story.
--It is like the story of "Hwaan and Daang" with only a little difference given in this book later.

एक साल कुछ चिड़ियें बहुत दूर दक्षिण से वहॉ आयीं। उनमें से कुछ चिड़ियों ने छोटे भाई के घर की छत पर अपना घोंसला बना लिया। उसको उन चिड़ियों का आना बहुत अच्छा लगा।

पहली बात तो यह कि उनका आना उसको इसलिये अच्छा लगा क्योंकि वह एक पहाड़ के एक किनारे की तरफ रहता था तो वहॉ उसका कोई पड़ोसी नहीं था। दूसरे खेती करने के लिये वहॉ की जमीन भी सख्त थी इसलिये भी वहॉ कोई नहीं रहता था।

इसलिये जब वह गरीब भाई वहॉ थोड़ी बहुत खेती करता या घाटी में बहती नदी से पानी भर कर लाता तो उसे इन चिड़ियों और दूसरे जानवरों का साथ रहना बहुत अच्छा लगता था।

अमीर भाई मैदानों में रहता था और उसके आस पास बहुत सारे लोग रहते थे जिनको वह अक्सर बुरा भला कहता रहता।

जबकि छोटे भाई को अपने खेत अपने आप ही जोतने और बोने पड़ते थे बड़े भाई के पास यह सब करने के लिये बहुत सारे नौकर थे।

उसके पास चावल बोने के लिये बहुत सारी औरतें थीं। उसकी फसल काट कर लाने के लिये उसके पास बहुत सारे आदमी थे। उसके खेतों में बहुत सारी फसल होती था पर वह भी उस लालची को खुश करने के लिये काफी नहीं थी।

हालॉकि छोटे भाई के खेतों में फसल बहुत नहीं होती थी क्योंकि उसको अपने खेत को पानी देने के लिये पानी बहुत दूर से

लाना पड़ता था पर फिर भी वह चावल के कुछ दाने उन चिड़ियों के लिये उस कच्चे रास्ते पर डाल ही देता था जिस पर वह चलता था।

वह उन चिड़ियों को हमेशा ही ध्यान से देखता रहता था कि वे ठीक से रह रही हैं या नहीं। जब उसने उनके घोंसले में उनके अंडे देखे तो वह बहुत खुश हुआ।

क्योंकि वहॉ अंडे देने का मतलब था कि वे चिड़ियॉ अब वहॉ कम से कम तब तक तो रहेंगी ही जब तक उन अंडों में से बच्चे निकलेंगे। और वे बच्चे भी वहॉ तब तक रहेंगे जब तक इतने बड़े न हो जायें जब तक कि वे उड़ने के लायक न हो जायें।

जब तक चावल के छोटे पौधे दोबारा लगाने लायक हुए तब तक उन अंडों में से बच्चे भी निकल आये। छोटे छोटे भूखे बच्चे अपने घोंसले के ऊपर झॉकने लगे और चीं चीं करने लगे।

उस भले आदमी ने उस घोंसले के नीचे एक चौड़ा तख्ता रख दिया ताकि अगर कहीं वे बच्चे गिरें तो उस तख्ते के ऊपर ही रहें नीचे न गिरें। उन बच्चों के मॉ बाप उन बच्चों को खाना खिलाते रहे और बच्चे भी दिन पर दिन बड़े होते रहे।

एक दिन वह छोटा भाई दो बालटी पानी ले कर अपने चावल के खेत में पानी देने जा रहा था कि उसने देखा कि उस घोंसले में से उन बच्चों के मॉ बाप उड़ कर चले गये हैं।

और कुछ पल बाद ही उस घोंसले में से बच्चों की डर की चीखों की आवाज आने लगी। उसने तुरन्त ही अपनी पानी की बालटियॉ वहीं छोड़ीं और बच्चों के घोंसलों की तरफ भागा।

वहॉ जा कर उसने देखा कि एक हरा सॉप पेड़ की शाख से लटक कर छत पर नीचे गिर पड़ा है। सॉप ने अपना मुँह खोल रखा था और चिड़िया के बच्चे डर के मारे चिल्ला रहे थे। वे अपने पंख फड़फड़ा रहे थे और घोंसले से बाहर उड़ने की कोशिश कर रहे थे।

पर उन बच्चों के पंख अभी इतने मजबूत नहीं थे कि वे उड़ सकें सो वे उड़ नहीं पा रहे थे सिवाय एक बच्चे के। वह एक बच्चा उड़ा पर वह भी ठीक से उड़ न पाने की वजह से घोंसले के बाहर ही गिर गया जिससे उसकी टॉग टूट गयी।

उसने उस बच्चे को उठा लिया और उसकी टॉग की मरहम पट्टी की। कुछ दिन में उसकी टॉग ठीक हो गयी और बहुत जल्दी ही वह चिड़िया अपने दूसरे भाई बहिनों के साथ उड़ने लगी।

गमी चली गयी और पतझड़ आ गया। वे चिड़ियॉ वहॉ से उड़ कर ठंड बिताने के लिये दक्षिण की तरफ चली गयीं। उन चिड़ियों के जाने के बाद वह छोटा भाई फिर अकेला रह गया।

अगले साल वसन्त में वे चिड़ियॉ फिर लौटीं। वे पहाड़ों के ऊपर से, झीलों के ऊपर से लम्बा रास्ता पार कर के उड़ती हुई वहॉ तक आयी थीं।

उस छोटे भाई को यह देख कर बहुत अच्छा लगा कि चिड़ियों के पिछले वाले माता पिता ने फिर से उसके घर में घोंसला बनाया था। पिछले साल जो चिड़िया घायल हो गयी थी वह भी उन्हीं के साथ थी।

ऐसा लग रहा था जैसे वह घायल चिड़िया अपनी जान बचाने के लिये उस भाई को कुछ इनाम देना चाह रही हो सो उसने उसके चारों तरफ दो तीन चक्कर लगाये और काशीफल का एक बीज उसकी गोद में डाल दिया। इसके बाद वह वहॉ से उड़ कर अपने घोंसले में चली गयी।

छोटे भाई ने काशीफल के उस बीज को अपने घर के ऑगन के एक कोने में बो दिया। तुरन्त ही उसमें से कल्ला[82] फूट गया और उसमें से उसकी बेल बड़ी हो कर उसकी झोंपड़ी के ऊपर फैलने लगी।

कुछ ही दिनों में उसमें तीन पीले फूल भी आ गये और फिर उनमें छोटे छोटे काशीफल भी दिखायी देने लगे। पतझड़ आने तक तो वे तीनों छोटे छोटे काशीफल खूब बड़े बड़े हो गये और उसके घर की छत से नीचे लटकने लगे।

[82] Translated for the word “Sprout” – when the first two leaves come out of the seed, it is called sprouting.

एक छोटे से काशीफल के बीज से इतने काशीफल हो गये कि उसका घर एक तरफ को झुकने लगा और वे काशीफल जमीन को छूने लगे।

जब काशीफल पक गये तो उसने उनमें से एक काशीफल तोड़ लिया। वह काशीफल इतना बड़ा था कि उसको तो घाटी में बसे सारे गॉव को खिलाया जा सकता था।

सो उसने भी सोच लिया कि वह यह काशीफल सबके साथ बॉट कर खायेगा। उसने उस काशीफल को दो हिस्सों में काटना शुरू किया।

जैसे ही वह काशीफल कटा तो बजाय उसमें से सब्जी निकलने के उसमें से कुछ बढ़ई बाहर निकल आये। किसी के हाथ में हथौड़ा था तो किसी के हाथ में कीलें। किसी के हाथ में आरी थी तो किसी के हाथ में पेन्ट करने का ब्रश।

उनके साथ घर बनाने का सामान भी था – खिड़कियॉ, दरवाजे, तख्ते आदि आदि। कुछ ही पलों में उन बढ़इयों ने उस भाई के लिये एक बहुत ही बड़ा मकान बना दिया।

यह सब देख कर वह भाई तो बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया। और यह देख कर तो वह यह भी सोचने लगा कि पता नहीं दूसरे दोनों काशीफलों में से क्या निकलेगा।

वह बहुत उत्सुक हो गया और उसने दूसरा काशीफल भी बेल से तोड़ लिया। जब उसने उसको दो हिस्सों में काटा तो उसमें से

बहुत सारे नौकर निकल पड़े और नौकरों के बाद फिर खेत पर काम करने वाले लोग।

उन खेत पर काम करने वालों के हाथों में उसके चावल के खेतों के लिये हल आदि और उनकी सिंचाई के लिये नहर आदि बनाने के लिये बहुत सारे औजार थे ताकि वह अपने खेतों से बहुत सारा चावल उगा सके।

उन नौकरों में कुछ रसोइये थे जिनके हाथों में खाने के सामान के बहुत सारे डिब्बे थे। वे उनको ले कर उसके मकान में गये और वहॉ जा कर उसके लिये बहुत अच्छा अच्छा खाना बनाने लगे।

उनमें से कुछ दरजी थे जो सुई, धागा और कपड़े ले कर निकले थे उन्होंने उस भाई के लिये बहुत बढ़िया बढ़िया कपड़े सिलने शुरू कर दिये। बाकी के नौकर उस भाई के सामने हाथ जोड़ कर खड़े हो गये — "हम सब आपकी सेवा करने के लिये हैं।"

अब उसने बेल से तीसरा काशीफल तोड़ा और उसको काटा तो उसमें से बहुत सारा खजाना निकला – सोना, चॉदी, सिक्के आदि। वह सब तो इतना था कि वह भाई उसको सारी ज़िन्दगी खर्च नहीं कर सकता था।

तीसरे काशीफल से निकले उस पैसे से उसने बहुत सारी जमीन खरीद ली और इस तरह वह गरीब भाई रात भर में बहुत बड़ी जमीन का मालिक बन गया।

जैसा कि वह पहले भी करता था उसके पास जो कुछ भी था उसमें से उसने कुछ दूसरों को भी दे दिया जो वहॉ उसके आस पास की जमीन पर रहते थे।

छोटे भाई की यह सारी धन दौलत उसके बड़े भाई की निगाहों से छिपी नहीं रही। वह लालची भाई तो उससे जल रहा था कि उसके छोटे भाई के पास उससे ज़्यादा दौलत कैसे आयी और कहॉ से आयी।

वह अपने भाई के पास इस सबके बारे में पूछने गया और जब उसने अपने भाई की कहानी सुनी तो वह तो बहुत खुश हो गया। वह अपने घर के पास के पहाड़ों पर उन चिड़ियों के घोंसले ढूँढने चला गया।

उसने एक बच्चा चिड़िया उसके घोंसले में से उठायी और उस की टॉग तोड़ दी। फिर उसने उसकी मरहम पट्टी भी कर दी।

पतझड़ आने तक वह ठीक हो गयी और अपने साथियों के साथ उड़ गयी। और जैसा कि वह उम्मीद कर रहा था वह चिड़िया वसन्त आने पर फिर वहॉ आयी।

जैसे वह पहली वाली चिड़िया काशीफल का एक बीज ले कर आयी थी उसी तरह से यह चिड़िया भी अपनी चोंच में काशीफल का एक बीज दबा कर लायी और जैसे उस चिड़िया ने वह बीज उस छोटे भाई की गोद में डाला दिया था उसी तरह से इस चिड़िया ने भी

वह काशीफल का बीज उस बड़े भाई के दो तीन बार चक्कर काट कर उसकी गोद में डाल दिया।

उस लालची भाई से उस बीज में से काशीफल निकलने का इन्तजार बहुत मुश्किल से हो रहा था सो उसने तुरन्त ही अपने एक नौकर को बुलाया और उसको वह बीज अपने ऑगन में बोने के लिये दे दिया और दूसरे नौकर को उसको पानी और खाद देने के लिये बोल दिया।

पिछले वाले बीज की तरह यह बीज भी बहुत जल्दी उग आया और इसकी बेल भी जल्दी जल्दी बढ़ने लगी। और यह बेल भी उस के मकान की छत पर चढ़ गयी।

जैसे जैसे समय बीता इस बेल में भी तीन काशीफल लगे और उसके घर से नीचे की तरफ लटकने लगे। हर दूसरा काशीफल पहले काशीफल से बड़ा था और ये सारे काशीफल उसके छोटे भाई के काशीफलों से भी बड़े थे।

यह देख कर बड़ा भाई बहुत खुश हुआ और सोचने लगा कि मैं अब अपने छोटे भाई से ज़्यादा अमीर हो जाऊँगा क्योंकि मेरे काशीफल मेरे भाई के काशीफलों से ज़्यादा बड़े हैं।

पतझड़ आया तो उन काशीफलों को तोड़ने का समय भी आ गया। उस समय उसने अपने सब नौकरों को छुट्टी दे दी ताकि कोई यह न जान सके कि उसके पास कितनी दौलत आयी।

वह जब उन काशीफलों को काट रहा था तो खुशी से नाच रहा था। उसने अपना चाकू उठाया और काशीफल काटने के लिये उसमें घुसा दिया। उसने अपना काशीफल दो हिस्सों में काट दिया पर उसमें से तो उसका मकान बड़ा करने के लिये कोई बढ़ई आदि नहीं निकले।

बल्कि उसमें से तो निकला राक्षसों का एक जत्था जो बड़े बड़े डंडे लिये हुए था। बाहर आते ही उन्होंने उस बड़े भाई को उन डंडों से पीटना शुरू कर दिया।

वे बोले — "यह तुमको सिखायेगा कि लालची होने और दूसरों के साथ चीजों को न बॉटने का क्या नतीजा होता है।" जब तक वे उस भाई को मार पीट कर वहॉ से गये उसका सारा शरीर डंडों की मार से नीला पड़ गया था।

पर इस बात से भी बड़े भाई ने कोई सबक नहीं सीखा और धन दौलत पाने की उम्मीद में उसने दूसरा काशीफल भी काट दिया। अबकी बार उसमें से धन दौलत निकलने की बजाय कर्जे के पैसे वसूल करने वाले निकल आये।

निकलते ही उन्होंने उससे पैसे मॉगने शुरू कर दिये — "अपना कर्जा चुकाओ, अपना कर्जा चुकाओ।" पर वह उनको अपना पैसा देने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था सो उन लोगों ने उसका जितना भी सामान – कपड़े, फर्नीचर आदि, ले जा सकते थे वहॉ से लिया और ले कर चले गये।

बेचारा बड़ा भाई वहीं रोता बैठा रह गया। पर अभी भी उस को अपने तीसरे काशीफल से धन की आस लगी थी सो उसने तीसरा काशीफल भी बेल से तोड़ लिया और उसको भी काट दिया।

जैसे ही वह काशीफल खुला उसमें से पीले रंग का कीचड़ वाला पानी बह निकला। उस पानी ने उसके खेतों और फसल को पीली मिट्टी से ढक दिया। उससे उसकी चावल की और दूसरी फसलें सब बेकार हो गयीं।

कुछ पलों में ही वह सबसे ज़्यादा अमीर आदमी से सबसे ज़्यादा गरीब आदमी में बदल गया। वह अपने नुकसान पर बहुत रोया। अब उसके पास अपने छोटे भाई के पास सहायता मॉगने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

वह उसके पास सहायता मॉगने के लिये गया और हमेशा की तरह से उसने अपने बड़े भाई का अपने घर में स्वागत किया।

उसने अपनी सारी चीजें, जितनी भी उसके पास थीं, आधी आधी बॉटीं और एक आधा हिस्सा उसको दे दिया – आधी जायदाद, आधा पैसा, आधे नौकर।

इस घटना के बाद बड़ा भाई अब बहुत नम्र हो गया था। अब उसने अपने आस पास रहने वाले आदमियों और जानवरों से प्रेम करना सीख लिया था।

20 जो बोओगे वही खाओगे[83]

यह लोक कथा भी एशिया के महाद्वीप के कोरिया देश की ही है। कई महीने पुरानी बात है कि कोरिया देश में दो भाई अपने पिता के साथ रहते थे। छोटा भाई बहुत ही मेहनती था और वह जिससे भी मिलता था उसी से दया का बरताव करता था।

जबकि बड़ा भाई यह जानता था कि उसको अपने पिता की सारी जायदाद, चावल के खेत और पैसा मिलेगा सो वह बहुत ही घमंडी और अकड़ू था।

हर रात खाना खाने के बाद उनका पिता कहता — "मेरे बेटों, याद रखो तुम जो कुछ भी बोओगे वही खाओगे।"

यह सुन कर छोटा भाई तो नम्रता से हॉ में सिर हिला देता क्योंकि वह अपने माता पिता को बहुत प्यार करता था और उनकी बहुत इज़्ज़त करता था पर बड़ा भाई जॅभाई लेता और उठ कर सोने चला जाता। पिता उसको इस तरह जाते देख कर बहुत दुखी होता।

और फिर एक दिन ऐसा आया जब उनके पिता का मरने का समय आ गया तो उसने अपने दोनों बेटों को बुलाया और कहा — "याद रखो बेटे, परिवार से ज़्यादा बड़ी कोई चीज़ नहीं है। इसलिये

[83] What We Will Plant We Will Eat – a folktale from Korea, Asia. Adapted from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2013/03/what_we_plant_we_will_eat.html
Adopted, retold and written by SE Schlossler

इस जायदाद को आपस में बॉट लेना और साथ साथ काम करना। मैं यह जमीन तुम दोनों के लिये छोड़े जा रहा हूँ।" इतना कह कर वह मर गया।

बड़ा भाई इस बॅटवारे से बहुत नाराज था। जमीन का कानून यह कहता था कि परिवार के बड़े बेटे को ही सब कुछ मिलता था।

जैसे ही पिता की आखिरी रस्में पूरी हो गयीं बड़े बेटे ने अपने पिता के आखिरी शब्दों पर कोई ध्यान न देते हुए अपने छोटे भाई को घर से निकाल दिया और पिता की सारी जायदाद का मालिक बन बैठा।

छोटे भाई का दिल टूट गया और वह मीलों तक चलता हुआ अपने घर और गॉव से बहुत दूर एक ऐसी जगह पहुँच गया जहॉ उस जमीन का कोई पूछने वाला नहीं था।

उसने उस जमीन को अच्छी तरह से जोता और एक छोटी सी चावल की फसल उगायी। वहीं पर उसने अपने लिये मिट्टी की एक झोंपड़ी भी बना ली। आती जाती खेत की गाड़ियों से जो गन्दा भूसा गिर जाता था उसी से उसने अपनी उस झोंपड़ी की छत बना ली।

धीरे धीरे उसने बचत कर के फिर एक छोटा सा मकान भी बना लिया। कुछ उसके पास पैसे भी बच गये सो उसने शादी भी कर ली और अपना परिवार बसा लिया।

फिर एक साल वहॉ अकाल पड़ा और छोटे भाई की चावल की फसल नहीं उगी। बिना खाने के उसका परिवार भूखा रहने लगा। भूख से उसकी पत्नी और बच्चे जब सिसकते थे तो उसका दिल टूटने लगता था।

सो वह अपने अमीर बड़े भाई के पास उस जमीन पर उगाया गया कुछ चावल मॉगने के लिये गया जो उसके पिता उन दोनों के नाम छोड़ गये थे।

पर बड़ा भाई एक बेरहम हॅसी हॅसते हुए चिल्लाया — "अब यह मेरी फसल है। चले जाओ यहॉ से। तुम्हारा इसमें कुछ भी नहीं है।" ऐसा कहते हुए उसने अपने घर का दरवाजा बन्द कर के उसमें ताला लगा दिया।

छोटा भाई बेचारा बड़ा परेशान सा वापस लौट पड़ा। जैसे ही वह अपने गॉव से बाहर निकला उसने एक पेड़ के ऊपर से एक तेज़ चीख सुनी। एक सॉप एक चिड़िया के बच्चे के ऊपर हमला कर रहा था।

उस चिड़िया के छोटे बच्चे ने अपने पंख फड़फड़ाते हुए उस सॉप से बचने की कोशिश तो की पर वह उड़ने के लिये बहुत छोटा था सो बजाय उड़ने के वह जमीन पर गिर पड़ा।

छोटे भाई ने उस बेसहारा बच्चे को अपने हाथों में उठा लिया और उसको आराम देने की कोशिश करने लगा। जमीन पर गिरने से उस चिड़िया के बच्चे की टॉग टूट गयी थी।

उसने अपनी कमीज से कपड़े की एक पट्टी फाड़ी और उसकी टूटी टॉग पर बॉध दी। कुछ देर में सॉप जब वहॉ से चला गया तो उसने उस बच्चे को फिर से उसके घोंसले में रख दिया और अपनी भूखे परिवार के पास चला गया।

अगले कुछ हफ्ते बहुत मुश्किल से गुजरे। उसने थोड़ा थोड़ा अन्न कर के अपने छोटे छोटे भूखे बच्चों को खिलाया जिनकी पसलियॉ तक गिनी जा सकती थीं। उसकी पत्नी बेचारी खेत खेत जा कर खाने लायक पौधे बीन बीन कर लाती पर उसके अपने खेत की फसल बहुत कम थी।

एक दिन एक चिड़िया उड़ कर उस छोटे भाई के घर की छत पर आ बैठी। यह चिड़िया वह चिड़िया का बच्चा था जिसकी सहायता उसने कुछ दिन पहले की थी। उसकी टॉग अब ठीक हो गयी थी और वह अब उड़ सकती थी।

वह चिड़िया उसकी छत पर बैठी उसको धन्यवाद देती हुई कोई मीठा गाना गा रही थी। फिर उसने उसके घर के तीन चक्कर लगाये और एक बड़ा सा बीज नम जमीन के टुकड़े पर डाल दिया।

परिवार ने उस बीज को देखा। उसकी सबसे छोटी लड़की उसको छूना चाहती थी पर उसके पिता ने उसका हाथ पकड़ कर उसको ऐसा करने से रोक लिया। देखते देखते ही उस बीज में से जड़ें निकल कर जमीन में घुसने लगीं और उसमें से पेड़ निकल कर ऊपर की तरफ बढ़ने लगा।

वह भूखा परिवार उस बीज की तरफ आश्चर्य से देखता रहा कि वह छोटा सा बीज किस तरह एक बेल की शक्ल में बदलता जा रहा था। और वह बेल अभी भी बढ़ती जा रही थी।

मिनटों के अन्दर उस पर कई तरबूज लगने लगे। और एक घंटे के अन्दर तो वे पक कर तोड़ने लायक भी हो गये थे।

उनको देख कर वे भूखे बच्चे चिल्लाये — "पिता जी, क्या हम ये जादुई तरबूज खा सकते हैं?"

खुशी से हॅसते हुए उस छोटे भाई ने उस बेल से एक तरबूज तोड़ लिया और उसे काटा। उसके पास ही उसकी पत्नी भी बैठी थी। जैसे ही उस छोटे भाई ने उसे काटा तो दोनों का मुॅह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

वह तरबूज तो सोने के सिक्कों से भरा हुआ था। काटते ही वे सोने के सिक्के उन सबके पैरों के पास बिखर गये। हर तरबूज सोने के सिक्कों से भरा हुआ था।

छोटे भाई का गरीब परिवार तो बहुत अमीर हो गया था। अब उनके पास बहुत सारा खाना था। उन्होंने अब एक बहुत बड़ा घर खरीद लिया था जिसमें बहुत सारी जमीन थी। उनके पास अब नये नये कपड़े थे पहनने के लिये। सब कुछ कितना अच्छा था।

जब बड़े भाई ने अपने छोटे भाई की अच्छी किस्मत के बारे में सुना तो वह तो जलन से भर गया और वैसी ही एक जादू की चिड़िया को ढूँढने में लग गया जिससे वह अमीर बन जाता।

वह ज़्यादा ताकत, ज़्यादा पैसे और ज़्यादा जमीन के लालच में कई दिनों तक उस जादुई चिड़िया की खोज में इधर उधर घूमता रहा। आखिर उसको एक छोटी सी चिड़िया मिली जिसकी टॉग टूट गयी थी।

उसने उसको यह कहते हुए उठा लिया — "मैं तुम्हारी सहायता करूँगा अगर तुम मेरी सहायता करो तो।"

उस छोटी सी चिड़िया ने उसे अपनी अक्लमन्दी भरी ऑखों से घूरा तो उसे उसकी इस झूठी दया में उसका लालची दिल दिखायी दिया।

जब चिड़िया की टॉग ठीक हो गयी तो वह उस बड़े भाई के घर की तरफ उड़ चली। वहॉ जा कर उसने बड़े भाई के सिर के तीन चक्कर काटे और एक बीज उसके नम जमीन के टुकड़े पर डाल दिया।

बड़ा भाई के चेहरे पर जीत की एक हॅसी आ गयी। बीज जमीन पर गिरते ही बढ़ने लगा और वह भी उस बीज को बेल में बड़ा होते देखता रहा।

फिर उसमें भी तरबूज लगने शुरू हुए और देखते देखते पक कर तोड़ने लायक हो गये। वे इतने बड़े हो गये थे जितना बड़ा कि कोई आदमी होता है।

जैसे जैसे उन तरबूजों का साइज़ बढ़ता जाता था वह बड़ा भाई और ज़्यादा खुश होता जाता था क्योंकि उसको लग रहा था कि तरबूज जितना बड़ा होगा उसके अन्दर पैसा उतना ही ज़्यादा होगा और इस तरह वह अपने छोटे भाई से और भी ज़्यादा अमीर हो जायेगा।

जब वे तरबूज तोड़ने लायक हो गये तो सबसे पहले उसने सबसे बड़ा वाला तरबूज तोड़ लिया और उसको काटा। तुरन्त ही उसमें से लड़ने वालों की एक सेना निकल पड़ी और उसके ऊपर अपने डंडे बरसाने लगी। उन्होंने उसके सारे पैसे ले लिये और उसको जमीन पर रोता हुआ छोड़ कर वहॉ से चलते बने।

बड़े भाई को यह विश्वास ही नहीं था कि सारे तरबूज ऐसे ही होंगे सो उसने दूसरा सबसे बड़ा तरबूज तोड़ा और उसको काटा। उसने सोचा शायद इसमें इतना सारा सोना चॉदी होगी जो उसकी पहले तरबूज को काटने पर मार लगी थी उसका बदला चुका सके।

पर जैसे ही उसने वह दूसरा तरबूज काटा तो उसमें से बहुत सारे सॉप फुँकार मारते हुए निकल पड़े और सीधे उसके घर में जा कर घुस गये।

फिर उसने तीसरा तरबूज काटा तो उसमें से बहुत सारे चूहे निकल पड़े जो उसके पास से हो कर निकल गये।

अब तक और तरबूज ज़्यादा पक गये थे सो वे सब अपने आप ही फूटने लगे। उनमें से बहुत तरह के कीड़े मकोड़े, मकड़े, चींटियॉ और बहुत तरह के काटने वाले और रेंगने वाले जानवर निकल पड़े और उसके सारे घर में फैल गये।

उन सबने मिल कर उसका सारा घर नष्ट कर दिया। वह बेचारा बड़ा भाई अपना घर और जमीन छोड़ कर वहॉ से भाग लिया। आज वह अपने छोटे भाई से उस समय से भी गरीब था जब वह पहले कभी गरीब हुआ करता था।

अब वह गॉव गॉव भीख मॉगता हुआ घूम रहा था तो एक दिन उसने भीख मॉगते हुए ऊपर देखा तो देखा कि उसका छोटा भाई पास ही हल लिये खड़ा था।

बड़े भाई की निगाहें शरम से नीचे झुक गयीं और जब तक नीचे झुकती चली गयीं जब तक कि वे उस हल के फल तक नहीं पहुॅच गयीं।

वह उस फल की तरफ देखते हुए बोला — "मेरा सब कुछ बरबाद हो गया मेरे भाई। मेरे पास अब कोई जगह नहीं है जहॉ मैं रह सकूॅ। मेरे पास खाना भी नहीं है। मै तुमको बिल्कुल दोष नहीं दूॅगा अगर तुम भी मुझको निकाल दोगे।"

तभी उसने अपने कंधे पर एक कोमल हाथ का हल्का सा दबाव महसूस किया। उसने सुना उसका छोटा भाई कह रहा था — "आओ भाई आओ। आओ हम एक नयी फसल बोयें। क्योंकि जो हम बोयेंगे वही हम खायेंगे।"

बड़े भाई की ऑखों में ऑसू आ गये और उसने छोटे भाई के हाथों से हल ले लिया और उसके साथ मिल कर खेती करने लगा।

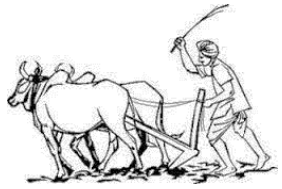

21 ह्वान और डॉग[84]

बहुत समय पुरानी बात है कि कोरिया देश में दो भाई रहते थे। उनमें से एक बहुत अमीर था, उसका नाम था डॉग। जबकि दूसरा भाई बहुत गरीब था, उसका नाम था ह्वान।

डॉग के कोई बच्चा नहीं था जबकि ह्वान के कई बच्चे थे जिनको वह ठीक से खाना भी नहीं खिला पाता था। पर गरीब होने पर भी वह और उसकी पत्नी दोनों ही बहुत ही दयालु थे। यहाँ तक कि उसके बच्चे भी हर एक की भरसक सहायता करते थे।

डॉग का एक बहुत बड़ा शानदार मकान था जिसमें एक चौकोर ऑगन था, कई अस्तबल थे, गायों के रखने के कई घर थे और उसके घर के चारों ओर एक ऊँची दीवार भी थी।

जब कि उसका छोटा भाई ह्वान एक छोटी सी गोल झोंपड़ी में रहता था जिसमें नारियल की सींकों की छत थी और जाड़े में ठंड से बचने का भी कोई साधन नहीं था। उसमें केवल एक ही कमरा था जहाँ ह्वान अगर पैर पसार कर सोता तो उसके पैर दरवाजे से बाहर निकल जाते।

मगर उसकी पत्नी और बच्चे भूखे रहने पर भी सन्तुष्ट रहते।

[84] Hwan and Dang – a folktale from Korea, Asia.

हालॉकि ह्वान हर वह काम करता जो उसे मिल जाता और उसकी पत्नी सिलाई करती और जूते बनाती फिर भी कई बार ऐसा होता कि दोनों को कोई काम नहीं मिलता और वे ज़्यादा जूते बनाने के लिये पैसे नहीं जोड़ पाते। बच्चे भूखे रोते और मॉ का दिल दुखता।

एक दिन ह्वान काम की तलाश में बाहर गया हुआ था और घर में अन्न का एक दाना भी नहीं था तो मॉ ने सोचा कि क्यों न ह्वान के अमीर भाई डॉग से कुछ चावल उधार ले लिया जाये। सो उसने अपने सबसे बड़े बेटे को उसके ताऊ के घर भेजा।

जब वह ताऊ के बड़े ऑगन में था तो उसने गाय के घर में अन्दर झॉका। उसमें खूब मोटी ताजी गायें बॅधी थीं। सूअर भी खूब स्वस्थ थे और स्वस्थ मुर्गे मुर्गियॉ दाना चुगते हुए इधर से उधर घूम रहे थे।

कुछ कुत्तों की निगाह उस बेचारे गरीब लड़के पर गयी तो वे भौंकते हुए उसकी ओर दौड़े। उन्होंने उसके कपड़े फाड़ दिये तो वह उनसे बहुत डर गया।

पर फिर वह हिम्मत कर के उनसे पुचकार कर बोला तो उन्होंने भौंकना बन्द कर दिया यहॉ तक कि फिर एक कुत्ते ने उसके हाथ भी चाटे जैसे वह अपने साथियों की करतूत पर शर्मिन्दा हो।

इस शोर को सुन कर अन्दर से कई नौकर चाकर आ गये और उन्होंने उस लड़के से वहॉ से भाग जाने को कहा तो वह लड़का

बोला — "मैं तुम्हारे मालिक का भतीजा हूँ, मुझे अन्दर जाने दो।" उन्होंने उसे इस बात पर तीखी नजरों से देखा पर फिर उसको उसके ताऊ के पास ले गये। उसके ताऊ बरामदे में बैठे लम्बा पाइप पी रहे थे।

डॉग ने पूछा — "तुम कौन हो?"

लड़के ने उनको इज़्ज़त से झुक कर जवाब दिया — "मैं आपका भतीजा हूँ। मुझे यहाँ मेरी माँ ने भेजा है। हमारे घर में अन्न का एक दाना भी नहीं है और हम लोग तीन दिन से भूखे हैं।

पिता जी काम की खोज में बाहर गये हैं। अगर आप हमें थोड़ा सा चावल उधार दे देते तो... । हम बाद में आपका चावल आपको वापस कर देंगे।"

डॉग बड़ा पत्थर दिल था। पहले तो वह बैठा बैठा पाइप पीता रहा फिर कुछ देर बाद बोला — "मेरा चावल तो ताले में बन्द है और मेरा यह हुक्म है कि मेरे हुक्म के बिना भंडार न खोले जायें।

आटे के भंडार में भी ताला लगा है। अगर मैं तुम्हें घर में से कुछ दूँगा तो मेरे कुत्ते तुमसे उसे छीन लेंगे। इसलिये मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सकता। तुम यहाँ से चले जाओ।"

लड़का बेचारा अपने घर वापस लौट गया जहाँ उसकी माँ अपने छोटे छोटे रोते हुए बच्चों को चुप करा रही थी। गरीब औरत बेचारी क्या करे। लड़का खाली हाथ वापस लौट आया था।

उसको अपने उन जूतों का ख्याल आया जो उसने ज़्यादा बार नहीं पहने थे। सो उसने उन जूतों को ले कर अपने लड़के को बाजार भेजा। किसी तरह वह उन जूतों को बेच सका जिससे उसने उस दिन के लिये कुछ चावल, मुट्ठी भर दाल और कुछ तरकारी खरीदी।

अगले दिन ह्वान पहाड़ों से इकट्ठी की हुई लकड़ी ले कर घर लौटा। इसके बाद वे लोग जाड़े भर बस थोड़े बहुत खाने पर ही ज़िन्दा रहे।

वसन्त आने पर दक्षिण दिशा से चिड़ियों के झुंड वापस आने लगे। वे सभी ह्वान की झोंपड़ी के पास रहना चाहते थे कुछ चिड़ियों ने तो उसकी झोंपड़ी के अन्दर ही घोंसला बना लिया था।

ह्वान ने उन्हें देखा तो पत्नी से बोला — "मुझे डर लगता है। इन चिड़ियों ने यहाँ अपना घर बना रखा है। हमारी झोंपड़ी इतनी कमजोर है कि हवा के एक ही झोंके से गिर सकती है। फिर बेचारी ये चिड़ियाँ क्या करेंगी।"

कुछ चिड़ियों ने झोंपड़ी के पीछे की झाड़ियों में अपना घोंसला बना रखा था। बेचारे बच्चे और ह्वान उन घोंसलों को कभी कभी जा कर देख आते थे।

जब अंडों में से बच्चे निकल आये तो ह्वान के बच्चे भी अपने खाने में से ज़रा सा खाना उनके घोंसलों में रख आते। धीरे धीरे वे चिड़िया के बच्चे उनके पालतू से हो गये।

एक दिन वे चिड़ियों के बच्चे उड़ना सीख रहे थे कि उनमें से एक बच्चा ह्वान की झोंपड़ी के ऊपर बने घोंसलों के पास आ बैठा।

सबसे बड़े लड़के ने देखा कि एक सॉप उसी बच्चे के पास से रेंग रहा था। चिड़िया के बच्चे ने भी उसे देखा और उससे बच कर भागने की कोशिश में उड़ा लेकिन उड़ नहीं पाया और नीचे गिर गया।

गिरते समय उसके दोनों पैर एक पुरानी डाली में उलझ गये। सॉप उसकी ओर अभी भी बढ़ रहा था।

वह लड़का उसकी कोई सहायता नहीं कर पा रहा था क्योंकि वह सॉप बहुत ऊँचाई पर था और वह अभी छोटा था।

उसने अपने पिता को पुकारा। उसका पिता तुरन्त ही वहॉ आ गया और आ कर उस चिड़िया के बच्चे को बचा लिया। लेकिन बेचारे चिड़िया के बच्चे के पैरों को काफी चोट आ गयी थी। अपनी पत्नी की सहायता से ह्वान ने उसके पैरों में मरहम लगाया और उसको एक गरम जगह पर बिठा दिया।

धीरे धीरे उस बच्चे की चोट ठीक होने लगी। एक दो दिन में ही वह चिड़िया अपना खाना फुदक फुदक कर खाने लगी और दो चार दिन में तो वह अपने साथियों के साथ उड़ने भी लगी।

फिर पतझड़ आया और अब उसके बाद जाड़ा आने वाला था। एक शाम को ह्वान और उसका परिवार अपनी झोंपड़ी के

बाहर बैठा था कि उन्होंने एक टेढ़ी टॉग की चिड़िया कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर बैठी गाती देखी।

एक बच्चा बोला — "ऐसा लगता है कि वह हमें धन्यवाद दे रही है और हमसे विदा ले रही है क्योंकि अब सब चिड़ियॉ ठंड की वजह से दक्षिण दिशा को जा रही हैं।"

यह उनके लिये ठीक भी था क्योंकि वे अब उस जगह जा रही थीं जहॉ कभी कोहरा नहीं पड़ता और जहॉ चिड़ियों के राजा का दरबार लगता था। वहॉ वह उन सबका स्वागत करेगा और उनकी बहादुरी की कहानियॉ सुनेगा।

जब चिड़ियों के राजा ने उस चिड़िया को देखा जिसकी टॉगें टूटी हुई थीं तो उसने उससे पूछा कि उसे क्या हुआ था।

चिड़िया ने उसको अपना पूरा हाल बताया किस तरह वह एक गरीब परिवार की वजह से सॉप की पकड़ में आते आते बची। उसी परिवार ने उसकी देखभाल की और उसी ने उसे खाना खिलाया।

चिड़ियों का राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला — "अगले वसन्त में वापस जाते समय तुम फिर मेरे पास आना मैं उस भले परिवार के लिये तुम्हें कुछ दूॅगा।"

फिर वसन्त आया और सब चिड़ियॉ जाने के लिये तैयार हुई तो चिड़ियों के राजा ने उस चिड़िया को बुलाया और उसे एक बीज दे कर कहा — "यह बीज उस भले परिवार को दे देना।"

बेचारे ह्वान और उसके परिवार के लिये यह ठंड बडी भयानक थी। फिर एक दिन वसन्त में उसके सबसे छोटे बच्चे ने देखा कि एक टूटी टॉग वाली चिड़िया उनके कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर बैठी हुई है मगर आज वह गाना नहीं गा रही है।

बच्चे ने घर के और लोगों को बुला कर उस चिड़िया को उनको दिखाया तो उन्होंने देखा कि उस चिड़िया की चोंच में एक दाना दबा है।

जब चिड़िया ने देखा कि उस परिवार के लोग उसे देख रहे हैं तो उसने वह बीज नीचे गिरा दिया और गाना शुरू कर दिया मानो वह कुछ कहना चाह रही हो। फिर वह उड़ गयी।

ह्वान देखने गया कि चिड़िया ने क्या गिराया तो उसने देखा कि वह एक तरबूज के बीज जितना बड़ा एक बीज था। उसके एक तरफ कोरियन भाषा में लिखा था "बड़ा गूदेदार फल" और दूसरी तरफ बहुत ही बारीक अक्षरों में लिखा था "मुझे मुलायम जमीन में बो दो और खूब सींचो"।

ह्वान ने ठीक वैसा ही किया जैसा कि उस पर लिखा था। वह जानता था कि उस गूदेदार फल की बेल खूब बड़ी होती है इसलिये उसने वह बीज अपनी झोंपड़ी के पास ही बो दिया। चार दिन बाद ही उसमें से दो छोटी छोटी पत्तियॉ निकल आयीं।

पूरा परिवार उसको देखने के लिये बाहर आता था कि वह बेल कितनी जल्दी बढ़ती है। वह वाकई जल्दी जल्दी बढ़ रही थी। जल्दी ही उस फल की बेल उसकी झोंपड़ी पर फैल गयी।

कुछ दिनों बाद वह बेल फूलने लगी और फिर बहुत जल्दी ही उसमें तीन फल लगे। वे फल भी बहुत जल्दी ही बढ़ गये। अब ह्वान उनको काटने की सोच रहा था क्योंकि वे फल तो कच्चे भी बहुत स्वाद होते थे।

परन्तु उसकी पत्नी ने कहा — "ज़रा पक जाने तक इन्तजार करो। कोहरे से जब उनका छिलका थोड़ा सख्त हो जायेगा तब उसे काटेंगे। उसके अन्दर का गूदा हम लोग खा लेंगे और उसके खोल के प्याले बना लेंगे।"

ह्वान को अपनी पत्नी की सलाह अच्छी लगी सो उसने कुछ दिन और इन्तजार किया। कुछ दिन में वे फल पक गये और बेल में कुछ डंठलों के सिवा और कुछ भी नहीं बचा। तीनों बड़े फल ह्वान की झोंपड़ी की छत पर रखे थे। वह उन्हें तोड़ कर नीचे ले आया।

क्योंकि उन फलों का छिलका बहुत सख्त था इसलिये उन फलों को काटने के लिये उसको एक आरी लानी पड़ी। उसने पहला फल काटा तो वह बेहोश होने से बचा क्योंकि उसमें दो सुन्दर लड़के थे जो मेज पर बैठे थे। उनके हाथों में शराब की बोतलें थीं, मेज पर प्याले थे और एक बक्सा था।

यह सब देख कर ह्वान की पत्नी बड़े आश्चर्य में पड़ गयी। तभी उनमें से एक लड़का बोला — "डरो नहीं, यह भेंट आपको चिड़ियों के राजा ने भेजी है क्योंकि आपने उनकी चिड़िया की सहायता की थी।"

दूसरे लड़के ने बताया कि उन बोतलों में ऐसी शराब थी जो मुर्दा आदमी में भी जान डाल सकती थी और अन्धे को देखने की ताकत दे सकती थी और छोटे बक्से में तम्बाकू था।

अगर कोई गूँगा उस तम्बाकू को पिये तो वह फिर से बोल सकता था। और उस छोटी सुनहरी बोतल में एक ऐसी शराब थी जो बुढ़ापे पर रोक लगा कर रखती थी।"

यह सब कहने के बाद वे गायब हो गये। अब तुम सोच सकते हो कि ह्वान और उसकी पत्नी उन सबको देख कर कितने खुश हुए होंगे। सो वह सब तो उन्होंने उठा कर रख लिया और अब उनको दूसरे दो फल काटने की उत्सुकता होने लगी।

सो उन दोनों ने दूसरे फल को काटना शुरू किया। इस फल को भी काटना बहुत कठिन था। मगर इसको काटने पर भी उनके आश्चर्य की कोई सीमा न रही।

उस फल में हर तरीके की पोशाकें और बढ़िया सिल्क व साटन के हर रंग के थान निकल पड़े। फिर लिनन और सूती कपड़ा निकला। वह सब उस फल के अन्दर कैसे समाया हुआ था यह सब देखने में बड़ा आश्चर्यजनक था।

लेकिन जैसा कि तुमको मालूम है कि उनके पास खाने को कुछ नहीं था इसलिये वे लोग अब यह आशा करने लगे कि शायद तीसरे फल में कुछ खाने के लिये हो।

सो उन्होंने वह सब सामान तो सँभाल कर रख दिया और तीसरा फल काटने की कोशिश करने लगे।

लेकिन तीसरे फल को काटने पर उसमें से छह बढ़ई अपने औजारों के साथ निकले। वे बोले तो कुछ नहीं पर उन्होंने तुरन्त ही एक मकान बनाना शुरू कर दिया, बड़ी शान्ति से और बड़ी जल्दी से।

कुछ ही देर में एक बहुत बड़ा मकान बन कर तैयार हो गया जिसमें एक गोल ऑगन था। गायों, सूअरों और घोड़ों को रखने की खूब जगह थी।

उस जगह के बनते ही खूब सारे बैल और टट्टू उस मकान के दरवाजे से घुसना शुरू हो गये जिन पर चावल तथा दूसरा खाने का सामान लदा हुआ था।

उसके बाद काफी सारे आदमी तथा स्त्रियॉ आये जो लाइन बना कर खड़े हो गये और ह्वान के हुक्म का इन्तजार करने लगे।

अब तो ह्वान और उसके परिवार को विश्वास हो गया कि वे सभी सपना देख रहे थे। लेकिन सपना ही सही यह सब कुछ उनके लिये अच्छा ही हो रहा था।

उन्होंने नौकरों से कहा कि वे सब कुछ ठीक से और सफाई से रखें। फिर कुछ नौकरों को उन्होंने खाना बनाने के लिये कहा और कुछ को नहाने की तैयारी करने को कहा।

वे सब वस्तुओं को जल्दी ही इस्तेमाल कर लेना चाहते थे ताकि सपना खत्म होने पर वे दुखी न हों। पर वह तो सब सच था। उन सबने गरम पानी से नहा धो कर बढ़िया बढ़िया कपड़े पहने और फिर खूब अच्छा खाना खाया। तुम सोच सकते हो कि वह सब उनको कितना अच्छा लग रहा होगा।

अगले दिन यह सब पड़ोसियों ने देखा तो वह सब ह्वान से मिलने के लिये आये।

उड़ते उड़ते यह खबर उसके भाई डॉग के पास भी पहुँची। सारे पड़ोसी तो ह्वान के भाग्य पर खुश थे परन्तु डॉग उससे ईर्ष्या करने लगा और उसे चोर कहने लगा।

उसने उससे कहा — "ओ बदज़ात कमीने, तुम पूरा का पूरा घर, नौकर और जानवर किस तरह चुरा सके? मुझे सब बताओ वरना मुझसे बुरा कोई न होगा।"

ह्वान का मन बहुत साफ था सो उसने शुरू से आखीर तक सारा किस्सा डॉग को बता दिया और डॉग सोचता रहा कि अगर उसका भाई यह सब कर सकता है तो वह क्यों नहीं कर सकता। बस बिना कुछ कहे सुने वह तुरन्त ही घर चला गया।

बच्चो, क्या तुम बता सकते हो कि घर जा कर उसने क्या किया होगा?

घर जा कर उसने खुद तो सारी चिड़ियों को मारना शुरू कर ही दिया और साथ में अपने नौकरों को भी ऐसा ही करने को कहा।

इस तरह बहुत सारी चिड़ियॉ मर गयीं और काफी देर बाद डॉग केवल एक चिड़िया ज़िन्दा पकड़ सका। उसने पहले उसे लॅगड़ा किया फिर उस टॉग पर मरहम लगाया और एक गर्म जगह पर बिठा दिया और उसको खाना देने लगा।

इस तरह उसने सब कुछ वैसा ही किया जैसा कि उसके भाई ने किया था। वह चिड़िया जल्दी ही ठीक हो गयी और उड़ गयी। साथ में जो उसके पट्टियॉ बॅधी थीं वह उसके पैरों में बॅधी की बॅधी रह गयीं क्योंकि डॉग इतनी जल्दी में था कि वह उनको खोलना ही भूल गया था।

पतझड़ में जब वह चिड़िया दक्षिण गयी तो चिड़िया के राजा ने उससे पूछा — "अरे, तुम्हें क्या हुआ?"

उस चिड़िया ने राजा को सब बताया कि किस तरह एक बेरहम आदमी ने बहुत सारी चिड़ियों को मारा और उसकी टॉग तोड़ दी।

राजा ने सिर हिलाया — "अच्छा, अच्छा।"

अगले वसन्त में जब सब चिडियॉ कोरिया वापस जाने लगीं तो चिड़ियों के राजा ने उस टूटी टॉग वाली चिड़िया को एक बीज दिया और उसे उस धनी डॉग को दे देने के लिये कहा।

एक दिन डॉग अपने बरामदे में बैठा बैठा पाइप पी रहा था। धूप खिल रही थी कि एक चिड़िया गाती हुई वहॉ आयी। यही वह आशा कर रहा था सो उस चिड़िया को देखते ही उसने अपना पाइप पीना छोड़ दिया और उसकी चोंच की ओर देखने लगा।

चिड़िया की चोंच में एक बीज था। यह देख कर वह सब कुछ भूल कर उस चिड़िया की ओर भागा। चिड़िया बेचारी डर गयी और वह बीज वहीं छोड़ कर उड़ गयी।

डॉग ने वह बीज खुद उठाया, अपने नौकरों को छूने भी नहीं दिया, जा कर खुद बोया, इस आशा में कि वह बहुत धनी हो जायेगा। वह खुद ही उस बीज को देखता भालता रहा और उसकी रखवाली करता रहा।

इस बीज की बेल ह्वान की बेल से बहुत ज़्यादा तेज़ी से बढ़ी और जल्दी ही वह भी डॉग के बड़े से घर पर चारों ओर छा गयी। फिर भी वह बढ़ती रही, बढ़ती रही और डॉग के अस्तबल, गायों के घर और सूअरों के घर पर भी छा गयी।

इस बेल में तीन फल की बजाय छह फल लगे और ये इतने बड़े और भारी थे कि लगता था कि इनके बोझ से डॉग के घर की छत ही गिर जायेगी।

डॉग ने कई बढ़ई छत के लिये, कई बढ़ई फलों को काटने के लिये बुलाये।

उसने सोचा कि अच्छा हो अगर वह पहले से ही कुछ आदमियों को फलों की रखवाली के लिये नौकर रख ले क्योंकि सभी जानते थे कि ये फल खजानों का घर हैं इसलिये सभी उनकी ताक में लगे थे।

सभी बढ़इयों और नौकरों को पैसा देना बहुत खर्चीला था। दूसरे बारिश की वजह से उसके मकान की छतें भी टूटने लगीं थीं। उनका प्लास्टर उखड़ने लगा था। बारिश का पानी लगभग सभी कमरों में टपक रहा था।

डॉग की पत्नी रोज शिकायत करती थी और डॉग रोज उसको दिलासा देता — "सब ठीक हो जायेगा तुम फिकर न करो। हमें जो धन मिलेगा उसको पाने के लिये अगर कुछ और कष्ट भी सहना पड़े तो हमें सह लेना चाहिये।"

आखिर समय आया। डॉग ने कई बढ़इयों को किराये पर रखा। लट्ठे, पहिये, रस्सियों का प्रबन्ध कर के उन फलों को ठीक से नीचे उतार लिया।

अब वे फल उसकी ऊँची दीवार के पीछे बिल्कुल सुरक्षित थे। डॉग ने अपने घर के सभी दरवाजे बन्द कर दिये। सभी नौकरों को बाहर भेज दिया। अब ऑगन में केवल चार लोग थे — डॉग, उसकी पत्नी, एक बढ़ई और उसका एक सहायक।

डॉग ने बढ़ई से कहा कि वह फल काटना शुरू करे पर इस समय बढ़ई सौदेबाजी करने लगा।

डॉग को इस बात पर बहुत गुस्सा आया। वह किसी और को अब अन्दर लाना नहीं चाहता था इसलिये वह बढ़ई को मॉगे हुए पैसों पर ही राजी हो गया।

अब दोनों आदमियों ने आरी से उस फल को काटना शुरू किया। काफी कठिनाई के बाद में जब वह फल कटा तो उसमें से गाने वालों, नाचने वालों और नटों का एक झुंड निकला मानो वह डॉग के घर का ऑगन न हो कर कोई मेले की जगह हो।

डॉग को यह सब बिल्कुल पसन्द नहीं आया। उसको यह सब कुछ गलत सा लगा। उन सबने बाहर निकलते ही गाना बजाना और नाचना शुरू कर दिया जैसे वे किसी भीड़ के सामने नाच गा रहे हों।

डॉग की पत्नी ने सोचा कि यह सब ठीक ही हो रहा था। ये सभी लोग उसके सौभाग्य के सूचक हैं और आने वाले धन की खुशी मनाने आये हैं। परन्तु डॉग तो बस केवल धनी होना चाहता था।

नट लोग ऑगन में रस्सी पर नाचने के लिये डंडे गाड़ रहे थे कि डॉग ने उनको वहॉ से जाने के लिये कहा।

पर आश्चर्य वे वहॉ से नहीं गये और बोले — "तुमने हमें बुलाया सो हम आ गये। अब हमें पॉच हजार नकद दो तभी हम यहॉ से जायंगे। अगर तुम नहीं दोगे तो हम यहीं तुम्हारे पास रहेंगे और तब तक नहीं जायेंगे जब तक तुम हमें पैसे नहीं दोगे।"

अब डॉग के पास उनको पैसे देने के सिवा और कोई चारा नहीं था तो उसने उनको पैसे दिये और उनको ऑगन से बाहर निकाल कर ही दम लिया।

फिर वह गुस्से से बढ़ई की ओर पलटा और बोला — "यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है। जब तक तुम अपना यह बदसूरत और बदशगुनी चेहरा ले कर यहॉ नहीं आये थे तब तक ये फल सोने से भरे हुए थे।"

बढ़ई कुछ नहीं बोला पर वह अपने ऊपर लगाये गये इस इलजाम से बिल्कुल खुश नहीं था कि इसमें उसका कोई हाथ था और सौदा तो फिर सौदा था।

उन्होंने एक फल खोल दिया था और अभी पॉच फल बाकी थे सो एक बार उन्होंने फिर फल काटना शुरू किया।

दूसरे फल में से क्या निकला? उसमें से निकला बौद्ध साधुओं का एक झुंड जो गंजे सिर था और केसरिया कपड़े पहने था। उन्होंने डॉग से मन्दिर के लिये चन्दा मॉगा। डॉग उनकी इस बात से बहुत परेशान हुआ।

पर अभी भी उसका उन फलों में पूरा विश्वास था और वह नहीं चाहता था कि ये साधु लोग उसका खजाना देखें और फिर और अधिक धन की मॉग करें इसलिये उसने उनको भी पॉच हजार नकद चन्दा दिया और दरवाजे से बाहर कर दिया।

अब तीसरा फल काटा गया। उसमें से बहुत सारे दुखी आदमी निकले और उनके पीछे चार आदमी एक लाश को अरथी पर लिये थे। वे दुखी आदमी फल से बाहर निकलते ही खूब ज़ोर ज़ोर से रोने लगे।

उनके रोने की आवाज से तो ह्वान का सारा ऑगन गूँज उठा। उसने जब उनको जाने को कहा तो वे बोले — "हमें कुछ पैसे दो ताकि हम इस लाश का अन्तिम संस्कार कर सकें।"

बहुत दुखी हो कर डॉग ने उनको भी पॉच हजार नकद दिया और उनसे किसी तरह छुटकारा पाया।।

अब डॉग की पत्नी को लगने लगा कि जरूर दाल में कुछ काला है सो उसने भी बढ़ई को डॉटा कि उसी की वजह से यह सब हो रहा है।

बढ़ई ने जवाब दिया — "अगर ऐसा है तो मेरी मजदूरी मुझे दे दीजिये मैं चला जाता हूँ।"

डॉग और उसकी पत्नी ने सोचा कि अब इस समय यह बढ़ई गया तो नया बढ़ई खोजना कठिन होगा और अभी तो तीन फल और थे तोड़ने के लिये इसलिये डॉग उसको किये हुए काम के पैसे देने को राजी हो गया और बाकी काम के पैसे भी उसने उसको पहले ही दे दिये।।

और अब वह बढ़ई चौथा फल काटने लगा। अब डॉग और उसकी पत्नी उस फल को चिन्ता भरी नजर से देखने लगे कि न जाने उसमें से क्या निकलेगा।

पर इस बार पहले से कुछ अच्छा था। उसमें से कोरिया के प्रान्तों के गाने और नाचने वाली लड़कियों के समूह निकल रहे थे। हर समूह ने अपने प्रान्त का गाना गाया और नाच किया और वे सब मिल कर इतना गाये नाचे कि डॉग करीब करीब पागल सा हो गया।

एक ने हवा के देवता के बारे में गाया तो दूसरे ने कोयल के बारे में और तीसरे ने एक पुराने पेड़ के बारे में। चौथे समूह ने एक इतना लम्बा गीत गाया कि लगता था कि वह कभी खत्म ही नहीं होगा। वह गीत घन्टों, सप्ताहों, महीनों और वर्षो के बारे में था।

यह सब कुछ बहुत सुन्दर था क्योंकि उनकी पोशाकें बहुत सुन्दर, चमकीली और भड़कीली थीं। उनका गला बहुत ही मीठा सुरीला था। लेकिन बुरी बात यह हुई कि यह सब करने के बाद उन्होंने भी पॉच हजार नकद मॉग लिये। डॉग को उनको भी पॉच हजार नकद देने पड़े।

जब वे सब लड़कियॉ चलीं गयीं तो डॉग की पत्नी अपने पति से बोली — "स्वामी, अब और फल न खोलिये।"

मगर वह बढ़ई बीच में ही बोला कि उसने जिस काम के पैसे लिये हैं वह उस काम को पूरा किये बिना वहॉ से नहीं जायेगा।

मगर सच तो यह था कि उसको यह सब देखने में बड़ा आनन्द आ रहा था। डॉग और उसकी पत्नी का व्यवहार उसके संग अच्छा नहीं था इसलिये वह उनको परेशान होते देख कर भी खुश हो रहा था। इसलिये उसने जल्दी से पॉचवॉ फल भी काट दिया।

पहले तो उसमें कुछ पीले रंग की चीज दिखायी दी मगर वह सोना नहीं था। उसमें से सिपाहियों की सेना, फिर कुछ पुलिस के आदमी और उनके बाद डरावने रूप का एक मजिस्ट्रेट निकला।

डॉग उन सबको देख कर इतना डर गया कि भागने की कोशिश करने लगा मगर उनके रक्षकों ने उसे पकड़ लिया। मजिस्ट्रेट ने एक सिपाही से कहा "मेरा वह लाल बक्सा लाओ।"

डॉग डरा हुआ कॉपता हुआ सा खड़ा देखता रहा। मजिस्ट्रेट ने उस बक्से में से एक लम्बा सा कागज निकाला जिसमें लाल रंग की एक सील लगी थी।

सील तोड़ कर उसने उसे पढ़ा — "आज से डॉग फलॉ आदमी का नौकर है इसलिये उसे उस आदमी को हर साल टैक्स देना चाहिये।"

यह सुन कर डॉग रो पड़ा और बोला — "मगर मेरे पास अब पैसे है कहॉ जो मैं टैक्स दे सकूॅ?"

मजिस्ट्रेट शान्तिपूर्वक बोला — "कोई बात नहीं। हमें जो भी कुछ इस घर में मिलेगा हम वही ले लेंगे।" और घर छोड़ने से पहले उन्होंने उसकी सारी कीमती चीज़ें अपने साथ ले लीं।

पर अभी तो छठा फल बाकी था। उसमें से क्या निकला?

बच्चो, उसमें से निकला एक मदारी। निराश डॉग ने देखा कि इस बार वह केवल एक छोटा सा आदमी था सो वह उसका गला पकड़ कर उसे बाहर निकालने जा ही रहा था कि उस मदारी ने जूडो का एक दॉव मारा और डॉग उसके पैरों में आ गिरा।

मदारी ने अब उसके कपड़े फाड़ने शुरू कर दिये और उसकी पट्टियों से उसके हाथ पैर बॉध दिये और फिर वह हॅसते हुए उसके ऊपर से कूद गया।

डॉग की पत्नी ने जो गहने किसी तरह सिपाहियों से बचा लिये थे उसने वे सब उस मदारी को दे दिये और उससे वहॉ से जाने को कहा।

बढ़ई भी अपने साथी और उस मदारी के साथ हाथ में हाथ डाल कर चलता बना। डॉग और उसकी पत्नी निराशा से अपना घर देख रहे थे। उनका पूरा घर बरबाद हो चुका था और जो कुछ बच भी गया था लोग उसे लूट कर ले गये।

उस दिन के बाद से उन्हें अपने छोटे भाई ह्वान की दया पर ही जीना पड़ा। ह्वान क्योंकि दयावान था इसलिये उसने अपने भाई की सब बुराइयों को भूल कर सहायता की।

List of Stories of “Copy But With Intelligence-1”

1. A Bird Steals Iyawo's Baby
2. Orphan Girl
3. Two Sisters and an Old Man
4. The Magic Wand
5. The Flute
6. Chinye
7. Anansi and the Feeding Pot
8. Magical Cucumbers
9. The Jackal and the Wolf
10. Sunday Seven
11. The Candyman
12. The Monkey's Drum
13. The Island of the Sun
14. Into the Mouth of the Lion
15. Woe Bogotir
16. Sorrow
17. Creative Division
18. Beer and Bread
19. The Bald Wife
20. The Pumpkin Seeds
21. What We Will Plant We Will Eat
22. Hwan and Dang

List of Stories of “Copy But With Intelligence-2”

1. The Beggar and the Bread
2. Half Rooster
3. The Two Brothers
4. Donald and His Neighbors
5. Story of Cats
6. The Thirteen Robbers
7. The Two Sisters
8. The Two Muleteers
9. The Two Humpbacks
10. Justice or Injustice? Which is Best?
11. The Boy and the Water Sprite
12. The Two Step Sisters
13. Cow's Head
14. The Wicked Stepmother

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022